

होते जागे छे ओ इच्छात भोगी पावला
ह लेकिन देना नहीं चाहते। मेरी हसर
आवाज से जागो बिदे हुए है और पंखों परबस
है कि वे मेरे बारे में आनन्द-भोगम तकसे
रहते हैं। फिर आम लकड़ियों की तरह मैं यहाँ
मेरा योग्य और बेवश के लिए नहीं आइ हूँ।
दिल्लीकी कोठी में पास आने से है नही
रही। वरअसल आनिमा में जाला है।
यह सुचनात्मक स्तर से शुरू का भाव
दर्शन का माध्यम है। इस काम से हमें
संगुष्टि मिलता है इसलिए मैं इस कदम
पहुँच रहा हूँ।

हे दुर्ग, ज्योती दिवनी, बसेरा, जगानी,
कामन वादे, पुकार मे वाला रहा, अपने-अपने,
हंसे-कि आदि किल्लों का निर्माण करने वाले
हैं, ये रखा संकल के इंतकाल के बाद, उनके
दर गल्ले, बल और सही सुष्टि बलाने अपने

कहते हैं। यही मुझमें सुभ्रम सेन कहें।
 श्रीक की प्रभु भूमिका है। हमिन न
 और ज्ञान का तो मूर्ख है न
 अपनी जिन्ने श्री बल्लभ गायन
 अब ज इस कवी किन न उन
 अभिनेत्र है के तौर पर चमक रहा
 समीत कंका "पुनर्वसत" वारा न
 संगीत अभिमान के हथों ही सिद्धि च

श्रीगणेशाय नमः



GULSHAN

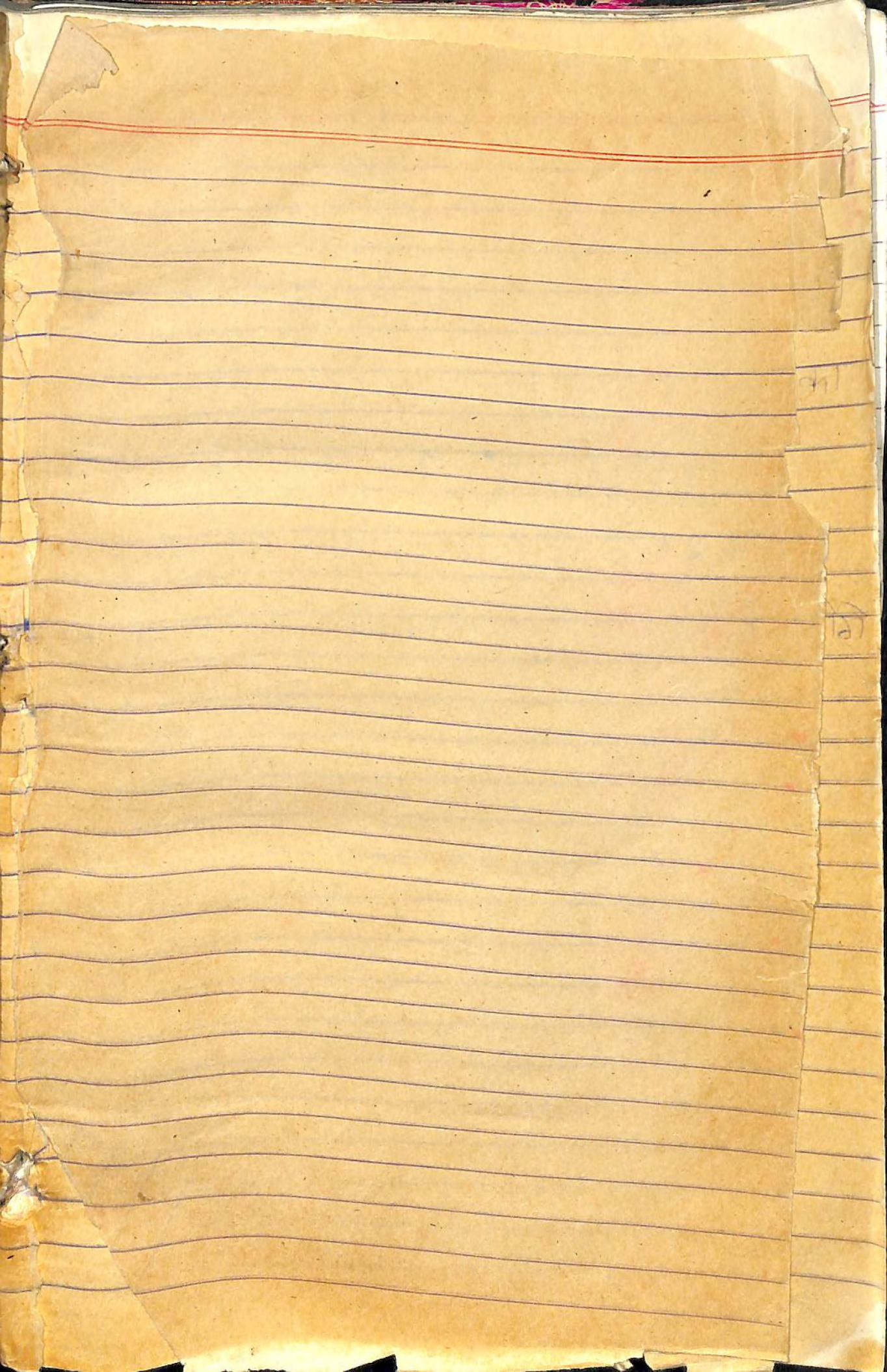


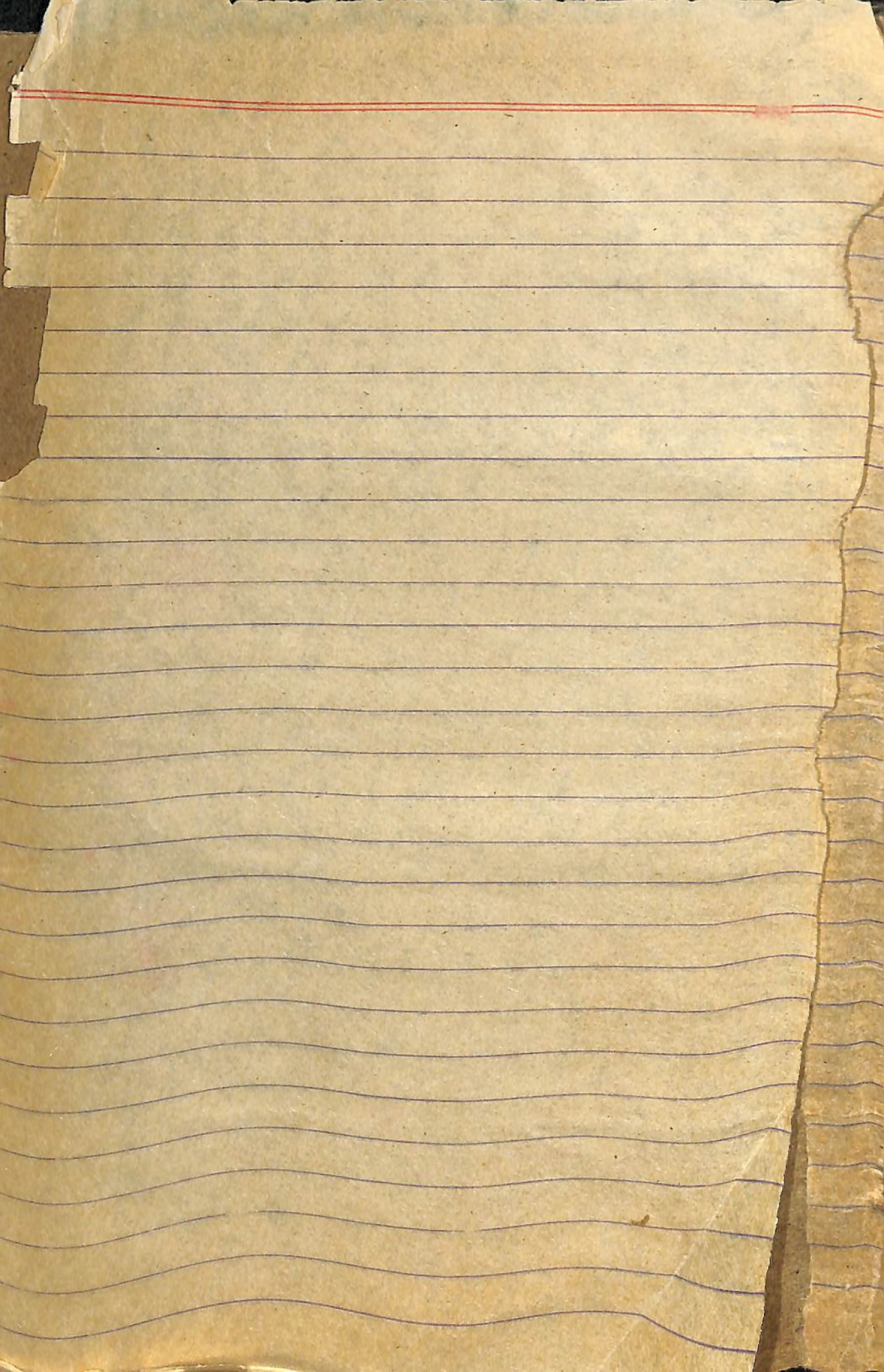
Exercise Book



सी-
लाइक
उकी है
लकर
सावला नया

OKDEPO
आये" से।
तया स. ओम
विटिया सिस् रि
गह से फिट
न बनने देव अम
रुप-पैर





1000

મિત્ર મહાશયના સ્વસ્ત
અમિત મહાશયના સ્વસ્ત

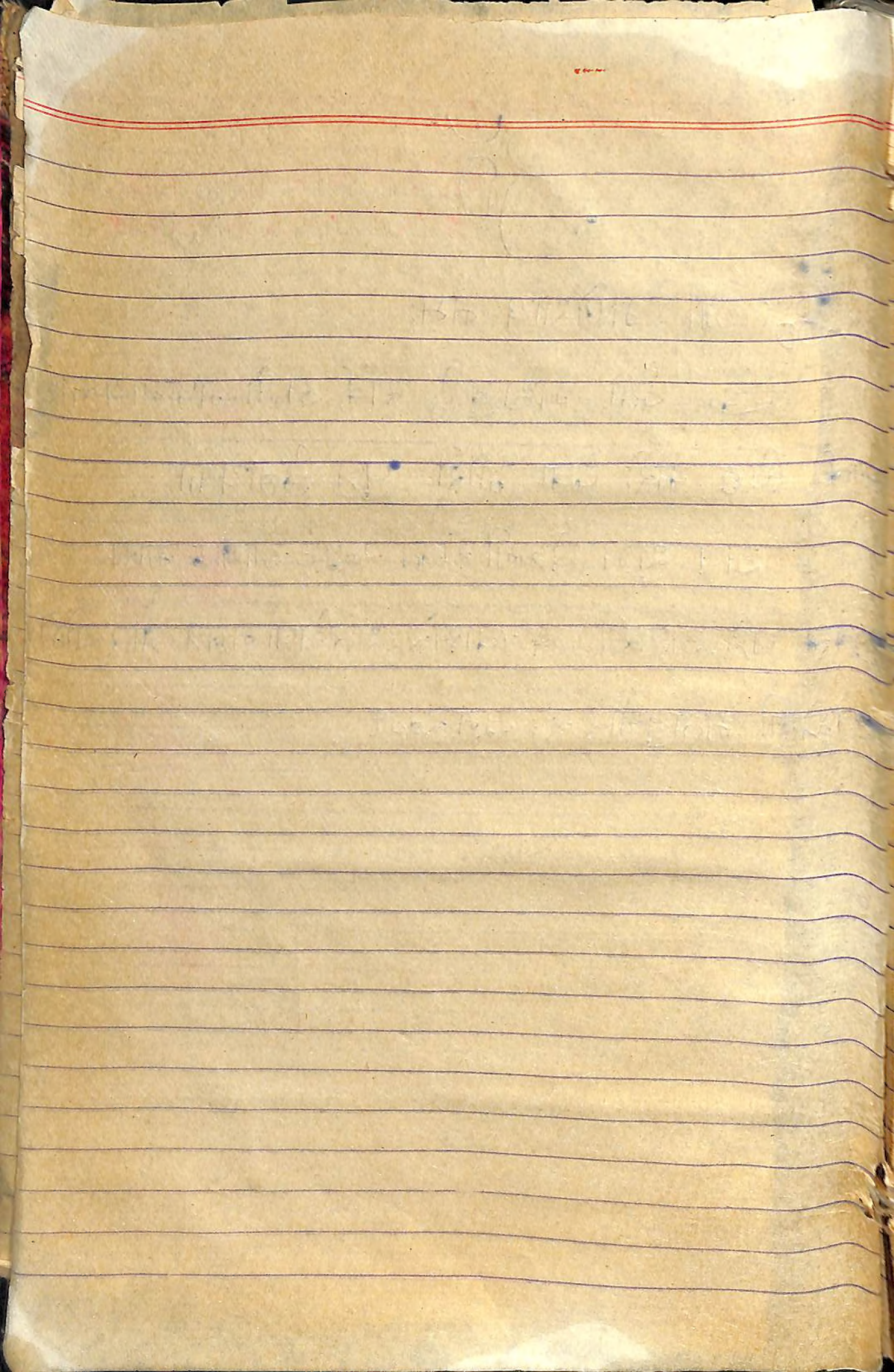
ૐ શ્રી ગણેશાય નમઃ

આ દેવો મહાવૃક્ષ રાવ હોમે ગણનાયકા
સર્વ સિદ્ધ કરો દેવો મોરો પુત્ર વિનાયકા

અમ શુભ વિઠ્ઠલ રામ રંગુલ આપાત માસે

શુક્લ પક્ષે અષ્ટમી વૃષ્ણવાસરે શરમિષ્ઠા નક્ષત્રે પ્રીત્યોગે

હોમેની મતાનુસાર ૨૦ જૂન ૨૦૦૧



विष्णु उवाच

उवाच

उवाच विष्णु उवाच

१

उवाच विष्णु उवाच

२

विषय सूची

विषय

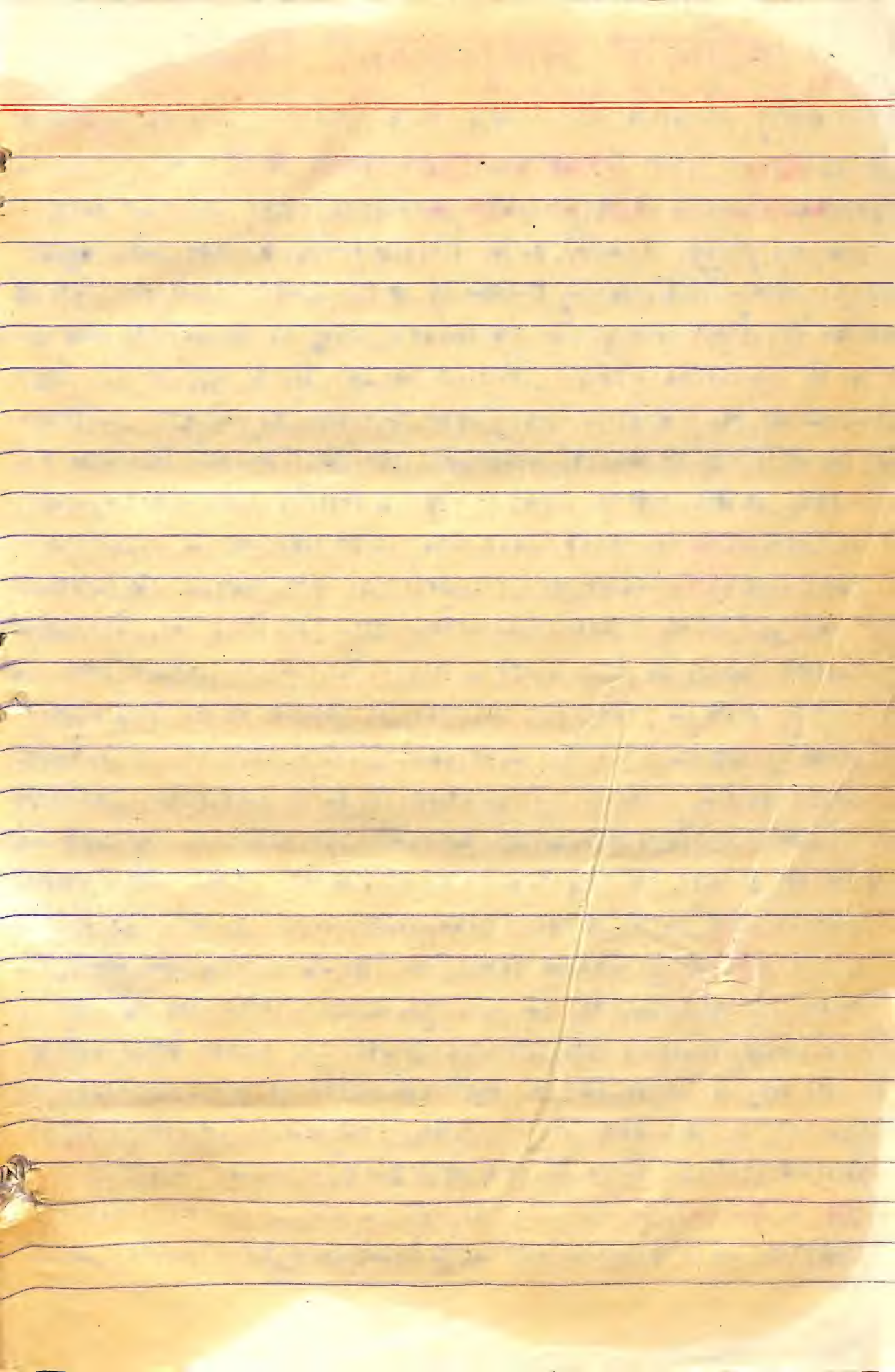
पृष्ठ

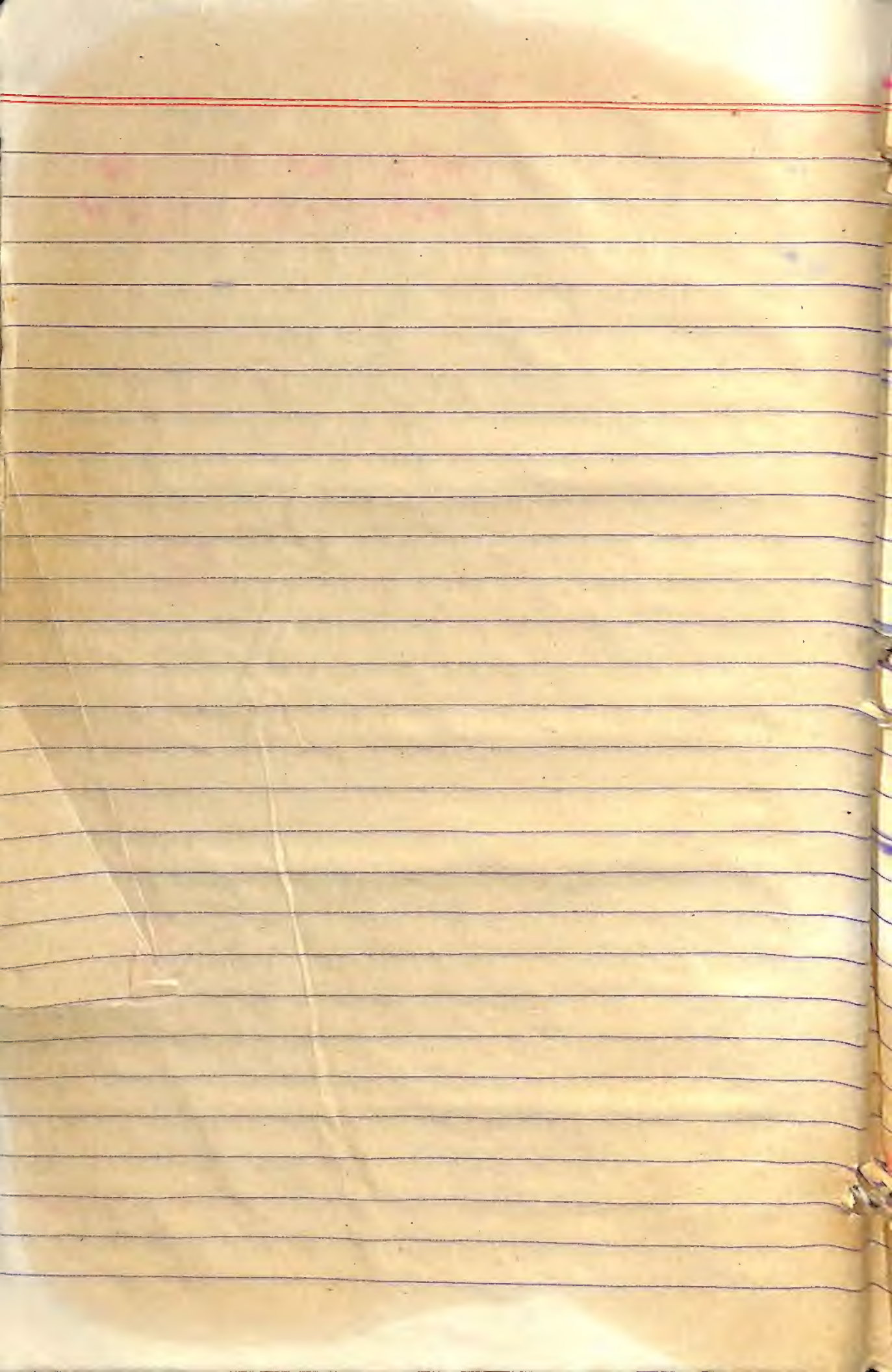
- १ जन्म लक्षणानुसार फलदेश
- २ भाग्यनुसार वेदाः फलदेश

१

१२

२०





৯৯

22

[illegible]

दुपट्टा पाते रहते हैं। तब भी समाधान बनाने की कोशिश है।
 कभीकभी तो वे सोच प्रभाव नहीं कर पाते। मूर्खों की अपेक्षा
 कल्याण सुखों से वे सोच छोड़ते हैं। वे सचलता व होते हैं, न
 लंबी चोखी डींगें डालते हैं। धर्म के प्रदर्शन में जका का
 बियारन रखते हैं। कल्याण के कल्याण को ही वे छोड़ देते
 हैं। वे सोच छोड़ देते हैं। ऐसे धर्म को छोड़ देते हैं।
 समय की आवश्यकता को पहचान नहीं पाते। इनको सुझाते
 पर व्यर्थ ही बड़े रहते हैं। प्रत्येक वरुण की स्थिति फटती
 है। शीघ्र नेपथि लेने की समता इनमें होती ही नहीं। जका
 सा भी उपकार हो लजाए तो गुरुप्रयोग करने में कभी
 नहीं रुकते। वे पुनः कल्याण की शोभा बनाने के लक्ष्य में
 रखा की जाते हैं। इसी प्रकार वे प्रेम या नैतिकता का कलाकौ
 में कभी न कला है ना इनका। जो प्रेम या नैतिकता का साधन
 नहीं देता, वास्तविकता में ही इसकी रसी को सुखियों का साधन
 है। एवं इस पीड़ा के बोध। कल्याण के परेकारों की व
 होती है। हाहा रोग का कल्याण रोग ही संभव है। जका का
 भी देवता को मिलता है। ऐसा व्यक्त बनने के लक्ष्य का
 वरुण करता है। जका का लक्ष्य पद होता है, ऐसा प्रत्येक वरुण
 जो लोगों को असुख लाता है। यह सुखों को काव डालता है,
 परंतु फिर भी यह अपने आपको भला नहीं कर सकता। इससे
 वेगवार्थ यह आसानी से सब पाने का सुख नहीं है, पर इससे
 स्वयं के वार्थ जो लक्ष्य वरुण। अधुने प्रेम सब से नहीं आनंदु भी
 इससे निरंतर चल करता है। शत्रु पक्ष प्रबल होता है
 तथा इससे प्रत्येक कार्य में रुकावट डालता है। नौकरी में
 यह जातक धीरे-धीरे प्रगति करता है। प्रेम को वे प्रेम प्रसन्न
 नता डाल, नौकरी को समता व लक्ष्य जीवना को उतारता है।
 जका जीवना का परंतु आनंद के लक्ष्य में भी नहीं रुक
 आ जाते हैं। साथ ही अपेक्षा व्यक्त आनंद को भी, समान

वृष

[illegible][illegible][illegible]

90

निम्न जलमयिष्य युवकन की स्त्रियों के होए वृषत्वसन में जन्म लेने वाली स्त्री सुनताशीला, सुन्दर, सब को लभने वाली, आज्ञाकारी एवं सात्वत में लोगों से युक्त तथा पति प्रिय होती है।

जातक हठी, मंगमौजी, देशी से काम करने वाला, मजबूत दिल, आराम
पसंद, छोटी-बूढ़ों पर विचार, हर कार्य में झगडा हो जाता, बीमार
हो जाये तो देशी से अच्छा, झगडों में दिक्कतें, माता-पिता का सुख अच्छा
यदि पहली संतान लड़की हो तो मर जाती है, प्रौढावस्था सफल, अधिक
शत्रु, मृत्यु विदेश या पानी में। ५-२८, ३७, ४७ वें वर्ष कष्ट। महत्वपूर्ण
वर्ष २४, ३६, ४५, ५२, ६२, ७७, ८०। आयु वर्ष ८०।

নিখিল

[illegible]

मिथुन

3

[illegible]

मिथुन
नीती

[illegible]

बालक का चेहरा स्वभाव, लाल रक्तवर्ण का मुख लाली प्रकृति
उपस्थित है। हठ, माता का मुख पर वमकी डोर, दंतों से
दूध कम निकलता है, माता के पालने में नम्रता भोजन किया हो। कृत्र
हरा पुराना। बच्चे का दाढ़ पड़ेगा के डोर, हेमालिख प्रसव,
बालक ने दोष स्वर हो करने किया हो। पानु के बच्चे, १०, १६, ३८,
४८ वें साल के बच्चे। २०२२ विज्ञान विज्ञान से।

निम्न फलविशेष निम्न लक्षणों के लिए निम्न लक्षण
वाली स्त्री कामासक्त, गुणहीन, कठोर वक्तव्य देने वाली, क्रूरकर्मि
कफ कोत युक्त, बहुत खर्च करने वाली होती है। (स्त्रीकाव्य)
(विज्ञान)

जातक का नर्म स्वभाव, सच्चाई से कार्य करता है, बात का अंदरूनी भाव गुप्त रखता है। नये-२ विचार पैदा, कानूनी काम-व्यापार, लेखा सम्बन्धी बातों को गम्भीरता से करता है। दिल का मजबूत, विद्या द्वारा रूखाती, यात्रा अधिक, दुख व सुख में सदा एक भाव, घरेलू झगड़ों में चितानुर, पिता से मन उदासीन, संतान अधिक पर धोड़ी रह जाती है। संतान से

मिथुन

12

भन्यति, मित्रों की प्रीति करे पर मित्रों से लाभ नहीं, स्त्री-क्लेश रहता
है। दो स्त्रियों से संयोग, औरतों के झगड़े से तंग, गुप्त शत्रु, लिखने पढ़ने
का शौकीन, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। वर्ष कष्ट ३, ५, ७, ११, १४, २०, २८,
४५ वें। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २१, ३५, ४०, ४५, ५०, ५५, ६०, ७४, ८२। आयु
वर्ष ८६।

श्री

28

[illegible]

चर्चा

95

[illegible][illegible]

जन्म लगे कार्य-कर्म की स्त्रियों के लिए हैं :- कर्क लग्न में जन्म लगे कार्य-कर्म का प्रारंभ, कोटि युक्त, साधुवृत्ति, नीती प्रिय, भाइयों को प्रिय, समस्त सबों से युक्त होती है (स्त्री जातक विनाज) प्रशांत, जातक शान्त स्वभाव, चंचल, जिंदगी घाली-पुथली, दिन से जो काम करना चाहे कर ही लेता है, विचार शक्ति प्रबल, टाल मटोल बहुत, जाजकारी विस्तृत, शीघ्र क्रोध परशान्त, धन इकट्ठा करने में कष्ट, पैतृक सम्पत्ति थोड़ी, आयु का पहला हिस्सा सुखी, आई-बहिन की शक्ति मृत्यु, स्त्री से कलेश, गुप्त शत्रु, शत्रुविजयी, नालुक मिजास डूबें वर्ष तक जिंदगी डाँवाड़े। ५-१६-१८-२०-२४ वर्ष कष्ट। महत्वपूर्ण

किंतु परोपकारिणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक पुरुषार्थी, मजबूत हृदय, धर्मार्थी, दानी, भरोसेमंद, अहंकारी, मामूली बातों से नफरत, बड़े-श कार्य करने में तैयार, सम्पत्ति इष्टकायम, इसीमडों से परेशान। पहली सन्तान मृत, पेहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ, संतान सुख कम, दो स्त्रियों से संयोग। आयु के ५, १०, २०, ३० वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २४, ३२, ४२, ६५, ७०, ८५। आयु वर्ष ८३

(वर्ष १९५६ में जातक)

१२५५
महर्षि ॥ ३५॥
महर्षि ॥ ३५॥
महर्षि ॥ ३५॥
महर्षि ॥ ३५॥
महर्षि ॥ ३५॥
महर्षि ॥ ३५॥

॥ ३५॥
॥ ३५॥
॥ ३५॥
॥ ३५॥

सामान्य, बुरे चित्त वाला, बुरे कार्यों या गन्दी राजनीति में डानन्दित, जिसकी वृत्ति प्रवृत्ति ऐसा व्यक्ति चतुर एवं समय को पहचानने वाला, शत्रुओं से काम निकलवाने में प्रवीण, चरित्र की दृष्टि से शिथिल, अधिकारियों से शत्रुता तथा परस्पर वाद-विवाद होता रहता है। बचपन में उसे जलघात होती है। तमाम वर्षों में जल में डूबने का खतरा रहता है। ऐसा व्यक्ति जो सौ से नौकरी का प्रस्ताव करने वाला हो सकता है। ~~यह व्यक्ति जो सौ से नौकरी का प्रस्ताव करने वाला हो सकता है।~~ पुण्य में सहज आसक्त है इसकी नीति का चर्चा उचित नहीं कहा जा सकता, फिर भी यह व्यक्ति अत्यन्त चंचल होती है, अप्रमाण्य, इसका प्रमाण दिया है। कष्ट एवं व्यति के अनुसार उक्त केने में बहुत भारी बोझ है। ~~यह व्यक्ति जो सौ से नौकरी का प्रस्ताव करने वाला हो सकता है।~~ पुत्रों को उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्री भाग्यवती कहो जा सकती है। जातक अधिकतर सब वयस में बुरे चरित्र के व्यक्ति के रूप में वर्णित है, नींद में चलने का बर्तन की बीमारी का संकेत होता है। यह बहुत पीछली घटनाओं में निमग्न कर दुखाने का कारण है। अर्थ के इच्छा से सम्पन्न ऐसा जाति विदेश में मरता है। जातक किन्ना के एक प्रधान होता है। समय की गम्भीरता को पहचानता है। ~~यह व्यक्ति जो सौ से नौकरी का प्रस्ताव करने वाला हो सकता है।~~ पुत्र बात कहता है। जीवन के २८वें वर्ष से भाग्योदय तथा पूर्ण भाग्योदय ३६वें वर्ष से समझना चाहिए। बाल्यावस्था कष्टों का प्रतीक के लिए जातक को भटकना पड़ता है फिर भी जातक पूर्ण ~~यह व्यक्ति जो सौ से नौकरी का प्रस्ताव करने वाला हो सकता है।~~ प्राप्ति की दिशा में निरन्तर अग्रसर रहता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में इसके पास खूब धन होता है, धन के द्वारा ख्याति अर्जित करता है। इसे सजावट, भोग-विभोग समय वस्तुओं की ओर विशेष रुचि होती है। फैन्सी स्टोर के व्यापार से जातक लाभ उठा सकता है। नौकरी में जातक शनैः-२ जाता करता है। कृषि या भूमि सम्बन्धी कार्यों में भी लाभ। अपने से बड़े की सेवा में आना करता है तथा आदर करता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक लाभ। समाज, कुल में सम्मान प्राप्त करता

करी

है। भावुक होने के कारण परिवार वालों पर खर्च करता रहता है एवं मित्रता की कसौटी पर खरा उतरता है। लाटरी में धन प्राप्त हो सकता है। ऐसा व्यक्ति दृढ निश्चयी एवं धुन का पक्का होता है। जातक को मल प्रकृतिका, शांत, शिष्ट, मधुरभाषी, संघर्षों से दूर, एकांतप्रिय। व्यापार की अपेक्षा नौकरी में लाभ। कई व्यसन रखते हैं सुचारुपूर्ण ढंग से रहना, उन व्यसनों के नियंत्रण पर नियंत्रण पहनना इनका स्वभाव है। यदि मूलजातक के अनुसार धार्मिक स्थानों से संबंध, ठाठ के संबंध, बर्गों के लोगों के साथ सम्बन्ध धार्मिक क्रियाओं में उद्योग-योग्य स्वरूप, सफल क्रियाओं का कहने से पालन जीवन का आनंद लाने का साधन है तथा किन्नरों से बनते हैं ऐसे व्यक्ति समाजिक क्षेत्र में सफल

(मुपडली दर्पण से)

उक्त विषयों में लक्षणों के अनुसार जो मनुष्य नवम कोमल शरीर,
सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, वाणी तेज और बारीक, प्रियभाषी,
हृदय में सदा प्रेम, नम्र स्वभाव, लज्जाशील, पशुति, नीती के
अनुगमन करने वाले, कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, संवेदनशील,
शान्तचित्त, एकांतप्रिय, कठिन परिस्थितियों में स्वयं को ढालने में
समर्थ, एकेही समय में अनेक विषयों में परागत होने की चेष्टा करेगा,
संगीत, कला, साहित्य में रुचि, एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर
नहीं हो पाते। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से निष्पन्न, संगीत, कला,
अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर झुकाव तथा सफलता
प्राप्त होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में रुचि। बुद्धिमान, तीव्र
स्मरण शक्ति, अध्ययनशील प्रकृति। शुभ नमः पन्ना। भावयोगनिमित्त
वर्ष २५, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे। (पाँचों दिवाकर सौ।)

जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौरवर्ण, अल्प बाल,
गोल चेहरा, सौम्य पाँव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा

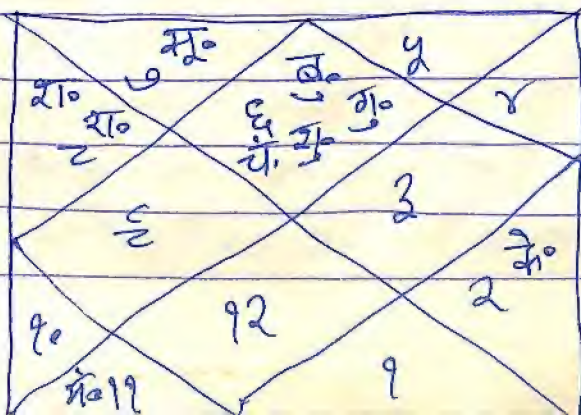
की मुख दक्षिण की ओर, उपसूत्रिकाएं ४ या ५, माता के लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द में रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलदेश कन्या लग्न की स्त्रियों के लिए - कन्या लग्न हो तो ऐसी स्त्री जिते हृदय, सौभाग्यवती, धर्मकरण करने वाली, समस्त कलाओं में निपुण, सुखी तथा स्वर्ण धन युक्त होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक ज्ञानी, पवित्रात्मा, भले-बुरे को पहचानने वाला, परिजमी, शांत स्वभाव, शुद्ध चित्त, गुणवान, धैर्यवान, निर्मोह, प्रेम करते तो सिलोजान से, छोटों से सख्ती का व्यवहार, जिस काम को करना चाहे या जिस पर बिगड़ जाए उसे नहीं छोड़ता। इतिहास, नाटक, चित्रकारी, बाग-बगीचे सम्बन्धी काम करने वाला, सभा में चतुर व मिष्ठभाषी, परिजमी पर धन इकठ्ठा नहीं होता, बाल्यावस्था में बीमार, प्रौढावस्था सुखी, व्यापार व बैंकादिके काम से लाभ, परदेश में भाग्योदय, संबंधियों व पड़ोसियों से द्वेष, पहली संतान पुत्रावस्था में नष्ट, दो संयोग। आयु के ३, ५, १०, १८, ३२, ४० वें वर्ष कष्ट।

महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २१, ३५, ४१, ५०, ६२, ७०, ७५। आयु वर्ष ८०।

नोट, प्रस्तुत कुण्डली एक कुलडकी की है जिसे पूर्व जन्म का पूरा हाल मालूम था, दस वर्ष की अवस्था में ही बहू गूढ़ से गूढ़ विषय पर व्यंक्त प्रवचन दे सकती थी, दस वर्ष की आयु में गायत्री मंत्र याद हो गया। पंचम भाव कल्पना तथा स्मरशक्ति का भाव है, इस पर शनि की राशि मकर तथा शनिकी दृष्टि भी है, गुरु की दृष्टि है जो उच्च बुद्ध के साथ बैठा है। शङ्खशनिका संयोग, शनिकी दृष्टि ने पूर्व जन्म की बातें याद दिलाईं। ब्रह्मवान गुरु ने पांडित्य दिया, लग्न में गुरु, चन्द्र के योग ने प्रसिद्धि दिलाई।



तुला लग्न का फलदेश

तुला लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति आदर्श भावना-प्रधान, शीघ्र निर्णय लेने वाला, अपने प्रभाव से दूसरों को मित्र बनाने वाला रचनात्मक कार्यों में तत्पर, खुलता हुआ गौरा रंग, न अधिक ठिगना न अधिक लम्बा कद, कफ प्रधान प्रकृति, चतुर, सदा मुस्कुराते रहने वाला, चौड़ा चेहरा, तीखी और सुन्दर आँखें, चौड़ी छाती, सुन्दर आकृति, योग्य कार्यक्षम, समान सामने वाले मनुष्य की थाह पा लेता है तथा अवसरानुकूल अपने आप को ढालने में प्रवीण। न्याय, दया, क्षमा, शान्ति, जनशासन की ओर झुकाव। कल्पना शक्ति प्रबल, साधन की कमी होने पर भी लक्ष्य सदा ऊँचा, राजनीतिक क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम करने में डाँवाडोल, नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ प्रकट होता है। प्रधान, जीवन में मित्रों, संबंधियों से भी हानि न्यून की योजनाओं में धन लगाना इनके लिए हानिकारक। लघु उद्योगों में लाभ। जातक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सुन्दर, बनावत। चेहरा सुन्दर, उन्नत ललाट। नौकरी से भाग्योदय, व्यापार हेतु कर नहीं जातक पुलिस या मिलिटरी में उच्च पद प्राप्त कर सकता है। बागवानी या बगीचों का स्वामी। नौकरी भी वनस्पति से संबंधित। मित्रों का सहयोग प्राप्त करता है। पत्नी से मतभेद, संतान से जातक को लाभ। जातक स्थिर चित्त वाला होता है, ऊपर से शान्त दिखाई देने पर भी मन में हलचल मची रहती है। गम्भीरता इनका प्रधान गुण है। व्यक्ति व्यर्थ का असत्य भाषण नहीं करेगा। फरोकार वैसे में प्रसन्नता अनुभव करेगा। प्रसिद्धि भी ऐसे जातकों को शीघ्र मिलती है। कष्ट सहने में माहिर, भयंकर विपत्तियों में भी माहिर। संतान एवं विद्या सुख ज्ञेय। पुत्रों से झगडा होता है तथा न्यायालय में भी व्यय होता है। स्त्री से कम बनती है तथा जातक भी जीवन में विफलता अनुभव करता है। जातक की पत्नी को भी

होती है। बात-2 पर हठ करना, कठना, घर में अशान्ति फैलाना इसका स्वभाव होता है। यद्यपि ऐसी स्त्री गहराई से सोचने का होसला रखती है फिर भी स्व के स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ पाती। आभूषणों से लगाव अत्यधिक होता है। वैवाहिक जीवन मधुर होता है। जातक को अंतिम दिनों में कफ की बीमारी हो जाती है। बलगम के सड़ने या गलने से मृत्यु हो जाती है। शत्रु में दुष्टों से संघर्ष करते या चतुष्पादों के सींगों से घायल होकर भी मृत्यु संभव है। व्यक्ति सौम्य, सात्विक, सरल, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाला, धर्म के मामले में कट्टर न होकर सहिष्णु। सड़ी-गली रुइयों एवं पाखंड का विरोधी। गरीबों के प्रति दया, स्वर्ग वर्ष के भागीदार, कार्य करता है। इसका स्वभाव तथा जीवन के प्रत्येक मण को ध्यान में रखकर देखता है। मध्यकाल में आर्थिक स्थिति, बहुत नौकरों पर इसकी आज्ञा चलती है तथा अपने सम्मान को बचाकर रखता है। उच्च निवार, सद्गुणी, शिक्षित, कला-निपुण ऐसा व्यक्ति लाभ प्राप्त कर लेता है। धार्मिक कार्यों में रुचि। व्यापार लगाना, कुंआ खुदवाना आदि कार्य जिनसे गरीबों का हित हो सके करता है। पाप कार्यों से दूर। अनीतियुक्ति स्वीकार नहीं करता। माता पिता का आदर करने वाला ऐसा जातक मम, न्याय, धर्म में विश्वास रखता है। वरिष्ठ वृत्ति वाला व्यक्ति। प्रत्येक कार्य को करने से पहले सोचेगा कि इस कार्य से मुझे लाभ है या नहीं? नौकरी में उन्नति के अवसर कम, व्यापार में जातक खूब चमकेगा और धनवान बनेगा। इसका स्वभाव मृदु होता है तथा सभी प्रकार के लोगों से सभ्यतापूर्ण ढंग से पेश आता है। रहन सहन सादा होते हुए भी सुचारुपूर्ण। स्वर्ग का व्यय नहीं करता तथा आमोद प्रमोद को जीवन में महत्त्व नहीं देता। जम के बल पर उन्नति। जातक फल व्यापारी, तुरन्त निणय लेने की अद्भुत श्रमता होती है। आय के बढाने का स्रोत ढूँढता है। फिजूल खर्ची ये करते नहीं। न खुद व्यय करने

पालते हैं न बच्चों को इस ओर प्रेरित करते हैं। साविकता जीवन का ध्येय, मुकदमेबाजी के कारण कई बार कठिनाइयों का सामना परशु पर विजय प्राप्त करते हैं। जीवन में आकस्मिक खर्चे आ जाते हैं जिनसे आर्थिक स्थिति डगमगा जाती है फिर भी ये अपने आप पर नियन्त्रण रखते हैं। धार्मिक कृतियों का ये कटु रता से पालन करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति। जातक न्याय प्रिय, हंसमुख व्यवहार-शील, नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल, ईमानदार, मिलनसार, नर-मित्र बनाने में कुशल, सौंदर्यानुभूति विशेष होगी। संगीत, कला, नाट्य की ओर झुकाव। रहन सहन का ढंग रईस एवं प्रभावपूर्ण। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। चन्द्र शुक्र शुभ हो तो मानसिक, कल्पना शक्ति प्रबल, परंतु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत हृदय से करें, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश विदेश में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के मौके प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान, सतर्क रहने वाला मध्यस्तता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि के प्रति झुकाव। शुभ नग हीरा या मोती। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ वें वर्ष भाग्योत्कारक (पाँचों दिवाकर से)

गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कुश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो, बालक दीर्घ स्वर में रोया। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१ वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूतिलग्न विचार से)। निम्न फलदेश तुला लगन की स्त्रियों के लिए - तुला लग्न हो तो

तुला

30

ऐसी स्त्री मतिमन्द, गर्विष्ठ प्रमा रहित, प्रीतिहीन तथा पर, नीवीयुक्त होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)।

जातकर्म स्वभाव, मीठा बोलने वाला, नीति में निपुण, हर बात में सहायक, संगति का असर बहुत जल्दी, प्रण में क्रोध युक्त व शान्त, नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाँ सम्बन्धी कामों में निपुण, मानसिक शक्ति प्रबल पर बहुत देर तक नहीं। जब तक कार्य करता है दिलो जान व मजबूत हृदय से, पर विचार बदलने में भी इश्ट तैयार।
अनेक भाई - बहिन। पीता ही इसकी मुसीबत का कारण, संतान - सुखी, वर्ष ८, १५, १८, २३ कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २४, ४२, ५६, ६४। आयु वर्ष ६६ (कालदर्शक पाँचांग)

गणित प्रीति

महत्त्वपूर्ण वर्ष

विज्ञान भाग

गणित प्रीति
महत्त्वपूर्ण वर्ष
विज्ञान भाग

वृश्चिक लग्न का फलादेश।

इ। वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाले जातक पुरुष त्व प्रधान होते हैं। तथा दूसरों को पीछे छोड़ने में आनन्द अनुभव करते हैं। अस्थिर प्रकृति, आकर्षक व्यक्तित्व, मँझला कद, गठीला शरीर, विशाल मस्तिष्क, दीप्त ललाट, छिन्ने काले बाल, उभरी हुई ठोड़ी, चमकती आँखें होती हैं। इनका व्यक्तित्व सहज ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। चुम्बकीय और सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी ऐसा जातक लोकप्रिय होता है। प्रेम के क्षेत्र में अग्रणी, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख पाते और बिना परीक्षा लिए दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं। स्वार्थ सिद्ध होने तक दुश्मन को कंधे पर बिठाने से कभी नहीं हिचकिचाते, परन्तु कार्य के बाद उसे पैरों तले रौंदने में भी देर नहीं लगाते। राजनीति के क्षेत्र में पूर्णतः सफल स्वभाव उग्र, जरा सी विपरीत बात होने से भड़क उठते हैं। ज्ञान पहचान विस्तृत होती है तथा दुश्मनों तक से काम निकालवाने में चतुर। लेखन कार्य में सफल हो सकते हैं परन्तु शारीरिक झंझटों एवं आलस्य के कारण नित्य लेखन नहीं कर पाते। धन को संचय करने की कला नहीं इन्हें आती, फिर भी इनके पास धन का डभाव नहीं होता। हीनभावना प्रबल होने के कारण ईश्वर आराधना का दिखावा करते हैं। जातक धन के मामले में लापरवाह, साझेदारी या किसी के साथ व्यापार इनके लिए हानिकारक। सहयोगी इसे धोखा देगा। जीवन में कई बार धोखे खाते हैं। इन्हें चाहिए कि ये किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले सोच लें। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे नौकरी में काफी उतार चढ़ाव देखने पड़ेंगे। २४, २७, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ५८ वीं वर्ष ग्रेट नैतिक का शारीरिक गठन सुन्दर, सुन्दर श्याम केश, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, प्रभावपूर्ण चेहरा होता है। संतान की दृष्टि से

जातक सौभाग्यशाली, मित्रों में ख्याति तथा धार्मिक कार्यों में
 मग्न रहता है। जातक स्त्री के मामले में सौभाग्यशाली, सुंदर एवं
 शिक्षित पत्नी मिलती है। जातक को सुसंराल से धन प्राप्त होता है।
 भाग्योदय विवाहोपरंत होता है। पारिवारिक जीवन सफल होता है।
 पत्नी सुशील होती है। पत्नी जातक का जीवन बनाने में सहायक
 आर्थिक दृष्टि से साधारण, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक
 कामुक प्रकृति का होता है, ऐश-आराम में विश्वास रखता है। जातक
 स्त्रियों में विशेष लोकप्रिय होता है। स्वभाव से जातक भावुक, हर
 समय मुस्कुराहट बिखेरने वाला तथा सौम्याकृति का होता है।
 संतान-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विचरों से मतभेद बने
 रहने के कारण पारिवारिक कलह भी संभव होती है। वृद्धावस्था
 सफल। जातक का स्वभाव दुष्टतापूर्ण होता है। अद्यपि वह
 परिश्रमी होता है फिर भी चुंगली खाना, अफसरों के कान भरना
 उसका स्वभाव होता है। जातक की स्त्री सुन्दर, गुणवान, नाक-नभ
 तीखे और रूप पर गुमान करने वाली होती है। वार्तालाप करने में
 मधुर एवं पटुभाषी होती है। कलादि में निपुण होती है। सिलाई,
 कसौदा, चित्रकला, नृत्य में उसकी रुचि होती है। उसे नित नये-नये
 व्यंजन बनाने का भी शौक होता है। ऐसी स्त्री भावुक, कामकेला
 में प्रवीण, पतिवल्लभा होती है। जातक शत्रुओं से संघर्ष
 करते हुए मारा जाता है। मृत्यु के समय ऐसे व्यक्ति को गुदरोग
 या प्रमेह रोग भी संभव है। जातक भावुक, कल्पनाप्रिय होता
 है। यह जातक सफल शिक्षक, प्रकाशक, लेखक, पत्रकार हो सकता
 है। व्रतोत्सव आदि में जातक गहरी रुचि लेता है। चाहते हुए भी
 समाजिक रुढ़ियों को तोड़ नहीं सकता। बचपन में पेट सम्बन्धी
 बीमारी संभव है। वायु प्रकोप जीवन भर बना रहता है।
 चंचलता, तुरन्त निर्णय न लेने के कारण कई बार हानि भी उठाकर
 लेता है। यह जातक जो भी कार्य करना चाहता है उसे सोचने
 में अधिक समय लगा देता है। जीवन के मध्यकाल में

घटाव सहने पड़ते हैं तथा हानि भी हो जाती है। जातक अपने
 जीवन को सफल बनाने की भরसक कोशिश करता है। जातक को
 माता का अल्प सुख प्राप्त होता है, इसके साथ ही आजीविका
 के लिए उसे कठोर परिश्रम व संघर्ष करना पड़ता है। वाहन-सुख
 स्वल्प होता है तथा भूमि संबंधी कार्यों में जातक को लाभ नहीं
 होता। शिकार का यह शौकीन होता है तथा राजनीति पूर्ण जीवन
 बिताने में रुचि होती है। यह पूर्ण परिश्रमी होता है पर परिवार
 में इसे नहीं के बराबर सहायता मिलती है। जातक मेहनती
 होने के साथ दूरदर्शी। वह जो भी कार्य करता है खूब सोच-
 विचार कर करता है। राजनीतिक कार्यों में लाभ, तुरन्त निष्पत्ति
 लेने की शक्ति रखता है। ये आय बढ़ाने का भरसक प्रयत्न
 करते हैं। परिवार तथा भाईयों से जातक को लाभ नहीं होती, अपितु
 यह अपने परिवार का पूर्ण सहायक होता है। जीवन निर्वाह, जीवन
 की आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं। जातक काम पर पूरा विश्वास
 रखते हैं तथा काम के बल पर प्रगति करते हैं। माता-पिता का
 बहुत कम सुख उन्हें मिल पाता है। इनका बचपन अत्यंत कष्टों
 एवं अभावों में बीतता है। ये अपना कार्य आप करते हैं। सभी
 प्रकार के लोगों से ये छुलकर मिलते हैं, जीवन में मित्रों से
 लाभ उठाते हैं। एक बार जो इनके सम्पर्क में आ जाए वह इनका
 हो जाता है। खर्च पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। अद्यपि आय
 के कई स्त्रोत इनके पास होते हैं, फिर भी इनकी आर्थिक स्थिति
 डाँवाडोल रहती है। सजावट, भव्यता, दिखावा आदि में ये विश्वास
 रखते हैं। उच्च स्तर के कपड़े पहनते हैं। जीवन में मनोरंजन
 कार्यों पर भी व्यय करते हैं। स्त्रियों के सम्पर्क से ये बदनाम भी
 हो जाते हैं। आँखे कमजोर होती हैं तथा ऐसे जातक व्यापार की
 अपेक्षा नौकरी में अधिक सफल होते हैं। धार्मिक कृत्यों में विश्वास
 रखते हैं।

(कुण्डली दर्पण से)

जातक का सुन्दर मुख, परिष्कामी, अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिष्कामी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्तिवाला, भाई-बंधु से कम सहायता प्राप्त, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही आय। तनिक विरुद्ध बात हो जाने से शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेगा। जातक किसी कार्य को करने का निश्चय करता है तो उसे पूर्ण करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में सफलता। शुभ नग मूंगा। शुभ रंग लाल, संतरी, हल्का पीला (PINK) है। आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४० वें वर्ष भाग्योन्नतिकारक। (पाँचांग दिवाकर से)

ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण, भूरे नेत्र, तेज स्वभाव, केश लम्बे। उपसूत्रिकाएं २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहने हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २, ६, ११, २७, ५८ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

लग्न फलादेश वृश्चिक लग्न की स्त्रियों के लिए :- वृश्चिक लग्न हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, रूपवान, गुणवान, पुण्यशीला, पतिव्रता, सत्यवादिनी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक अत्यंत ज्ञानी या अत्यंत मूर्ख, ईर्ष्या द्वेष अहंकार युक्त, बड़े-२ कार्य करने में देवता के समान, शूरवीर, लड़ाई में तत्पर, हस्त कार्य में अत्यंतता करने से बीमार, आत्मिक शक्ति बलवान व स्थायी, हर काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियाँ दूर करता है, अश्वि के समान प्रचंड प्रकृति, गंतारों जैसा व्यवहार, सत्यवक्ता, भयरहित, धन सम्बन्धी चिंता, मध्यावस्था में भाग्योदय, दूसरे देश की यात्रा करता है। ससुराल व काजूनी कामों से लाभ, अचानक धन मिलने की संभावना, भाई

वृश्चिक

34

बहिन कम, पिता की एक ही संतान रह जाती है। संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं, सम्बन्धियों का सहायक, एक से अधिक विवाह, गुप्त रोगी। आयु के २, ५, १०, १२, १८, २०, ३० वें वर्ष कष्टा महत्त्वपूर्ण वर्ष १४, २०, २५, ३५, ३८, ४५, ५६, ६४ आयु वर्ष ८५ (कालदर्शी, पाँचाश)

10/11/11

दिनांक

दिनांक

दिनांक

दिनांक

दिनांक

धनु लग्न का फलादेश

धनु लग्न में जन्म लेने वाला जातक अधिकांशतः दार्शनिक विचारों से धनी, ईश्वर में इनकी दृढ़ आस्था होती है, दूसरों पर तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। शारीरिक गठन सुन्दर और सजीला, गोल और आकर्षक चेहरा, श्याम पीत केश, पैनी और खिलती हुई आँखें, सम्मोहक मुस्कराहट, शरीर साधारणतः स्थूल। निरन्तर परिश्रमरत ऐसे जातक वाणिक वृत्ति प्रधान होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में अपना भला-बुरा पहले सोचते हैं। ऐसे जातक सत्त्विक वृत्ति प्रधान होते हैं। व्यर्थ का फैशन, दिखावा, अपव्यय से दूर रहते हैं। जीवन में सत्य, न्याय, ईमानदारी, दयालुता और स्वतंत्रता को महत्त्व देते हैं। जातक सामर्थ्यशाली होता है। ये लम्बे चौड़े प्लान बनाते हैं और उसमें सफलता भी प्राप्त करते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार या स्वतंत्र व्यवसाय इनके लिए हितकारी। जातक को चाहिए कि वे 'योजना और योग' आदि में नौकरी करें जिसमें कल्पना और वास्तविकता का सुखद मिश्रण हो। खान, पत्थर का कार्य से भी ये लाभ उठा सकते हैं। जातक गम्भीर स्वभाव का होता है, भाइयों से उसे स्नेह मिलता है पर सहायता नहीं प्राप्त होती। समाज में उसका आदर होता है। नये विचारों का स्वागत करने वाला ऐसा जातक गायन, कलादि में रुचि रखने वाला होता है। जातक नौका चालक या जहाज का कप्तान होता है। या जल से सम्बन्धित सरकारी नौकरी करता है। धीर-गम्भीर होने के साथ-2 जातक शिथिल भी होता है तथा अपने सद्गुणों के कारण समाज में सम्मान प्राप्त करता है। जातक धनवान होता है। इसे अपने जीवन में पूर्ण सुखभोग की सामग्री उपलब्ध होती है। जातक धार्मिक होता है। जातक को पूर्ण जीवन सुखी कहा जा सकता है। जातक क्रोधी होने के साथ-2 विवेकहीन होता है। कई बार उतावली में ऐसे कार्य कर डालता है जिसके कारण आगे नुक़ान

पछताना पड़ता है। घर में पति पत्नी एक मत नहीं हो पाते और
 पुत्रों के विचारों से उसकी असमानता रहती है। ऐसे व्यक्तियों का
 जीवन अस्थिर रहता है तथा किसी भी प्रश्न पर ये तुरन्त निर्णय नहीं
 दे पाते। जातक की संतान विद्रोही होती है। उसके तथा उसकी पत्नी
 के विचारों में असमानता रहती है तथा वह दुखी हृदय धूमता रहता है।
 जातक की पत्नी सुशील एवं समझदार होती है यद्यपि वह सुन्दर
 नहीं कही जा सकती, फिर भी नम्र नम्र उमरे और स्वच्छ होने
 के कारण आकर्षक अवश्य कही जा सकती है। जातक का ससुराल
 मध्यवर्ग का होता है। उच्च विचारों वाली ऐसी स्त्री जातक के लिए
 सौभाग्यशाली सिद्ध होती है। सुन्दर कपड़े पहनती है तथा अपने
 आपको सुन्दर दिखाती है। सभी गुणों से युक्त ऐसी स्त्री सफल कही
 जा सकती है पर अतृप्त इच्छा रखते हुए ऐसी स्त्री कामकला में
 कठोर होती है। जातक जल में डूबने से भरता है या स्वमृद में
 शान्ति से मृत्यु लाभ करता है। जातक धर्म का विरोधी होता है।
 धार्मिक कटुता का विपक्षी यह जातक मानवधर्म में ही गड़वा
 रखता है। धर्म के दुर्बल पक्ष पर बहस करना इसका स्वभाव होता
 है। भाग्य इसका साथ देता है, पर इसकी प्रत्येक कार्य-सिद्धि के
 बीच में व्याधान आता है। ऐसा व्यक्ति चाहते हुए भी अपने अधिकारों
 को संतुष्ट नहीं कर पाता। जातक का समाज में सम्मान
 होता है। यह जातक कठोर परितोषी होता है। पूर्वाह्न की अपेक्षा
 उत्तरार्द्ध अधिक सफल, यात्रा इसका प्रिय विषय होता है। जातक
 स्वाभिमानी, अपनी आन पर मर मिटने वाला होता है। चापलूसी
 इसे पसंद नहीं और दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना यह बुरा समझता
 है। उदासीन वृत्ति से तथा नौकरी को गम्भीरता से न लेने के कारण
 इसकी प्रगति धीरे-धीरे होती है। नौकरी के अपेक्षा व्यापार अधिक
 लाभदायक। स्त्री से अनबन। यद्यपि यह धीरे-धीरे उच्च पद पर
 पहुँच जाता है, फिर भी उससे धन संचय नहीं होता। समाज
 के कार्यों की आलोचना करता है तथा कुल से इसे कोई लाभ नहीं

मिलता। जातक धीर, गम्भीर, अवसर की उचितानुचित को समझने वाला, नानुक मणों में अद्भुत प्रतिभा दिखाने वाला होता है। परिवार एवं स्वजन इसके सहायक होते हैं तथा उन्नति में वे सहयोग भी देते हैं। व्यक्ति धार्मिक कार्यों में विश्वास रखते हैं। व्यापार में की अपेक्षा नौकरी या स्वतंत्र कार्यों में प्रगति करते हैं। लेखन-प्रकाशन आदि में निश्चय ही चमकते हैं। बचपन सुखमय जीवन के १६वें वर्ष के बाद संघर्षशील क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। यौवनावस्था पूर्णतः संघर्षशील। व्यापार में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। नौकरी करने पर जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है। किन्तु लखरी तथा व्यसनों से दूर रहते हैं। संयत जीवन जीना ही इनका ध्येय होता है। बाहरी स्थानों से इनका विशेष सम्बन्ध होता है तथा जीवन में कई बार तीर्थयात्रा करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का ऊँचा भस्त्रक, कान बड़े, लग्न भाग में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिरमध्य अल्पबाल अथवा गंजा। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा दयालु, दूसरों की याद पालने वाला, बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल, उत्साही, ये शीघ्र निर्णय नहीं ले पाते। इन्हें क्रोध जल्दी नहीं आता एवं क्रोध आ जाए तो उतरता भी नहीं। पुरुषार्थी, साहसी, सुखों को प्राप्त करने वाला होता है। मंगल-गुरु शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक सिद्धा का योग। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीति, वैद्य डाक्टर, वकील, पुस्तकालय व्यवसाय में सफल। शुभ नग पुरराज। भाग्योदय वर्ष २६, २७, ३२, ३६वें होंगे। (पांचांग दिवाकर से)

जातक का रंग गोरा, ऊँचा भस्त्रक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र, पका हुआ भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर पूर्व

34

निम्न पालादेश धनु लम्न की स्त्रियों के लिए धनु लम्न की स्त्री

जातक की दो प्रकार की प्रकृति, नियमों का पालन या उल्लंघन करे

मकर लग्न का फलान्देश

मकर लग्न के जातक रहस्यमय होते हैं तथा इसका कोई भी कार्य निश्चित नहीं होता, अपने उद्देश्यों के प्रति यह सचेत रहता है तथा ऊँची-२ योजनाएँ बनाने में सदा तैयार रहता है। लम्बा, ऊँचा, रक्त गौर वर्ण और कड़े केशों वाला यह जातक चपटी नाक, बड़ा सिर, पैनी आँखों का धनी होता है। शरीर से ये पतले और फुर्तिले होते हैं। इनका स्वभाव उग्र होता है, परन्तु जहाँ अपना पक्ष कमजोर पड़ता है वहाँ से नम्र भी हो जाते हैं। कमाते हैं पर पैसा इनके पास टिकता नहीं। दिखावे और शान-शौकत में ये अपव्यय कर डालते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन मधुर नहीं होता। पति-पत्नी के विचारों में मतभेद बने रहते हैं। व्यापारिक कार्यों में इनकी रुचि होती है, पर उस्में ये सफल नहीं हो पाते। हीन भावना से ग्रस्त होते हैं, बहुत अधिक बोलते हैं। वाक् शक्ति पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। ये अच्छे अभिनेता होते हैं तथा मण में कप बदलने में पारंगत होते हैं। स्वार्थ की भावना विशेष होती है। जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, एक से अधिक आय के स्तोत्र। पत्रकारिता, लेखन, प्रकाशन, व्यापार, राजनीति कार्यों में भी ये भाग लेकर द्रव्य संचय कर सकते हैं। इन जातकों को भाइयों तथा सम्बन्धियों से विशेष लाभ नहीं मिलता। विश्वास करना इनके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। साझेदारी लाभप्रद। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक दृष्टि से सफल। जातक धनवान होता है। संतान से उसे विशेष स्नेह मिलता है। वृद्धावस्था में उसे पुत्रों से पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला ऐसा जातक सभी को प्रसन्न रखने वाला होता है। जातक के घर में जानवर बँधे रहते हैं। इस प्रकार के जातक की यात्रा सगाई होकर छूट जाती है, या जीवन में एक से अधिक स्त्रियों

के साथ सम्बन्ध। जीवन सुखी, शान्तमय तथा विविध भोगों का
भोग करता है। व्यापार, कृषिकार्यों में जात्न को लाभ।
परिवारिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख।

मनुष्य सहज ही धन प्राप्त कर डालता है। द्रव्योपाजन में वह विशेष संलग्न रहता है। कहीं बार लाटरी या जुए से भी धन लाभ हो जाता है। ऐसी व्यक्ति की स्त्री सुंदर, सौभाग्यशाली होती है पर सारी धिंता इसे भोगनी पड़ती है। संतान या तो देरी से होती है अथवा संतान से उसे त्रास मिलती है। संतान दुर्बल या भलिन स्वभाव की होती है। ऐसे व्यक्ति सभावांन, धैर्यवान्, सहिष्णु, समझदार होते हैं। जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार की ओर झुकाव अधिक होता है। आर्थिक दृष्टि से बार-बार हानि उठता है। जातक की स्त्री अत्यंत सुंदर होती है। लम्बी, छह तीखे नैन नक्श वाली तथा सुन्दर मधुर स्वभाव वाली ऐसी स्त्री सहज ही सबका मन मोह लेती है। यह स्त्री अत्यंत भावुक होती है। कठोरता अथवा रुखे मन से इसे वश में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत भावनाओं के द्वारा इसे नियन्त्रण में लाया जा सकता है। सरल चित्त की ऐसी स्त्री कल्पना प्रिय होती है तथा हवा में महल बनाना इसका स्वभाव होता है। जीवन की कठोर वास्तविकताओं को भी नहीं झेल पाती। आभूषणों से अत्यंत प्रेम करने वाली, सुन्दर वस्त्रों की इच्छा वाली यह स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है। सर्प के काटने से मृत्यु संभव है। चोरों से संघर्ष करते हुए या हंसक पशु के शिकार में भी मृत्यु संभव है। जातक विलासी प्रकृति का युक्त होता है। अपने परिवार, पुत्र, पत्नी से प्रेम रखता है। भाग्यनियन्त्र इससे छल करता रहता है तथा यह जीवन में

कई उतार-चढ़ाव देखता है। अन्याय एवं पक्षपात का प्रबल विरोधी होता है। लोगों से वाद्वाही लूटना इसका ध्येय होता है।

अरुण से ज्यादा प्रदर्शन कर अपने आप को उच्च एवं धनी बनाने का प्रयत्न करता है जबकि वास्तविकता इसके विपरीत होती है। वृद्धावस्था में पोते-पोतियों

का पूर्ण सुख भोगता है। इसका भाग्योदय २३वें वर्ष के बाद होता है। जातक की प्रवृत्ति व्यापार में रमती है और भाग्योदय भी व्यापार से ही होता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम रहते हैं। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे वह सब प्राप्त नहीं होता, जिसका यह हकदार है। व्यक्ति बात का धनी, पिता का आज्ञाकारी। यौक्तावस्था सफल, एक साथ कई कार्य करने में निपुण, भूमि या भूमि संबंधी कार्यों पर व्यय, कृषि में लाभ, समय पर सही चोट करने में निपुण। ऐसा व्यक्ति ध्यानपूर्वक भाव प्रकट करता है। जातक तुरन्त निर्णय लेने वाला, परिस्थिति को गंभीरता से समझने वाला, समय के अनुसार चलने वाला, वातावरण की पहचानने वाला, जीवन को ढाल लेता है जैसा समय और स्थिति हो। कई प्रकार के व्यसनों से युक्त, अत्यधिक मित्र, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव पर नियन्त्रण रख लेते हैं। लोकप्रिय, जीवन में इसकी समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से।)

जातक का मध्यम कद, तीखे नैन-नक्शा, सुन्दर मुखकृति, काले घने बाल, पतली कमर, जातक गम्भीर, भावुक, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील, धार्मिक। बुध-शुक्र शुभ होने पर व्यवहार कुशल, गहरे विश्लेषण के पश्चात् निर्णय लेने वाला। प्रमा नहीं करते, बदला लेना नहीं भूलते, जातक की मानसिक, आत्मिक शक्ति प्रबल। गुरु-शनि शुभ हो तो जातक विनम्र, विनयशील, व्यवहार

कुशल, नीतिवान, तर्कशील, भले बुरे को पहचानने में कुशल, विश्वसनीय, मित्र बनाने में सावधान, ईमानदार, तर्क जातक तर्क वितर्क करने में कुशल, खाँसी तथा वायु रोग। शुभ भग नीलम, भाग्योत्तिकारक वर्ष २२, २४, २८, ३२वें होंगे। (पाँचाग दिनाकर)

जन्म समय कृश शरीर, पींगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा भस्त्रक, ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला-नीला वस्त्र, कसैला भोजन वशीतलजल पिया हो, उपसृक्तिकाएँ ३ या ४, सृक्तिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक थोड़ा रोया। शरीर का विशेष प्रभाव वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूतिलग्न विचार)

निम्न फलादेश मकरलग्न की स्त्रियों के लिए : ~~कुछ~~ मकरलग्न हो तो स्त्री गुणवती, सत्यवादिनी, सुन्दर, रूपवती, अच्छे कर्म करने वाली, प्रतिष्ठित शत्रुहन्ता होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक का सेवा करना धर्म, जिस कार्य में रखे उसे दृढ़तावशांति से करते हैं, परिक्रामी, कभी मलिनचित्त व ईर्ष्या द्वेष से युक्त हो जाते हैं। किसी समय शूरवीरता से बड़े काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर, परंतु कभी-२ बोलते हुए बाणी में रुकावट हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि, उदासीन, मित्रों में स्वतंत्र व दूसरे पुरुषों में त्रज्जायुक्त, शत्रु को हमा करना, दूर के काम सोच-समझकर करते हैं। व्यापार से धन प्राप्त, भाई-बहनों व पिता से सुख नहीं, कई विवाह परंतु विवाह के समय अड़चनें। स्त्री प्रसन्न, संतान थोड़ी होती है, खाँसी व वायु रोग, महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २२, ३२, ४७, पूरा आयु वर्ष ८६। (काल दर्शक पाँचाग)

कुम्भ लग्न का फलादेश

कुम्भ लग्न दार्शनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। जातक शिष्ट, सम्य, शांत, कुलीन, विचारों का धनी, दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर, सेवा-सहानभूति इनके जीवन का उद्देश्य, तीव्र स्मरणशक्ति, कद लम्बा, हृष्ट पुट, प्रभावयुक्त चेहरा होता है। सरल स्वभाव के ये जातक प्रत्येक विचार में नवीन युक्ति प्रस्तुत करते हैं। खरी-द कह देने में हिचकिचाहट नहीं महसूस करते। इनकी उन्नति और अवनति अप्रत्याशित, जीवन बाधाओं से युक्त, कठिन से कठिन संघर्षों में उलझना इनका स्वभाव, दाम्पत्य जीवन साधारण, वृद्धावस्था में पेट और छाती सम्बन्धी बीमारी। यदि जातक अपने विचारों तथा भावनाओं पर नियन्त्रण रख सकें तो निस्संदेह सफल धनी। इस प्रकार का जातक डॉक्टर, वैद्यक, दवाईयों का विक्रेता बनकर धनी हो सकता है। यदि ये वे व्यक्ति होयें खरीदें या लघु उद्योग में रुपया लगाएँ, तो भी लाभ है। अधिक स्तोत्रों से अर्थ लाभ, खर्च पर पूर्ण नियन्त्रण, धन के पीछे भूत की तरह लगे रहते हैं। इनके जीवन में शांति नहीं रहती। तुरन्त निणय लेने में असफल, अतः कई बार हाथ उठानी पड़ती है। २२, २४, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ६० वाँ साल आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण। जातक बल विक्रम में धनी, मांसल भुजाएँ, बलिष्ठ कंधे, उत्तम साहस वाला होता है। भुजबल से यश लाभ करता है, दूसरों की भलाई करने वाला, कई प्रकार की कलाएँ जानने वाला एवं धन संचय करने वाला होता है। जातक की समाज में इज्जत, सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। साहस, धीरता, गम्भीरता में जातक उत्कृष्ट, स्वस्थ सुदृढ शरीर, सुन्दर रूप, गुण। धार्मिक, व्रतोत्सव आदि धर्मोत्सव से मनाता है। शिव की पूजा से जातक को विशेष लाभ, आध्यात्मिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख होता है। जातक को पूर्ण संतान सुख, जातक दृढ, साहसी,

कुम्भ

मजबूत होता है पर विचारों में अस्थिरता रहती है। वह किसी भी एक कार्य पर काफी समय तक विचार नहीं कर सकते। इन्हें क्रोध जल्दी आता है, पर क्रोध शीघ्र ही शान्त हो जाता है। विद्या योग उन्नत। ऐसे व्यक्तियों के शिष्टा काल में कई प्रकार की बाधाएं आ जाती हैं। जातक पुत्रों से अत्याधिक प्रेम करने के कारण दूसरों से अकारण झगडा मोल लेता है। न तो वह स्वयं आराम करता है न ही अपने अधीनस्थ संबंधियों या कर्मचारियों को आराम करने देता है। जातक की पत्नी क्रोधी स्वभाव की, तुलक भिजाना जरा सा कार्य यदि उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होता तो वह रुठ जाती है, कलह करती है तथा घर के वातावरण को विषासक्त बना देती है। न इसे मृगार करने का चाव न होता है न अपने आप को सजा पाती है। मित्रों की पार्टियों में एकरस-सी न होकर, अलग-२ सी दिखाई देती है। ऐसी औरत साहसी होती है तथा विपत्ति के समय भी धैर्य को अग्रणी बनाए रखती है। धन का मोह होता है, आभूषण प्रियता इसका स्वभाव, मानव मन को परखने में प्रवीण, समय के अनुरूप अपने आपको ढलाने में चतुर होती है। मस्तिष्क से स्वस्थ, बुद्धिमान। यदि अष्टमेश षष्ठस्थान गत हो तो सुजाक रोग से ग्रस्त होता है तथा व्याधि पीडा से मरता है। स्त्री की हत्या तथा विषपान की भी आशंका रहती है। मृत्यु स्वमृह में होती है। जातक धर्मभीरु होता है तथा प्रत्येक कार्य करने से हिचकिचाता है जो अन्याय हो जा फिर जिस कार्य को समाज में मान्यता न मिलती हो। बाल्यावस्था में इसे काफी परेशानियाँ देखनी पड़ती हैं। इसकी प्रगति धीरे-२ होती है। शिष्टा काल में भी कई व्योधान आते हैं। या तो इसे सभी प्रकार की इबीजन मिलती है या फिर रुक-रुक कर पड़ाई होती है। भोग विलास का इच्छुक, अपने-आप की अपेक्षा व्यापार में लाभ एवं भाग्योदय शीघ्र। नैतिकता में जातक अग्रणी, यात्राएं इसके भाग्य में होती हैं।

६ कर्म ४०
धूमकंड जीवन बिताने का इच्छुक होता है। समुदाय से धन-
प्राप्ति संभव है। २४ वें वर्ष के बाद भाग्योदय, मनुष्य सद्गुणों
से अलंकृत गरीबों का सहायक। यद्यपि परिस्थितियाँ इसके
प्रतिकूल रहती हैं फिर भी यह अपने सौम्य व्यवहार एवं नीति
से वातावरण को अनुकूल बनाने में समर्थ रहता है। धार्मिक
कार्यों में गहरी रुचि, नौकरी में उन्नति करता है तथा जीवन
निर्वाह के लिए कठोर काम करता रहता है। जातक व्यापार में
प्रगति करता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम। अफसरो
से जान पहचान होती है जिससे शनैः-२ प्रगति करता रहता है।
हंसमुख, मिलनसार, तीक्ष्ण बुद्धि, वह बात का धनी। आमदनी
के कई स्त्रोत होते हैं। जीवन का एक ही ध्येय है आमदनी में
विस्तार किया जाए। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने पर भी यह
बचत कर लेता है। आवश्यकताएँ सीमित होती हैं तथा वे पूरी
भी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से)

शनि शुभ हो तो जातक मध्यम या ऊँचा कद, सुन्दर प्रभावशाली
व्यक्तित्व, बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति, गम्भीर, दयालु,
परोपकारी, मित्रों व सम्बन्धियों का सहायक, व्यवहार कुशल, मिलनसार,
स्पष्टवादी, निस्वार्थी, स्वाभिमान, स्वतंत्रता प्रिय, नए-२ मित्र बनाने का
इच्छुक, उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी, प्रबन्धात्मक, देश-विदेश में जाने
के अवसर प्राप्त होंगे, महत्त्वकांक्षी, क्रियात्मक दृष्टिकोण, सफल
होते हुए भी उच्च पद प्राप्त करने में सफल। यदि गुरु शुभ हो तो
जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय विक्रय, प्रोफेसर, जन वक्ता,
अथवा उच्च एवं धनी व्यापारी होंगे, आर्थिक मामलों में कहनाइयाँ।
शुभ नमनीलमास्त्रियों के लिए पुखराज। शुभ वर्ष २५, २६, ३६, ४२, ४८
वें होंगे। (पाँचांग दिवाकर से)

बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, मोटे होठ, वातपित्त
प्रकृति, श्वेत श्याम वर्ण धूमवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख
पश्चिम की ओर, उपसर्तिकाएँ ३ या ५, शाकाहारी का भोजन किया हो,

कुम्भ

४८

माता को शरीरकष्ट, पिता घर में न हो, बालक ने रुदन किया हो।

आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४ वें वर्ष विशेष कष्ट। शनि का विशेष प्रभाव (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फालादेश कुम्भ लग्न की स्त्रियों के लिए :- कुम्भ लग्न हो तो स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं अभिमानी, खर्चीली, पर-पुरुष पर आसक्ति रखने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक साहित्यकला, कौशल, दर्शनों के गुप्त कार्यों की न लेखक, वक्ता, प्रेमी, वृद्धावस्था तक पत्नी से प्रेम, एकांतसेवी, लोगों से मेल जोल कम, अच्छे मित्र, इच्छा शक्ति प्रबल, दौलत हासिल करने में उद्यम के बावजूद असफल। कई गुप्त दुश्मन। परिवार से धन सहायता तथा मित्रों से भरतबे की सहायता इसके दुख का कारण। रुपए के खातिर यात्राएँ, संबंधीय भाई कारोबार में कष्ट का कारण, अकादमी गुप्त। कौनी में गुप्तचर, भाई-बहन कम, कई बार भाई के साथ झगडा। पिता का जल्दी देहांत। संतान सुख कम। खासकर पहली, शादी खानदमी स्त्री या गबैया स्त्री से, सबन्ध कलाभ, स्त्री शिष्ट, वृश्चिक राशि वालों से दुखी। वर्ष ६, ११, १८, २५, ३६, ४० कष्ट। महत्वपूर्ण वर्ष १८, २३, ३०, ४८, ५२, ६४, ७२। आयु वर्ष ८५ (कालदर्शक पाँचाश)

मीन लग्न का फलादेश

मीन लग्न में जन्म लेने वाले जातक गह्वरु, आस्तिक, मेहनती, गणितिक रुचियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण, समझदार, मध्यम बद्ध, घुंघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-२ दांत, पैनी आँखें, भव्य आकृति, सहिष्णु। यदि इनका साथ कोई बुराई करता है तो वे प्रत्युत्तर भलाई करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं। पारिवारिक जीवन पूर्ण सुखी, लेखक, संगीत, नाटक आदि में रुचि, आर्थिक मामलों में पिछड़े रहते हैं। धन इनके पास आता है पर ऐक्य नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते हैं। भरपूर आत्म विश्वास तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। आर्थिक मामलों में बड़े अनिश्चित। जातक किसी समय अच्छे धन प्राप्त कर लेता है पर उड़ते भी देर नहीं लगती। विवाह के बाद भाग्योदय। जातक जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन करता है। शत्रुओं से असावधान रहने से हानि की संभावना। जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। परिवार में प्रशंसनीय, दान-पुण्य में अग्रणी, लेखन शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकार बनने के साथ-२ अन्य कलाओं में भी सहज रुचि, कलाओं के माध्यम से लाभ। जातक कामी, सुखी, सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्दित, यौवन में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थ, तेल, इत्र आदि पर खर्च होता है। आर्थिक दृष्टि से साधारण, द्रव्य संचय के लिए विशेष प्रवृद्ध करता है। जीवन के अंतिम काल में प्रबल धन हानि। जातक की लड़कियाँ अधिक जातक विनयशील, समझदार, नम्र। पुत्र सुख देरी से प्राप्त, व्यक्ति सुलभ, शीघ्र दूसरों पर विश्वास करने वाला, संतान सुख से पीड़ित एवं सुखी रहता है। जातक कामी, क्रोधी। पर स्त्री के संपर्क से हानि होती है। गृह कलह रहती है तथा संतान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है। जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, कोमलांगी, लज्जाशील, नपुंसकी, समर्थ, युक्त, घर की संपदा बढाने वाली होती है। इस

कुम्भ

माता को शरीरकष्ट, पिता घर में न हो, बालक ने रुदन किया हो।

आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४ वें वर्ष विशेष कष्ट। शनि का विशेष प्रभाव (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फलादेश कुम्भ लग्न की स्त्रियों के लिए :- कुम्भ लग्न हो तो स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं अभिमानी, खर्चीली, पर-पुरुष पर आसक्ति रखने वाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

जातक साहित्यकला, कौशल, दर्शनों के गुप्त काशीकी नृलेखक, वक्ता, प्रेमी, वृद्धावस्था तक पत्नी से प्रेम, एकांतसेवी, लोगों से मेल न हो कम, अच्छे मित्र, इच्छा शक्ति प्रबल, दौलत हासिल करने में उद्यम के बावजूद असफल। कई गुप्त दुश्मन। परिवार से धन सहायता तथा मित्रों से भरतबे की सहायता इसके दुख का कारण। रुपए के खातिर यात्राएँ, संबंधी का भाई कारोबार में कष्ट का कारण, उम्मादमी गुप्त। कौजी में गुप्तचर, भाई-बहन कम, कई बार भाई के साथ झगडा। पिता का जल्दी देहांत। संतान सुख कम। खासकर पहली, शादी खानदमी स्त्री या गबैया स्त्री से, सबन्ध कालाभ, स्त्री शिष्ट, वृश्चिक राशि वालों से दुखी। वर्ष ६, ११, १८, २५, ३८, ४० कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २३, ३०, ४८, ५२, ६४, ७२। आयु वर्ष ८५ [कालदर्शक पाँचाश]।

मीन लग्न का फलादेश

मीन लग्न में जन्म लेने वाले जातक शहूलु, आस्तिक, मेहनती, समाजिक रुचियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण, समझदार, मध्यम कद, घुँघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-२ दाँत, पैनी आँखें, भव्य आकृति, सहिष्णु। यदि इनका साथ कोई बुराई करता है तो वे प्रत्यक्ष भलाई करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं। पारिवारिक जीवन पूर्ण सुखी, लेखक, संगीत, नाटक आदि में रुचि, आर्थिक मामलों में पिछड़े रहते हैं। धन इनके पास आता है पर दिक्कत नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते हैं। भरपूर आत्म विश्वास तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। आर्थिक मामलों में बड़े अनिश्चित। जातक किसी समय अच्छे धन प्राप्त कर लेता है पर उड़ते भी देर नहीं लगती। विवाह के बाद भाग्योदय। जातक जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन करता है। शत्रुओं से असावधान रहने से हानि की संभावना। जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। परिवार में प्रशंसनीय, दान-पुण्य में अग्रणी, लेखन शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकार बनने के साथ-२ अन्य कलाओं में भी सहज रुचि, कलाओं के माध्यम से लाभ। जातक कामी, सुखी, सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्दित, यौवन में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थ, तेल, इत्र आदि पर खर्च होता है। आर्थिक दृष्टि से साधारण, द्रव्य संचय के लिए विशेष प्रवृत्ति करता है। जीवन के अंतिम काल में प्रबल धन हानि। जातक की लड़कियाँ अधिक जातक विनयशील, समझदार, नम्र। पुत्र सुख देरी से प्राप्त, व्यक्ति सुलभ, शीघ्र दूसरों पर विश्वास करने वाला, संतान सुख से पीड़ित, लड़कियाँ उद्विग्न हैं। जातक कामी, क्रोधी। पर स्त्री के संपर्क से हानि होती है। गृहकलह रहती है तथा संतान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है। जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, कोमलांगी, लज्जाशील, तथा अमीर, योग्य युक्त, घर की संपदा बढ़ाने वाली होती है। इस

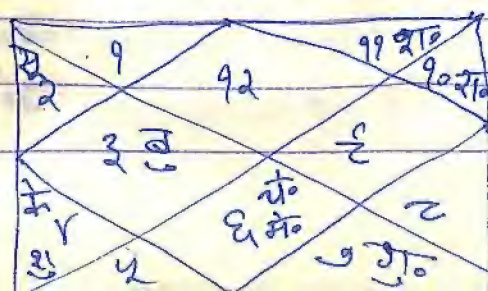
स्त्री के संतान देरी से होती है, फलस्वरूप संतान की चिंता में पीड़ित
है। समुख, सत्यवादी, पति को सत्पथ पर ले जाने वाली, नीती एवं
मर्यादा की बात कहने वाली, गृंगार प्रिय, साधारण गृंगार से उसका
रूप खिल उठता है। इसे धन की ललसा रहती है तथापि यह लालसा
अन्य सदगुणों पर हावी नहीं होती। दृढ चित्त वाली ऐसी स्त्री
संकटों एवं बाधाओं में पति का साथ देती है। जातक की मृत्यु
उपवास से होती है। क्रोधातिरेक में शोकसान होने से या युद्ध
भूमि में भी मृत्यु संभव है। जातक पाखंड प्रिय होता है। प्रदर्शन
की प्रवृत्ति इसमें खूब होती है। इसके फलस्वरूप व्यर्थ का व्यय भी हो
जाता है। फैशन एवं सजावट में रुचि। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष
कष्ट तथा उथल पुथल। जातक को आजीविका के लिए कठोर संघर्ष
करना पड़ता है। परिवार एवं जाति की ओर से बिल्कुल सहायता
नहीं। 12 वर्ष तक स्थिति साधारण। इसके बाद भाग्योद्यत जीवन
में प्रगतिशील तथा अपने द्योतक तक पहुँच जाता है। जीवन में कई
यात्राएँ करता है तथा समय को पहचानकर तत्काल कार्य करता
है। जातक की व्यापार में प्रगति। नौकरी में पेशानियों का सामना
करना पड़ता है, परंतु इसमें इच्छाशक्ति अदम्य होती है तथा
निरन्तर संघर्ष करता हुआ अन्ततः विपरीत परिस्थितियों को
अपने अनुकूल बना ही लेता है। भूमि सम्बन्धी अथवा धर्म
संबन्धी कार्यों में जातक को लाभ होता है। एवं पिता की सेवा
करने वाला यह जातक समाज में यश लाभ करता है। जातक
चंचल प्रकृति का युवक होता है तथा उसका दिमाग अत्यंत गतिशील
रहता है। एक ही बिंदु पर घंटों सोचने की इसकी आदत नहीं होती।
परंतु बहुत कम समय में यह बात की तरह तक पहुँच जाता है।
नौकरी में उन्नति के कई अवसर तथा प्रगति भी करता है।
के ठोस साधन। परिवार तथा समाज में लोकप्रिय तथा सम्मानित
के साथ स्नेह संबंध। अपने वचनों का पालन। सजावट में रुचि
सुरुचि एवं सफाई में विशेष मोह होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बुद्धिमान, गम्भीर, सौम्य, परोपकारी, ईमानदार, सत्य प्रिय, धार्मिक, फिलारफर, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं में रुचि, उच्चाभिलाषी, उच्चकांग्री, स्वाभिमान, मन मर्यादा का ध्यान रखने वाला, सेवाभाव तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल, नैतिक, विश्वसनीय, ईमानदार मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहायक, परिस्थितियों के अनुसार दल देने की प्रमत्ता बला, न अन्याय करेगा न अन्याय सहन करेगा। जातक कलाकार, चल चित्र, व्यवसाय, खाने पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल। शुभ नग पुखराज, वैवाहिक जीवन के लिए पञ्जा। आभ्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८ वें होंगे। (पाँचाग दिनाकर से)

बालक जन्म समय सुन्दर, सौम्य, पीतवर्ण, वात फफ प्रकृति, माता के पीले मिलित वस्त्र, मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किया हो, मुख उत्तर की ओर, उपसूत्रिकाएँ २ या ३। बालक जन्म से कुछ देर बाद रोया है। आयु के १, ७, १०, १३, २६, २९, ३८, ४१ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूतिलक्षण विना निम्न फलदेश मीन लग्न की स्त्रियों के लिए :- मीन लग्न हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता, नयशील, विनम्र, गुरुकी आज्ञाकारीणी, बन्धु प्रिय, देवता-भक्त, पुत्रवती होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक देवता के समान, मानी, कला-कौशल, विद्वान्, लेखक, अपना प्रभाव दूसरों पर डालने वाले, जातक नानी, संगीतज्ञ, साहित्यकार, भोगी, संतान अधिक, भाग्यवान् दानी, पुण्यात्मा लोगों से सहज भुक्ति, अस्वाधी, क्रोध जल्दी नहीं और शांत भी जल्दी नहीं, भाई-बहिन अधिक, सम्बन्ध सहायक, भाई-बहिन की मृत्यु, माता का सुख कम, पिता अकाल मृत्यु, प्रतिभाशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीडा, विदेश में बुखी।

१, २५, २०, ३२, ३८, ४० वें वर्ष कष्ट। महत्तम प्रण वर्ष ४, १८, २४, ३३, ४५, ५२, ६०, ६४। आयु-वर्ष (कालदर्शक पाँचाग) नोट :- आगे एक महिला की कुण्डली है जिसकी ६ पुत्रियाँ हैं पर पुत्र एक ही नहीं है। मीन लग्न उपर्युक्त कारण का हेतु है, राहु की दृष्टि संतान सुख में बाधक, पंचम भाव का शुक्र स्त्री कारक मरुत है जिसके कारण लड़कियाँ अधिक।



(कुण्डली दर्पण)

सूर्य

प्रथम भाव में हो तो ईमानदार, तुल्यकर्मि जाज, गुरुसैल, शारीरिक पुष्ट, रंग भी खुलता हुआ। (कुण्डली दर्पण से)

जातक साहसी, कुशाम्, उदार दृढ़ इच्छाशक्ति, स्वतंत्र विचार, स्वाभिमान, दलेर, उन्नत नासिकाग्र, चौड़े ललाट युक्त, उच्च पद, भ्रमणशील, विदेश में भाग्योपय, सूर्य अशुभ हो तो चंचल, क्रोधी, दुर्बल, अल्पकेशी, बाल्यकाल में चौराही का भय, शिर एवं नेत्र कष्ट, स्त्री व परिवार सम्बन्धी चिन्ता, स्त वितरोग, अस्थिर प्रकृति, स्त्री की कुण्डली में स्त्री क्रूर, दुष्ट, कृतघ्न, परान्नप्रिय, कृश, कांतिहीन, रोगयुक्ता बाल्यकाल में शोणित नेत्र कष्ट, नीचों की सेविका, धन तथा पुत्र सुख से वंचिता सूर्य उच्च स्थ हो तो सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

द्वितीय भाव में हो तो जातक द्रव्य के सम्बन्ध में चिन्तित, पिता द्वारा अर्जित धन उसे नहीं मिलता। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अधिक सफल। मध्यकाल में रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा आपरेशन आदि भी होते हैं। नौकरी की अपेक्षा उद्योग कार्यों में जातक सफल। (कुण्डली दर्पण से)

जातक मुखरोष्णी, सम्पत्तिवान्, भाग्यवान्, झगड़ालू, नेत्र कर्ण दन्तरोगी, राजभीरु, स्त्री के लिए परिवार से झगड़ने वाला होता है। (पांचांग हिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कलहप्रिय, धन-ध्याज्य सिद्धिना, प्रारक्रम दीन, द्वेषी, स्नेहहीन, कठोर भाषिणी, पारिवारिक सुख से रहित, नेत्र रोग, मध्यम धन। सूर्य उच्च हो तो सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

१३ नवंबर

तृतीय भाव में हो तो जातक के होसले बहुत बड़े-चढ़े होते हैं। शत्रुओं से खिलवाड़ करना तथा इसमें सफल होना। इसमें सफल होना होता है। हिमांगी कार्यों में

सूर्य

५४

अग्रणी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। भाइयों से लाभ नहीं। धनवान, सुखी, धैर्यवान, सानन्द जीवन व्यतीत करता है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक पराक्रमी, प्रतापशाली, कवि, बन्धुहिन, बलवान, लक्ष्यप्रतिष्ठ (पाँचों दिशाओं में विजय)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर शरीर व मुख, विशाल स्तन, नम्र, रोग पीड़ित, सदैव आनन्दित दिखने वाली, बन्धु सुख से रहित, धैर्य, शक्ति सम्पन्न, पति के सुख से निर्युक्त तथा दूसरों की रक्षा करने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

३) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, दिमाग में अस्थिरता असंतोष एवं घुमड़न सी बनी रहती है। जातक जीवन में प्रसन्न। मित्र सहायक पर स्वार्थी फलस्वरूप मित्रों का विशेष लाभ नहीं। गम्भीर विषयों और संगीत में रुचि। राजनीति असफल तथा कठिनता से सफलता प्राप्त होती है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक चिन्ताग्रस्त, सुन्दर, कठोर, पितृधन नाशक, भाइयों का वैरी, गुप्त विद्या प्रिय, स्ववाहन सुखहीन (पाँचाँग दिवाकर से)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बड़े दाँत वाली, रोगी, प्रभावहीन, अपमानित, सुखरहित, पति-पुत्रदि सुख से युक्त, धन, शौर्य, शक्ति से सम्पन्न, कोमल हृदय, सुन्दर पति, संगीत की जानकार तथा सदैव सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

४) पंचम भाव में हो तो जातक को संतान सुख का अभाव था स्त्री के गर्भपात या देरी से संतान लाभ। जीवन में प्रसन्नगी का अभाव तथा कई उतार चढ़ाव, बाल्यवस्था कष्टदायक, पितृधन में कठोर संघर्ष करना पड़ता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में संतान सुख प्राप्त होता है।

सूर्य

५५

या दिल के दोरे से भी मौत संभव। आय की अपेक्षा व्यय अधिक।

जातक रोगी, अल्पसन्तान, सदाचारी, बुद्धिमान, दुखी, शीघ्र क्रोधी, वचक (कुण्डली दर्पण)

विवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री अल्प पुत्रवती, व्रताचारिणी, माता पिता की भक्त, प्रिय भाषिणी, देव ब्राह्मणों की पूजक, स्त्रियों में ज्येष्ठ, बाल्यावस्था में रोगिणी, धनहीन। सूर्य मेष, सिंह का हो तो धन पुत्रादि सुख से युक्त (स्त्री जातक विज्ञान)

ह) षष्ठ भाव में हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ, समय को पहचानने वाला, सोच विचारक कर कार्य करने वाला, प्रसिद्ध। यद्यपि स्वस्थ उत्तम कोटि का नहीं वृद्धावस्था में लम्बी बीमारी, जातक योगाभ्यास में रत, परिवार का कल्याण करने वाला, बंधुओं में पूज्य एवं पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्त करता है। जातक कुशल प्रशामक। इसके शत्रु अनेक पर इससे डरते हैं। जातक पूर्ण परिश्रमी व धनवान। 'सेल्फ मेड मैन' होता हुआ भी अर्थ संचय में निपुण, वृद्धावस्था में सीने में दर्द, हार्ट टर्बल, रक्त सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक शत्रुनाशक, तेजस्वी, वीर्यवान, मातुलक पक्षपात, सम्बन्ध बलवान, जीमान, न्यायवान, निरोगी (पाँचावा दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दया, प्रौढ़, धार्मिक, शान्त स्वभाव, शत्रुजयी सौभाग्यशाली, सुन्दर शरीर, कुटुम्ब की रक्षा, धन पुत्रादि से युक्त, उत्तम स्वभाव, लोक में मान्य (स्त्री जातक विज्ञान)

अशुभ स्थान में हो तो जातक की स्त्री सुन्दर, सुहीनित, सुशील।

जातक के साथ आनंद भोग की प्रवृत्ति। वैवाहिक सुख प्रीण। यदि

सूर्य

पृष्ठ

सप्तम भाव में कोई शुभ ग्रह न हो तथा दृष्टि भी न हो तो जातक के दोषिवाद होते हैं। जातक चंचल, विलासी, सुन्दर स्त्रियों के लिए वह असफल प्रयत्न करता रहता है, क्रोधी, शरीर कुश। संतान सुख मध्यम तथा एक, दो बार गर्भपात। प्रथम संतान के शरीर विकार या न्यूनता। जातक का संतान सुख मध्यम। जातक शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता। क्रोधवैश में काम बिगाड़कर पड़ता है। स्त्री के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं। विचारों में मतभेद। स्त्री का स्वभाव भी क्रोधी (कुण्डली दर्पण से) जातक की स्त्री कलेशकारक, स्वाभिमानी, कठोर, आत्मरत, राज्य से अपमानित व चिन्ता युक्त। (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरूप, पापिनी, लज्जाहीन, नफयुक्त, पति द्वारा परित्यक्त, चंचल, कठिन वर्ष के नेत्र (स्त्री जातक विज्ञान)

च) अष्टम स्थान में हो तो जातक क्रोधी, चंचल, हृदय में अपने से बड़ों के प्रति ज्ञाता, रोगी, बुरी संगति के कारण स्वस्थ एवं धनी घटता है। भाग्य इसका साथ नहीं देता। ऐसा जातक धोखेबाज, दूरदर्शी तथा आजीविका के लिए घर से दूर रहता है। (कुण्डली दर्पण) जातक पित्त रोगी, चिन्ता युक्त, क्रोधी, धनी, सुखी, धैर्यहीन, निबुद्धि (पाँचांग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रक्तदोष से पीड़ित, उत्साहहीन, कुधर्माचारिणी, दुःख, दारिद्र्य से युक्त, चंचल स्वभाव, मलिन चित्त, रोगिणी, दुःशील, पति सुख से रहित (स्त्री जातक विज्ञान)

दिवाकर दिवाकर

सूर्य

4

पृ. 9

दशम भाव में हो तो जातक का मध्यम कद, उभरा वक्रस्थल, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्र होते हैं। जातक परिवार से स्नेह करने वाला, नवीन विचारों का अन्वेषी होता है। जातक साहसी, परीक्षणी, विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर होता है। बाल्यावस्था सुखद नहीं, शिक्षा एवं आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ता है। युवावस्था, वृद्धावस्था सफल, यात्राओं का प्रबल योग, 28 वें वर्ष से भाग्योदय, अपूर्व नेतृत्व क्षमता (कुण्डली दर्पण)

जातक योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, ज्योतिषी, साहसी, बाह्यसुख युक्त, भृत्य सुख रहित (पाँचाग विनाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री क्रोधिनी, साहसकर्म-प्रिय, अनेकशत्रुवाली, भाग्यहीन, ऐश्वर्यहीन, सुन्दर केश, सत्यवादी, धनधान्य से युक्त, बाल्यकाल वृद्धावस्था दुखी, यौवनसफल (स्त्री जातक विज्ञान)

11) दशम भाव में हो तो जातक तेजस्वी, सच्चरित्र, विद्वान होता है। यदि अन्य ग्रह कारक हो तो जातक नौकरी में प्रगति करता है। परंतु राज्य भंग योग भी होता है। नौकरी में उतार चढ़ाव, मातृ सुख अत्यल्प, माता के विचारों से विरोध जिसके कारण माता से दूर रहता है। पितृ सुख कम था। पिता का धन नहीं प्राप्त होता। कई बार व्यय होने के कारण आर्थिक स्थिति चिंतनीय, उत्तम जीवन बिताने का श्रम समाज में व्यस्ति जहा की दृष्टि से देखा जाता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रतापी, व्यवसायी, राजमान्य, लब्ध प्रतिष्ठ, राजमंत्री, उदार, ऐश्वर्यसम्पन्न, लोकमान्य (पाँचाग विनाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्म, निस्तेज, पीड़िता, स्वकृत्यों के प्रति दुर्लक्ष, समस्त गुणों से युक्त, अभिमानि, दानी, धनपुत्र सुखसे सम्पन्न, नृत्यगण में रुचि (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक अडियल प्रकृति का, एक बार जेजी सोच लेता है उसे पूरा करने में कृतसंकल्प और अंततः विचारों को भूत रूप दे ही देता है। प्रार्थिक दृष्टि से सम्पन्न। बचपन सुखमय तथा यौवन में अर्थ संचय भी कर लेता है। आवश्यकताएं पूरी कर लेता है, प्रगति तथा लाभ प्राप्त करता है। परिवार से विचारों में भिन्नता फिर भी सोच समझकर बोलता है। जातक सफल वकील या राजनीतिज्ञ। जीवन में अभाव नहीं रहता तथा स्वतंत्र चिंतन के कारण प्रख्यात होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनी, बलवान, सुखी, स्वभिमानि, सितभाषी, तपस्वी, सदाचारी, अल्पसन्तति, उदर रोगी (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री समस्त कलाओं में निपुण, पुत्र-पौत्र युक्त, बन्धु वर्ग को मान्य, लाभायुक्त, सितेन्द्रिय, सुखी, धनी, सुन्दर, सुशील, दूसरे के गुणों को मंझण। (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक उदासीन, वाम नेत्र एवं मस्तक रोगी, आलसी, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी, कृश शरीर (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्मि, शुचिता रहित, किजुलखची, दुष्ट, नेत्र-रोगी, सब जगह जाने वाली, दुर्बल, कामी, पर-पुरुष, पस्थन प्राप्त करने वाली। (स्त्री जातक विज्ञान)

चन्द्र

प्रथम भाव में हो तो जातक कोमल, कल्पना शक्ति की प्रबलता, भावुक, सहृदय, दयालु, मानसिक चिंता से ग्रस्त या उदर रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलवान, ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी, मान-वाद्य प्रिय, स्थूल शरीर (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो चन्द्र शुक्ल पत्र का तो गौरवर्ण, सुन्दर, धन-धान्य युक्त कृष्ण पत्र हो तो कृशांगी, कुवस्त्र, विवाह प्रिय, रुग्ण, अल्पसुख। (स्त्री जातक विज्ञान)

द्वितीय भाव में हो तो जातक सुखी-सम्पन्न, बृहद परिवार का बन्धी होता है। स्त्रियों के मामले में सौभाग्यशाली, स्त्रियों के सम्पर्क से नरक द्वयौपार्जन में सफलता प्राप्त करता है। चन्द्र व्यक्तिको साफल्य पत्रकार, लेखक भी बना देता है और पुस्तक व्यवसाय, प्रकाशन संस्थान अथवा लेखन से भी भाग्योदय हो सकता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक मधुरभाषी, सुन्दर, भोगी, परदेशवासी, सहजशील, शान्ति प्रिय, भाग्यवान (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो नम्र स्वभाव, धर्मशील, नीती युक्त, धनवती, पति का कार्य करने में दक्ष, सुन्दर, कीर्तिमती, सुखी, सुशील, धार्मिक होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

तृतीय भाव में हो तो जातक शीघ्र सोचने वाला, तुरन्त निर्णय करने वाला, कठिन संघर्षों में भी आगे बढ़ते रहना

चन्द्र

६०

एवं बाधाओं पर विजय पा लेने की प्रमत्ता वाला, जातक अल्पभाषी, कम से कम बोलकर अधिक से अधिक कार्य कर देना इसका स्वभाव। जीवन के मध्यकाल में अपने रास्ते बदल देता है। जातक यात्राओं का शौकीन, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला, परम साहसी। पारिवारिक जीवन अल्प होता है, परिवार में मनमुटाव चलता रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रसन्नचित्त, तपस्वी, आस्तिक, मधुरभाषी, अफरोगी, प्रेमी, स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कफ-वात-पित्त युक्त, दुष्ट, असंगति प्रिया, कठोर भाषिणी, नीती रहिता, कृपण, कृतघ्न, धनपुत्रादि से युक्त, थोड़े भाई, चन्द्र बनी हो तो बन्धु सुख (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक भानुक, दयालु, परोपकारी, सम्बन्धियों से विचारों में गहरी असमानता, हंसमुख। आत्मविश्वास एवं आत्मसंतोष की मात्रा जरूरत से अधिक। बुलवान चन्द्र। जातक को विख्यात, धनी, प्रभावशाली बना देता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक दानी, मानी, सुखी, उदार, निरोगी, रामद्वेष वर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् आभ्योदयी, जलजीवी, बुद्धिमान (पांचांग विवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री का स्थिर स्वभाव, सुखी, धार्मिक, सुखी मधुर भाषिणी, मांस में रुचि चन्द्र त्रीण हो तो श्रेणिणी, दुर्बल, दुःखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो पूर्ण संतान सुखा संतान सरल, रौंन्ध, गुणवान, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है। प्रार्थनार्थी। जातक सम्पन्न, जातक की स्त्री गुणवान एवं कुलीन।

जातक ईश्वर से डरने वाला, ईश्वर उपाधिक, धार्मिक, सत्यवादी,
मानदार, चातुर, तीक्ष्ण बुद्धि, कलाओं का ज्ञान होता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक चंचल, कन्या सन्तानवान, सदाचारी, सदैव से धन कमाने वाला
प्रभाशील होता है। (पाँचामा दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो सखती, गुणवती, सुपुत्रवती, सेवक सुख सम्पन्न,
गौरवमयी, पति की आज्ञाकारी, पति प्रिया, सुशीला चन्द्र मीन हो तो विपरीत फल।
(स्त्री जातक विज्ञान)

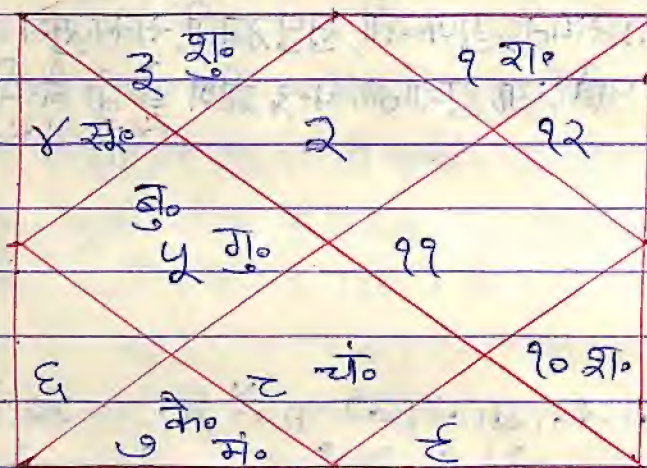
६) षष्ठ भाव में हो तो जातक बाल्यावस्था में विविध रोगों से ग्रस्त,
मानसिक रूप से परेशान, दुखों को झेलते-२ सहिष्णु हो जाता है।
मित्रों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यदि चन्द्र बली हो
तो बहुत से सुख प्रदान करने में समर्थ। (कुण्डली दर्पण)
जातक कफरोगी, अल्पायु, आसक्त, खरचीला स्वभाव, नेत्ररोगी,
भूयप्रिय (पाँचामा दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चंचल स्वभाव की, विनयहीन, कृश शरीर,
रोगग्रस्त, दीर्घद्वेषी, अल्पधनवती, बचपन में रोगिणी, शत्रु से परास्त। चन्द्र बली
हो तो अत्यंत सुख (जीत, विजय)

७) सप्तम भाव में हो तो जातक को स्त्री (स्त्री की कुण्डली हो तो)

पति का पूर्ण सुख नहीं प्राप्त होता। अद्यपि जातक सुन्दर,
सुशील होता है भाग्य भी उसका साथ देता है परंतु
पति (पति) के सम्बन्ध में योग शुभ नहीं। (कुण्डली दर्पण)
जातक को दी गई कुण्डली को देखें। दाम्पत्य सुख सप्तम
भावे शुभ को देखा जाता है। इस कुण्डली में चन्द्र सप्तम में नीच

हुआ पडा है, साथ ही सप्तमेश मंगल ने षष्ठ भाव में केतु के साथ गठबंधन कर रहा है, फलस्वरूप मारक सा हो गया है। चन्द्र भी अकारक है, साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं। अतः दाम्पत्य सुख कम है।



एक ऐसी स्त्री की कुण्डली जो विवाह के एक सप्ताह पूर्व विधवा हो गई। (कुण्डलीदर्पण)

जातक सम्य, धैर्यवान, नेता, विचारक, प्रवासी, जलयात्री, अभिमान, व्यापारी, वकील, प्रसिद्ध, शीतल स्वभाव व स्फूर्तिवान (पाँचाग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, परिश्रमा, तेजस्वी, ऐश्वर्यसम्पन्न, मधुर भाषिणी, विवेकयुक्त, सुखी, सुन्दर व गुणवान पति। चन्द्र मीन हो तो पति सुख से वंचित (स्त्री जातक दिवाकर)

च) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक की कुण्डली में अगर मीन हो तो शीघ्र मृत्यु परंतु यदि बली चन्द्र स्वयं की राशि, शुक की राशि, बुध की राशि में हो तो जातक को साँस की बीमारी या दिल के दोरे की वजह से मृत्यु होती है। (कुण्डली दर्पण)

जातक विवेकशील, विचारक, प्रेमहरेजी, कामी, व्यापारी, लालचाल, स्वाभिमान, बंधन से दुखी, ईर्ष्यालु (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरूप, विद्रुप अवयवों वाली, लोचनी, दाहिनी, निन्दिता चन्द्र अशुभ हो तो बाल्याकाल में मृत्यु। गुरु केन्द्रस्थ व शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु (स्त्री जातक दिवाकर)

४) शुभ भाव में चन्द्र की स्थिति अनुकूल होती है। जातक सौभाग्य में होता है। भाग्य निरंतर उसका साथ देता है। जातक संवर्षशील नेतृत्व करने की क्षमता वाले, विपरीत से विपरीत स्थितियों में भी दीमागी संतुलन बनाए रखते हैं। जीवन का मध्यकाल उन्नत, शत्रु विजयी, धर्म के क्षेत्र में सहिष्णु, राजनीतिक क्षेत्र में सफल। जातक धनवान, सेनान, विपक्ष का भी हित चाहने वाला होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सन्तति सम्पत्ति युक्त, धर्मार्थ, कार्यशील, प्रवासप्रिय, न्यायी, चंचल, विद्वान्, विद्याप्रिय, साहसी, अल्पभ्रातृवान्। (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, पतली कमरवाली, सुन्दर पुत्र, सेवकों से युक्त, सुखी, धर्मार्थ, सौभाग्यावती। चन्द्र त्रीण हो तो धर्म व सुख से रहित। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) दुःशम भाव में हो तो जातक का बचपन अत्यंत सुंदरता से होता है। भाग्य साथ देता है, १६ वर्ष के बाद उन्नति। जातक स्वस्थ, सुंदर, कुलीन, गुणवान्, समय की नाजूकता को पहचानने वाला, नौकरी में लाभ, यदि चन्द्र बली हो तो जातक लोकप्रिय होता है, आकर्षक व्यक्तित्व, शत्रुओं में भी प्रशंसनीया यदि चन्द्र त्रीण हो तो जातक वृद्धावस्था में स्वास्थ्यरोग से पीड़ित, मात्र वृद्ध से संबंधित रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक कार्यकुशल, दयालु, निर्बल बुद्धि, व्यापारी, कार्य प्रशयण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल दीपक, संतोषी, लोकहित प्री, मानी, प्रसन्नचित्त, दीर्घायु। (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में जातक स्त्री पुण्यशील, सत्यवादिनी, संतुष्ट, जेष्ठ, दानी, पति पुत्र धन से युक्त। चन्द्र त्रीण हो तो दुबली व कास-रेण। (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक साहसी, दृढ़ निश्चयी, हठी, नेतृत्व की क्षमता वाला, सूझबूझ, शत्रु विजयी, युवावस्था में प्रसिद्ध हो जाता है। इनका बचपन साधारण स्तर का होता है, जीवन के १६वें वर्ष के बाद भाग्योदय, नौकरी में हो तो उच्च पदाधिकारी, व्यापार में भी लाभ, धन का अभाव नहीं, जीवन की आवश्यकताएं सहज ही पूरी हो जाती हैं। जातक की तिवान, मौलिक होते हैं। (कुण्डली दपण)

जातक चंचल बुद्धि, गुणी, सन्तति, सम्पत्तियुक्त, सुखी, लोकप्रिय, यशस्वी, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेसप्रिय, राज्यकार्यदक्ष (पांचांग दिनकर)

~~मन्त्रज्ञ~~ की स्त्री की स्थिति, विनम्र, दानी, संतुष्ट चित्त, इन्द्रियनिग्रह, सुन्दर, सौभाग्यवती, धन-पुत्रादि से सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोगी, चंचल, कफरोगी, क्रोधी, एकाग्रप्रिय, चिन्ताशील, मृदुभाषी, व्यथी होता है। (पांचांग दिनकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दीन, अन्यायी, दारिद्र्य, समाहीन, पापी, बहुत खर्चीली, शीण नेत्रों वाली, दुष्ट चरित्रा, विकट रूप व बाल्यकाल में रोगिणी (स्त्री जातक विज्ञान)

मंगल

प्रथम भाव में हो तो रुखापन, चेहरे पर रक्तिमा, साहसी, स्वस्थ, व्या आकृति, धीखेबाज, स्वाधी, अपने सिद्धांतों पर दृढ़। (कुण्डली दर्पण)
 जातक क्रूर, साहसी, चपल, महत्त्वकांक्षी, गुत्तरोगी, लौहधातु एवं चोटादिसे, कष्ट युक्त, व्यवसाय में हानि। (पांचांग दिनाकर)
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री रक्त दोष से पीड़ित, भाग्यहीन, पराक्रमहीन, अभिमानी, पति से तिरस्कृत, दुर्बल, बाल्यकाल में रोग, सुखों से रहित, दौतरोग, दृष्ट कृष्ण वर्ण। (स्त्री जातक विज्ञान)

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर, विद्या के क्षेत्र में कमजोर तथा विद्या प्राप्ति में रुकावटें आती रहती हैं। जातक बातचीत में पटु, सेक्स मैज के रूप में सफल। (कुण्डली दर्पण)
 जातक कटुभाषी, धनहीन, निर्बुद्धि, पशुपालक कुटुम्ब क्लेशवाला, चोर से भस्ति, धर्मप्रेमी, नेत्र कर्ण रोगी, कटु तिरस्कर सप्रेम। (पांचांग दिनाकर)
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री, दरिद्र, कुबुद्धि, रोहिणी, कामी, दुर्बल, गृहकाय में कुशल, सुख भोगिनी, जमाशील, पति जुझारी, अनेक पुरुषों की आश्रित। (स्त्री जातक विज्ञान)

तृतीय भाव में हो तो जातक सीमित साधन होने पर भी अडिग, जीतकों का विनाश का सामना करना पड़ता है तथा ये अपनी जीत भी निकाल लेते हैं। व्यक्ति दृढ़ निश्चयी, यात्राओं का शौकीन, जो जगत् में विशेष लाभ नहीं, समाज में आदरणीय, पारिवारिक जीवन में न विहाल सामान्य, खतरों से खेलने का शौकीन,

मंगल

६६

नए विचारों को अपनाना इनका स्वभाव होता है। राजनीति पटु
ऐसा जातक जीवन का स्वयं ही निर्माता होता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक प्रसिद्ध, शूरवीर, धैर्यवान, साहसी, सर्वगुणी, बन्धुहीन, बलवान,
प्रदीप्त जठराग्निवाला, आतंक प्रकाशक, कटुभाषी। (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्च तो स्त्री सौभाग्यवती लोगों
की प्रिया मंगल मित्र या शत्रु प्रेमी हो तो धनहीन। भाईयों का सुख कम। (स्त्री जातक
विभाग)

यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती
है। पिता से विचारों में मतभेद। नौकरी के लिए कठोर संघर्ष
करना पड़ता है। जातक आत्मविश्वासी, संघर्षशील, माता के लिए
आदर और श्रद्धा, मंगल की दशा में जातक को वाहन सुख की प्राप्ति,
राजनीति में सफल, परिस्थिति एवं मनुष्य को भाँकने की
गान्धर्व की शक्ति। पारिवारिक जीवन सुखी, संतुष्ट होता है।
जातक वाहनसुखी, सन्तानवान, मातृसुखहीन, प्रवासी, अग्निभय
युक्त, ऊपमृत्यु या उपमृत्यु, कृषक, बन्धुविरोधी, लाभ युक्त होता है। (पांचांग
दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखहीन, धनहीन, तिरस्कृत, क्रोधी, रोषिणी,
कुबुद्धि, पर-पुरुष पर आसक्त, लोभी, भ्रातृ सुख रहित, गृह सुख रहित। (स्त्री जातक
विभाग)

यदि पंचम भाव में हो तो जातक पुत्ररहित होता है। संतानहीन
नैर्बल हो तो पुत्रों द्वारा प्रतिपादित पाप कृत्यों में रत्नादि
जातक कई बाधाओं का सामना करता है। जातक साहसी, प्रजापति,
संघर्षशील। पत्नी के साथ मतभेद, फिर भी कोई भी भाग्यहीन नहीं।

मंगल १९
निराल जाता है। डाक्टरों या वैद्यकों आदि क्षेत्र में जातक सफल (कुण्डली दर्पण)
जातक अग्रबुद्धि, कपटी, व्यसनी, रोमी, उदररोग, कुशशरीर, मुष्ठांग
- रोमी, चंचल, बुद्धिमान, सन्ततिकलेशयुक्त (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री लज्जाहीन, संतानहीन, कुपुत्रवती, बन्धु सुखहीन,
पापी, दुखी। मंगल स्व या उच्च क्षेत्री हो तो एक पुत्र। [स्त्री जातक विज्ञानी]

६७
यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक युद्धस्थल में मृत्यु प्राप्त करता
है अथवा शत्रु संघर्ष करते हुए विजय लाभ करते हुए मरता है।
राजनीतिक क्षेत्र में सफल, कठोर हृदय, शत्रु विजयी। यदि लग्न
सिंह हो तो पूर्ण गृहस्थ जीवन भोगता है। उच्चाधिकारी, शासक या
मंत्री। यदि मंगल शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ऐक्सीडेंट या
मंगमंग। यदि मंगल शनि एक साथ शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो
जातक की मृत्यु पशु के कुचलने से होती है अथवा आप्रेशन के समय
मृत्यु। यदि राहु व मंगल बलवान होकर स्थित हों तो जातक
नाशक होता है तथा सम्बन्धियों को दुख देता है। यदि जातक का
लग्न हो तो जातक पाप कर्मों में रत रहता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक प्रबल जठराग्नि, बलवान, धैर्यशाली, कुलवन्त, शत्रुहन्ता,
ऋणी, पुलिस अफसर, दाहुरोगी, क्रोधी, रक्तविकारयुक्त, फिजूलखर्ची
(पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रुरहित, स्वस्थ, धनवती, पति व पुत्र सुखयुक्त।
मंगल निर्बल हो तो अल्प रोगमय। [स्त्री जातक विज्ञानी]

मंगल

१) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री दुर्बुद्धि एवं कलह प्रिय।
यदि मंगल नीच या शत्रु मैत्री हो तो अथवा अष्टमेश हो तो एक से
अधिक शादियाँ होती हैं। यदि मंगल स्वराशिगत हो तो जातक स्त्री के
कारण दुखी रहता है तथा साधारण स्तर का दाम्पत्य जीवन रहता है।
जातक स्त्री दुखी, वात रोगी, राजभीरु, शत्रु कोपी, कष्टभाषी, निर्धन, मूर्ख,
घातकी, धननाशक, ईर्ष्यालु। [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री मंगल शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री कुरूप, दुष्ट,
ऐश्वर्याहीन, गुणहीन, बाल-विधवा। मंगल शुभ हो तो दुष्ट, दुखी, चंचल, पर-पुरुष पर
आसक्त। [स्त्री जातक विजय]

२) यदि अष्टम भाव में हो तो तथा धनु लग्न हो तो जातक की मृत्यु
जल में डूबने से। मंगल मीण हो तो जातक की जलने से मृत्यु।
यदि मंगल धनु या मीन राशि का हो तो जातक कई बार मरते-
बचता है। उसका जीवन जेखिम से भरा तथा मृत्यु से संघर्ष करने
में आनंदित होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक व्याधि ग्रस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्र
रोगी, शस्त्रचोर, अग्निभीरु, संकोची, रक्त विकार व धन विन्तायुक्त।
स्त्री की कुण्डली में स्त्री कृश, कृष्णवर्ण, दुखी, दारिद्र्य, रुग्ण, कालिहीन,
हिंसक, दुखी, मौत पानी में डूबकर या पतिका मौत। [स्त्री जातक विजय]

३) यदि नवम भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, कर्मठ, परिश्रमी। यदि
मंगल शत्रु मैत्री हो तो रोगी। प्रारम्भिक वर्षों में दुखी आजीविका
के लिए कठोर परिश्रमी। मंगल मकर का या स्वराशिगत हो

तो भाग्यवृद्धि में सहायक होता है। विद्या में रुचि, जातक सफल लेखक या पत्रकार, प्रकाशक, सच्यरित्र, नम्र स्वभाव, सरल जीवन व्यतीत करने का इच्छुक होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक द्वेषी, अभिमानी, क्रोधी, नेता, अधिकारी, ईर्ष्यालु, अल्प लाभ, यशस्वी, उत्तम ब्राह्मणों से युक्त असंतुष्ट व मातृ विरोधी (पांचांग सिंहाकर)
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, रोगी, तामसी, धर्महीन, भागहीन, जन-हीन, बड़े परिवार वाली, संगीत की रुचि व प्रसिद्ध [स्त्री जातक विज्ञानी]

10) यदि दशम भात में हो तो जातक सफल व्यापारी, नौकरी से लाभ नहीं। बाल्यकाल गरीबी में व्यतीत, माता की मृत्यु बचपन में, शिक्षा में कठिनाइयाँ, जातक परिजामी, संघर्षबील, सूझ-बूझ से व्यापार में उन्नति करते हैं। धौवन अवस्था संघर्षों में परंतु वृद्धावस्था सफल। जीवन में ये लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनवान, कुलपति, सुखी, यशस्वी, उत्तम ब्राह्मण, स्वाभिमान, सन्तति कष्टवाला (पांचांग सिंहाकर)

स्त्री की कुण्डली में हो तो स्त्री अधर्मा, शीलहीन, लज्जाहीन, रतिप्रिय स्व-कुल में श्रेष्ठ, परोपकारिणी, संतुष्ट, कार्य कुशल, पति उच्चपदस्थ व आभूषण सम्पन्न [स्त्री जातक विज्ञानी]

11) यदि एकादश भात में हो तो जातक पिता के धन को नहीं भोग पाता, पैसिक सम्पत्ति नहीं के बराबर मिलती है। शिक्षा काल में व्याधान आते रहते हैं। मंगल स्वमृद्दी हो तो जातक को लाभ कराता है। जातक आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी, २८ वें वर्ष से भाग्योदय

मंगल

190

भाइयों से विशेष लाभ नहीं परजातक भाइयों की सहायता करने का इच्छुक, तुरंत निर्णयी, प्रौढावस्था सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कटु भाषी, दम्भी, झगडालू, क्रोधी, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, न्यायवान, धैर्यवान (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री धर्मसिक्त, पति से प्रेम, श्रेष्ठ, धनी, लाभकारी, पुत्र-पौत्र से युक्त, कार्य-कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोमी, स्त्रीकष्ट, उग्र, त्रिज्जी, झगडालू, मूर्ख, अथ शील प्रकृति (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दुर्बल, मध्यपान प्रिय, आतुर, गुणहीन, धातकी, खर्चीली, धनहीन, क्रोधी, पति-सुखहीन तथा बन्धुओं की विरोधिनी [स्त्री जातक विज्ञान]

कष्ट विज्ञान

बुध

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातकका चेहरा सुन्दर, चेहरे पर रस्मिमा, कुछ पीलापन लिए हुए गौरवर्ण, छिगना कद, पुष्ट शरीर।

कुण्डली दर्पण

जातक दीर्घायु, तर्किक, गणितज्ञ, विनोदी, उदार, वैद्य, विद्वान्, स्त्री प्रिय, मिष्टभाषी, मितव्ययी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रूपवती, धर्मात्मा, नीतियुक्त, सत्यवादी, सर्व प्रिय, धनधान्यसम्पन्न, पति द्वारा मान्य, पण्डिता, धैर्यवान्, सुशीला, अधिक सन्तान, गृह कार्य में कुशल, प्रियवादिनी, शिल्पज्ञ, दानादि करनेवाली। [स्त्री जातक विज्ञानी]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक मामलों में कट्टर, अर्थ संचय में प्रवीण, धन का अभाव, भाषण करने में पटु, लोगों को अपने पक्ष में करने की कला में प्रवीण, उद्योगों में धन लगाने का इच्छुक रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक वक्ता, सुन्दर, सुखी, गुणी, मिष्ठान्नभोजी, दलाल या वकील, मितव्ययी, संग्रही, सत्कार्य कारक, साहसी। [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रूपवती, सुन्दर, धनवती, शुद्ध आचरण, धार्मिक, कोमल हृदय, कार्य कुशल, सन्तान सुख से युक्ता। [स्त्री जातक विज्ञानी]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक हितकारी, स्मरण शक्ति अद्भुत, परिस्थिति भौंपने की क्षमता वाला। पढ़ने-लिखने का शौकीन, साहसी, पारिवारिक जीवन सुखी। [कुण्डली दर्पण]

[जन्म जातक कार्यदक्ष, परितोषी, भीरु, लेखक, समुद्रादिक शास्त्र]

का ज्ञाता, सम्पादक, कवि, सन्ततिवान्, विलासी, अल्प भ्रातृवान्, चंचल, व्यवसायी, यात्राशील, धर्मिन्, मित्रप्रेमी, सद्गुणी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मिणी, पुत्रवती, मानवती, धनवती, थोड़े सहोदर, अपने कर्म करने वाली, दुखी, कूटिल हृदय [स्त्री जातक विज्ञान]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक सफल कूटनीतिज्ञ। बुध उच्च या कारक हो तो जातकराजदूत। बुध नीच हो तो जातक सफल राजनीतिज्ञ। शिक्षा की दृष्टि से उत्तम, भाषण एवं लेखन में प्रवीण, जनता को सम्मोहित करने की शक्ति वाला होता है [कुण्डली दर्पण]

जातक पण्डित, भाग्यवान्, वाहन सुखी, दानी, स्थूल देही, आलसी, गतिप्रिय, उदार, बन्धुप्रेमी, विद्वान्, लेखक, नीतिज्ञ, नीतिवान् [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मरता, प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धनी, सज्जनों से युक्त, अधिक कार्यवाली, रोहिणी, दुर्बल, चंचल, हास्यप्रिया, सहोदर सुख रहित होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, स्त्री के मामले में परम सौभाग्यशाली, स्त्री गुणवान्, समझदार होती है। संतान की तरफ से भी सौभाग्यशाली, कन्या संतान अधिक, जातक हैसमुख, प्रसन्न चित्त, विनोदी, मधुर जीवन, आस्तिक, पवित्र, लज्जालु, सौम्य, सचिव या निरीक्षक हो सकता है। तीक्ष्ण बुद्धि, संघर्षशील, प्रेम के क्षेत्र में सफल होता है।

जातक प्रसन्न, कुशाम्बुद्धि, गण्यमान्य, सुखी, सदाचारी, वाद्यप्रिय, कवि, विद्वान्, उद्यमी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दारिद्री, दुष्ट, कलहप्रिय, पुत्रवती, पति सुखयुक्त, सौंदर्यवती, धनवती, सुखी, गुरुजनों की भक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

६) यदि कुठे भाव में हो तो जातक चिड़चिड़ा, क्रोधी, दूसरों की सलाह पर ध्यान नहीं देता, शिष्टा अपूर्ण, परेशानियों से ग्रस्त, हीन भावना का शिकार, यदि बुध एवं शनि हों तो नौकरी में विश्वासघात, आलसी, निक्कमा, शत्रुओं से भयभीत एवं कायर होता है। [कुण्डली दर्पण]
जातक विवेकी, वादी, कलहप्रिय, आलसी, रोगी, अभिमानि, परिश्रमी, दुर्बल, कामी, स्त्रिप्रिय [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दयालु, शत्रुहन्ता, अल्पायु। बुध शुभ ग्रह से युक्त हो तो रोगी, शत्रु से भया। बुध पाप ग्रह दृष्ट हो तो निरोगी, शत्रुहन्ता। [स्त्री जातक विज्ञान]

७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री के पत्र से सौभाग्यशाली, जातक की स्त्री दूरदर्शी, आभूषणप्रिय, धन की इच्छुक, राजनीति में सफल होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, धार्मिक, अल्पीर्ष, दीर्घायु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, विनम्र, उत्तम आचरण, शास्त्रप्रिय, सुखी, चंचल, रूपवती, गृहकार्य में कुशल, सुन्दर पति। [स्त्री जातक विज्ञान]

बुध

७४

च) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जितेन्द्रिय, सत्यावादी, सुन्दर, शत्रुहन्ता बाल्यावस्था में सिर में चोट जिससे ज्योति भंद पड़ जाती है। अतिथियों का सत्कार करने वाला, सफला यदि बुध अकारक हो कामुक, परस्त्री गमन प्रसंग से मृत्यु प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, लब्ध प्रतिष्ठ, अभिमानी, कृषक, राजमान्य, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायधीश, मन्त्री, धनवान, धर्मार्त्ता [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दुखी, कृतघ्न, नीतिवान, धर्म-रहित, अभिमानी, सत्यवादिनी, दानी, संतुर्मी, अल्पायु, धनहीन, पाप ग्रह से युक्त हो तो [स्त्री जातक विज्ञान]

द) यदि नवम भाव में हो तो जातक चतुर एवं विनम्र, परिणामी, प्रसिद्ध, निरन्तर घात-परिघातों का सामना करने वाला, संकटों में मुस्कुराने वाला होता है। छवें वर्ष से भाग्योदय, पूर्ण सुखभोगी, उत्तम कोटि के वाहन प्राप्त करता है। पारिवारिक जीवन सुखद एवं सफला [कुण्डली दर्पण]

जातक सदाचरी, कवि, गवैया, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, विद्वान, धर्मगुरु, व्यवसायप्रिय, भाग्यवान [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विनयशील, शांत, मिष्ट भाषिणी, कार्यकुशल, कीर्तिमयी, भाग्यवान, धार्मिक, पतिव्रत पुत्र सुख युक्त, धनवती, सुन्दर, सुशील। बुध पाप ग्रह से युक्त हो तो विपरीत फल। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक विनीत, कुशल प्रशासक, निम्न स्तर से उन्नति करते हुए उच्च पद पाने में समर्थ, सफल राजनीतिज्ञ, मौलिक, अच्छी राजनीति, बाल्यावस्था साधारण, साधारण कुल में जन्म पर विचारों व कार्यों के फलस्वरूप विख्यात, ईमानदार, छल-कपट से

दूर, व्यस्तित्व उच्च एवं भव्य होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सत्यावादी, विद्वान्, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार कुशल, कवि, लेखक, न्यायी, भाग्यवान्, राजमान्य, मातृ पितृ भक्त, जीमींदार [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सत्कर्मि, नीतिवान्, विवेकी, पति को मान्य, बहुधन्य, आज्ञाकारी, कार्य कुशल, रूपवती, धनवती, भितभाषी [स्त्री जातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक चतुर, परिस्थिती के अनुकूल कार्य करने वाला, हीन भावना से पीड़ित परंतु साहसी, दृढ़ निश्चयी, परिणामी। नौकरी में अधिक लाभ नहीं, परिणामी। भाईयों से विशेष लाभ नहीं। जातक 'सेल्फ मेड मैन' होता है। उच्चाधिकारियों से विशेष सम्पर्क, जीवन का मध्यकाल सफल, आमदनी के कई स्तोत्र, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन से लाभ। जीवन में सफल होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, योगी, सदाचारी, धनवान्, प्रसिद्ध, विद्वान्, भाषण-श्रिय, ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, विचारवान्, शत्रुनाशक [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो पतिव्रता, बन्धुजन मान्य, धन कालेन देन करे वाली, लाभवित, सुन्दर, हितैषी, श्यामवर्ण, कृश, सन्तान सुख युक्त। [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक विद्वान्, आलसी, अल्पभाषी, शास्त्रज्ञ, लेखक, वेदान्ती, सुन्दर, वकील, धर्मतिमा [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो लडाकू, व्याकुल, गुणहीन, तिरस्कृत, रोगिणी, कुदिल, धनी, दानी, पर पुरुष पे आसक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

गुरु

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा और दृढ़, पीतिमा, विशाल आँखें, उन्नत ललाट, भव्य आकृति होती है। [कुण्डली दर्पण]
जातक ज्योतिषी, दीर्घायु, कर्तव्यपरायण, विद्वान्, कार्यकर्ता, तेजस्वी, स्पष्ट वक्ता, स्वभिमानि, सुन्दर, विनीत, धनी, पुत्रवान्, राज्यमान्य, धर्माली।
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री अत्यंत सुन्दर, सत्यवादी, गंभीर, सुखी, ज्ञेय, पति को अत्यधिक प्रिय होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक नेता, कवि लेखक अथवा सफल धर्मोपदेशक। लेखन से द्रव्योर्जन कर्ता है। जातक सफल वैज्ञानिक, क्षेत्र अधिक, ससुराल से सहायता मिलती है तथा पदी-लिखी पत्नी प्राप्त होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर शरीर, मधुरभाषी, सम्पत्ति व संतानवान्, राज्यमान्य, लोकमान्य, सुकार्यरित, सदाचारी, पुण्यात्मा, भाग्यवान्, शत्रुनाशक दीर्घायु, व्यवसायी स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, धार्मिक, सौभाग्य, नीतिवान्, धनवती, ज्ञेय पति, उत्तम कुटुम्ब, सर्वत्र आदरणीय [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक शुभ लग्नों से सम्पन्न, जीवन में उतार चढ़ाव, संघर्षशील परंतु मजबूत, साहसी, समय की गम्भीरता को भाँप लेने वाला, शिक्षा के क्षेत्र में सफल, एक से अधिक कार्यों में निष्णात तथा मन्त्रीनी कार्यों का शौकीन। यद्यपि शत्रुओं से कई बार

घात खाने पड़ते हैं फिर भी अटूट हिम्मत, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पारिवारिक जीवन भी सुखद होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक जितेन्द्रिय, मन्द्यग्नि, शास्त्रज्ञ, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, ऐश्वर्यमान, कामी, स्त्री प्रिय, व्यवसायी, विदेश प्रिय, पर्यटनशील, वाहन युक्त, स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुशल शरीर, गौरवरहित, पराक्रमहीन, दोषी, कृपण, नीचबुद्धि, भाई-सुख युक्त, पति प्रेमरहित, खर्चीली [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक दार्शनिक, उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है। समाजिक जीवन में ख्याति प्राप्त करने वाला, शत्रुओं में भी प्रशंसनीय, वाहन धन आदि की दृष्टि से सौभाग्यशाली, राजकीय नौकरी में प्रगति राने-राने होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक भोगी, सुन्दर, कार्यरत, उद्योगी, ज्योतिर्विद, सन्तानरक्षक, राजमान्य, लोकमान्य, मातृपितृ भक्त, यशस्वी, व्यवहारज्ञ [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दरी, रूपवती, विद्वान्, गौरवशालिनी, यशस्विनी, धन-धान्य युक्त, प्रसन्नचित्त, कार्य कुशल [स्त्री जातक विज्ञानी]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक तर्क शास्त्र, व्याकरण, हिस्ती, कानून में रुचि रखने वाला होता है। व्यक्त मंत्र-तंत्र, वेद पाठ आदि में भी सिद्ध होता है। पत्नी के मामले में सौभाग्यशाली, जातक की पत्नी सुन्दर, गुणवान्, पतिव्रता होती है। पति-पत्नी में गहरा प्रेम, स्मरणशक्ति, कमलोर पत्र अधिकारियों का प्रिय। जातक सेक्रेटरी, सलाहकार होता है।

सजीव की ओर विशेष ध्यान। उत्तम कोटि के मित्र, जातक गंभीर, धैर्यपूर्वक विपन्न की बात सुनने वाला, सहिष्णु, प्रभावान, परोपकारी, चतुर, धनवान होता है। संतान सुख जेष्ठ तथा उच्च वाहन सुख प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक आस्तिक, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, विद्वान्, सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, कुलज्ज, सदैव धन प्राप्त, सन्ततिवान्, नीतिविशारद [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री निष्पाप, सत्यपथी, यशस्विनी, प्रतिष्ठित, नीति युक्त, व्रतधर्म में दक्ष, सात पुत्र, उत्तम बुद्धि, मधुरभाषी, पुत्रसुख युक्त, पूरा जिवि
जानेनेवली [स्त्री जातक विज्ञान]

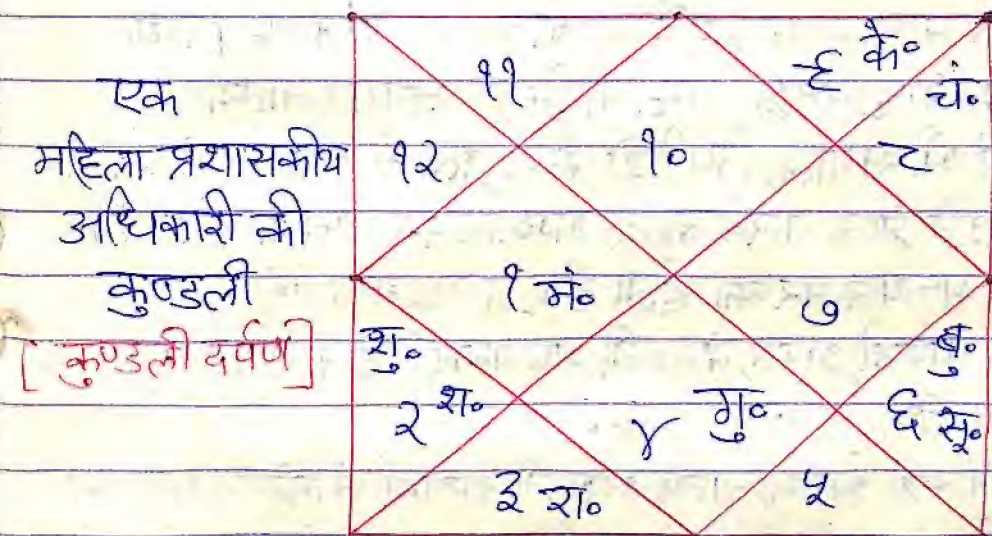
६) यदि छठे भाव में हो तो जातक समाज एवं जाति में अपमानित, निरंतर व्यंग बाणों का शिकार, आलसी, छिद्रान्वेषी, हाथ की सफाई दिखाने वाला, शत्रुओं से भयभीत, अभाम्यशाली, स्वस्थ साधारण स्तर का होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक मधुरभाषी, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, विद्वान्, सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, लोकमान्य, नीरोगी, प्रतापी [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री नीतियुक्त, जेष्ठ, शारीरिक कष्ट व उपचारण वाली विपत्तियों से ग्रस्त, शत्रुरहित, सत्यावादी, सुकीर्ति, घर के कार्य में आलसी। गुरु नीचका हो तो रोगिणी [स्त्री जातक विज्ञान]

७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नि सफल एवं समझदार, मानवीय गुणों से विभूषित ऐसी स्त्री बहु सन्तानवाती होती है। व्यक्ति का स्वस्थ उत्तम रहता है तथा राजा के तुल्य सुख प्राप्त करता है। व्यक्ति मनेट्ट आफिसर, विद्वान्, कलाप्रिय, गुणज्ञ होता है।

गुरु

हैं। नीचे एक शासकीय महिला अधिकारी की कुण्डली है जिसका पति भी उच्च पद पर स्थित है। गुरु उच्च राशि का होकर स्थित है फलस्वरूप सुन्दर एवं कुलीन पति मिला, इस स्त्री की अठारह संतान हुई क्योंकि पंचम भाव का स्वामी शुक्र भी अपनी राशि में है तथा चन्द्र की उच्च शुक्र योग प्रधान ग्रह है परंतु शनि भी शुक्र के साथ पड़ा है तथा लग्नेश की सप्तम भाव पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त शनि द्वितीयेश हो कर मारक बना भी जिसके कारण इस स्त्री की प्रांखों के सामने नौ संतान हुईं। फिर भी गुरु, शुक्र बलवान हैं जिनके कारण संतानाभाव नहीं रहा।



जातक भाग्यवान्, विद्वान्, वक्ता, प्रधान, नम्र, ज्योतिषी, धैर्यवान्, प्रवासी, सुन्दर, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत। [पांचांग दिवाकर]
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री ज्ञानी, गुणवती, शीलवती, कीर्तिमान्, शास्त्रज्ञ, उत्तम पति, पति प्रिया, शिषित, विनम्र, सुखी। [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जीवन में कई तीर्थ यात्राएँ करता है। व्यक्ति चंचल तथा समय का पाबन्द, परंतु तुरंत निर्णय लेने में असमर्थ, स्त्री सुख श्रेष्ठ तथा योगाभ्यास में भी ध्यान देने वाला होता है। जातक दीर्घायु, शीलसम्पन्न, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, मन्यकार, कुलदीपक, ज्योतिषी, लौभी, गुप्तरोगी, सितों द्वारा धननाशक [पांचांग दिवाकर]

गुरु

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विशाल देह, व्यसनी, रोमी, पति के मन में परित्यक्त, चंचल, तीर्थ, धन-वस्त्रादि का अभाव, पुत्र-पति के सुख से वंचित [स्त्री जातक विज्ञान] २०

८) यदि नवम भाव में हो तो अत्यंत शुभ। जातक साधारण कुल में जन्म लेने पर भी उन्नति प्राप्त कर लेता है। व्यक्तित्व अत्यंत भव्य तथा सहज ही लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने में समर्थ। जातक राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल, विपत्तियों से न भ्रता से पेश आने वाला, लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने वाला, गम्भीर स्वभाव का होता है।
[कुण्डली दर्पण]

जातक तपस्वी, भक्त, वेदान्ती, भाग्यवान्, विद्वान्, राजपूज्य, पराक्रमी बुद्धिमान, पुत्रवान्, धर्मन्तर्मा [पाँचाग विवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री कृतघ्न, सत्यो, भक्तिनी, सम्पन्न, संततिवान्, धनी, भाग्य-शालिनी, सौभाग्यवती, उत्तम पति, सुखी, ऐश-आराम सम्पन्न [स्त्री जातक विज्ञान]

९) यदि दशम भाव में हो तो जातक धार्मिक, धर्म जीवन पर हावी रहता है, धार्मिक कार्यों में बढ-चढकर भाग लेता है, विचारों में उज्ज्वलता प्राप्त करता है, व्यापार की अपेक्षा नौकरी में सफल। माता-पिता का आदर करने वाला, प्रसिद्ध, तीर्थयात्राएं खूब तथा सरल जीवन बिताने का इच्छुक रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सत्कर्मी, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यावादी, शत्रुहन्ता, राज्यमान्य, स्वतंत्र विचार, मातृ पितृ भक्त, लाभवान्, धनी, भाग्यवान् [पाँचाग विवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री गुणवती, गुणज, सत्कर्मी, प्रख्यात, पुण्यशीला, दास-
दासियों वाली, धनी, आभूषण युक्त, पति-पुत्र सुख से सम्पन्न, गृहकार्य में कुशल [स्त्रीजातक
विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो अत्यंत शुभ। जातक शान्त, धीर, मन्त्रीर,
कुशल प्रशासक, बाल्यावस्था सानंद, १६वें वर्ष के बाद से भाग्योदय
आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, आय के कई स्तोत्र, सम्पत्ति की ओर सचेष्ट।
जीवन का मध्यकाल संवर्षशील, अकारण ही अनेक शत्रु हो जाते हैं
परंतु ये विपत्तियों से घबराते नहीं। परीक्षामी, लेखन प्रकाशन के क्षेत्र
में प्रसिद्ध, पारिवारिक जीवन सामान्य, भाईयों से विशेष लाभ नहीं,
विचार मौलिक एवं उच्च रहते हैं, जीवन में सफल [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर, नीरोगी, लाभवान, व्यवसायी, धनिक, संतोषी, अल्प संतान,
राजपूज्य, विद्वान, बहुस्त्रीयुक्त, सद्व्ययी, परा कूर्मी [पांचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री नितेन्द्रिय, कीर्तिमती, सम्पन्न, सत्यी, शिल्पकला कुशल,
धर्मिन्मा, सुखी, पति प्रिया, कला को जानने वाली, ऐश्वर्यशाली [स्त्रीजातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक जीवन का लक्ष्य एकलण के
लिए भी आँखों से ओझल नहीं होने देते, निरन्तर निस्वार्थ परिश्रम
करते हैं, वाहन योग प्रबल, शनैः-२ जीवन की सभी आवश्यकताएँ
पूरी हो जाती हैं। आय के एक से अधिक स्तोत्र, व्यय भी अधिक रहता
है, आर्थिक जीवन साधारण, ईमानदार, सदगुणों से अलंकृत ऐसे
जातक सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक आलसी, मितभाषी, सुखी, मितव्ययी, योगाभ्यासी,

गुरु

८२

परोपकारी, उदार, शस्त्रज्ञ, सम्पादक, सदाचारी, लोभी, यात्री, दुष्ट चित्तमान होता है। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रुग्ण, लाभ-रहित, दुष्ट, परधर्मी, कुटिल, बुद्धिहीन, धनहीन, मानहीन, लज्जाहीन, इधर-उधर घूमने वाली। (स्त्रीजातक विज्ञान)

शुक्र

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक सुन्दर, परिवार से स्नेह करने वाला, स्त्रियों पर अनुसक्त, सुन्दर स्त्रियों से संपर्क में रहने का इच्छुक, कोमल, गेहूँ का रंग होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, सुन्दर, ऐश्वर्यावान्, सुखी, मधुरभाषी, प्रवासी, विद्वान्, भोगी, विलासी, कामी, राजप्रिय। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, गोरी, सुशील, गृष्ट, कार्यदक्ष, स्वस्थ, भाग्यवती, धनी, मधुर बोलनेवाली, धन-पुत्रादि युक्त, कला कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक का विस्तृत परिवार, जातक दूसरों से काम निकलवाने में चतुर, द्रव्य का अभाव नहीं रहता। व्यक्ति डॉक्टर, सफल पत्रकार अथवा व्यवसायी होता है। दृढ़ व्यक्तित्व तथा शत्रुओं को अपने वश में रखता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनवान्, मिष्ठान्नभोगी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, सुखी, समयज्ञ, कुटुम्ब युक्त, कवि, दीर्घजीवी, साहसी, भाग्यवान् होता है। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सत्कर्मी, भाग्यवान्, मृदुभाषी, प्रख्यात, आश्रयण सम्पन्न, सुन्दर, विद्वती, कार्य-कुशल, सुखी [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक भाग्यहीन, यद्यपि उसके साथ द्रव्य रहता है परंतु वह उसे भोग नहीं पाता। स्मरणशक्ति प्रबल, साहसी, संगीत, काव्य, चित्रकलादि में प्रवीण। यदि शुक्र नास्ति हो तो सफल

लेखक या चित्रकार। आर्थिक चिंता से परेशान, परिरात्री, जीवन के मध्यकाल में कई बार यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। पारिवारिक जीवन साधारण रहता है तथा सन्तान की ओर से भी विशेष लाभ नहीं रहता। जातक सुखी, धनी, कृपण, आलसी, चित्रकार, पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान, पर्यटनशील (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुष्ट, बन्धु परित्यक्त, दुर्बला, कृपणी, धनहीन, कुटिल, कामी, साधुजनों का अनिष्ट करने वाली (स्त्री जातक विज्ञानी)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो शुभकारी, जातक का जीवन सुखी एवं आनन्दमय, सुन्दर एवं गुणवान पत्नी। जातक मातृभक्त अथवा माता से कई बार स्वभाव मिलता नहीं। मन का गहरा तथा इसके मन की चाह पा लेना आसान नहीं होता। जीवन में राजनीति हावी। मित्रों की कमी नहीं रहती। स्त्रियों एवं प्रेमिकाओं का भी गहरा इस्तफ़ादा। जातक बलवान, परोपकारी, आस्तिक, सुखी, व्यवहारदर्श, विनासी, भाग्यवान, पुत्रवान्, दीर्घायु। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखी, सौभाग्ययुक्त, जितेन्द्रिय, धर्म-कर्म में दक्ष, कुलदीपक, सुशील, सुन्दरी, यानी, भक्तिनी, पतिव्रता (स्त्री जातक विज्ञानी)

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक कल्पनाशील युवक, काव्य प्रतिभा, काव्य, संगीत, नृत्य के माध्यम से द्रव्योपार्जन, कई मित्र, सन्तान सुख जेष्ठ, पाँच से अधिक सन्तान, पुत्रियों की संख्या अधिक, वृद्धावस्था में पूर्ण सन्तान सुख, भोगी, हँसमुख, रंगीला होता है।

जीवन सानन्द बीतता है। राज्य की ओर से पूर्ण सम्मान, धन का धनी, जीवन के प्रत्येक निश्चय को पूरा करता है। शिशु काल में कई व्यापान, यौवन काल में पूर्ण संघर्ष करते दूरे समय को अपने अनुकूल बनाता है।

जातक सुखी, भोगी, सद्गुणी, न्यायवान, आस्तिक, दानी, उदार, (कुण्डली दर्पण)

विद्वान, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक (पाँचांग दिवाकार)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विलासिनी, सुन्दरी, हास्य मुख, धनवती, सुखी,

कुल में श्रेष्ठ, धनी, अधिक संतान, पतिव्रता (स्त्री जातक विज्ञान)

६) यदि छठे भाव में हो तो जातक शत्रु रहित होता है, मित्रों से लाभ पहुँचता है, प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेकर विद्वान, विलासी, चरित्र संश्लेष्य कहा जा सकता है। स्वस्थ एवं सुन्दर स्त्रियों के प्रति आसक्त, स्त्रियों से संबंधित कार्यों में लाभ उठाता है। यदि मीन राशि का शुक्र हो तो व्यक्ति धनी, विद्वान, सम्मान लाभ करता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक स्त्री सुखहीन, बहुमित्रवान, दुराचारी, मूर्खरोगी, वैभवहीन, दुःखी, स्त्रीप्रिय, शत्रुनाशक, मितव्ययी (पाँचांग दिवाकार)

स्त्री की कुण्डली हो तो क्रोधी, ईर्ष्यालु, तीव्र स्वभाव, कलह-कारिणी, पति-पुत्र से परित्यक्त, अनेक शत्रु, कफ-वात रोग, पतिप्रेम से वंचित, शत्रुहन्ता (स्त्री जातक विज्ञान)

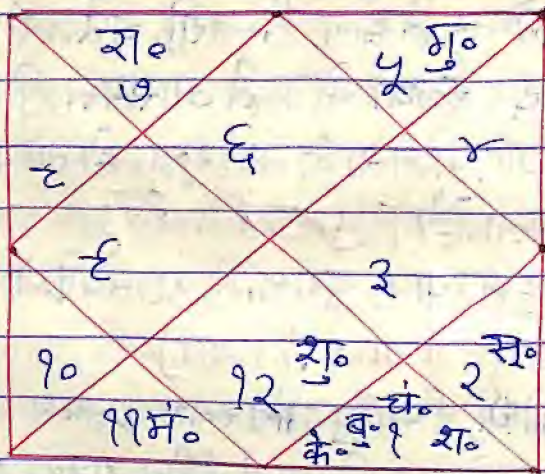
७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक भावुक, कल्पनाशील, सरल हृदय, सुन्दर, गौरवर्ण एवं गुणवान स्त्री, जातक प्रसन्नचित्त, गुणी पुत्रों को जन्म देने में समर्थ होता है। (कुण्डली दर्पण)

आगे एक ऐसे व्यक्ति की कुण्डली है जो बहुत गरीब

शुक्र

८६

था। शिष्टा के क्षेत्र में शून्य था। कठिनता से निर्वाह करता था पर भाग्यवश इसका विवाह लखपति पिता की सुन्दरतम सुशील कन्या से हुआ तथा कई संतानें भी हुई। जातक विवाहोपरांत भी कठिनता से निर्वाह कर रहा है। लग्नेश बुध, आयेश चन्द्र तथा पंचमेश शनि तीनों अष्टम भाव में हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जातक का न तो व्यक्तित्व है, न उच्च कुलीन परिवार, न आय के मजबूत स्रोत हैं। परंतु मीन राशि का शुक्र उच्च होकर केन्द्रस्थ है, जिसने दाम्पत्य जीवन को उच्च बनाया, साथ ही शुक्र भाग्यस्थान का भी स्वामी है एवं धनभण्ड का भी स्वामी है तथा सप्तम भाव में है तो ससुराल से धन प्राप्त हुआ, सुन्दर पत्नि प्राप्त हुई, गह्रा दहेज भी प्राप्त हुआ। मुक्त में उच्च स्तर भी मिला। जातक का विवाह शुक्र की दशा में बुध की अंतर्दशा में सम्पन्न हुआ।



कुण्डली दर्पण

जातक स्त्री से सुखी, उदार, लोकप्रिय, धनिक, लोकप्रिय, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, कामी, अल्पव्यामिचारी, चंचल, विलासी, मानप्रिय, स्त्री की कुण्डली हो तो सर्वमान्य, पतिप्रिया, शास्त्ररता, धनवती, प्रभावी, कला-कुशल, सुंदर, उत्तम पति, रतिप्रिय, आभूषणयुक्त। (स्त्री जातक विज्ञान)

८) यदि अष्टम भाव में हो तो अनुष्य धार्मिक प्रवृत्ति का, राजा की सेवा में तत्पर, नौकरी में सफल, अधिकारियों का प्रिय, सहायक मित्रों एवं संबंधियों का वृद्धावस्था सानन्द तथा शिकार में रुचिल होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक विदेशवासी, निर्दय, रोगी, क्रोधी, ज्योतिषी, मनस्वी, दुखी, मुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत (पाँचाग दिनाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुखी, उद्धत स्वभाव, सुंदर नेत्र, गर्विली, धर्मवती, सुशील, दीर्घायु, धन की चिन्तक, परिजनों से निर्यत (स्त्री जातक विज्ञानी)

९) यदि नवम भाव में हो तो ऐश-आराम से जीवन व्यतीत करता है। २२वें वर्ष से भाग्योदय, बाल्यावस्था सुखद, मध्यकाल में कठोर परिश्रमी, यात्राओं का शौकीन, धार्मिक मामलों में कट्टर पारिवारिक जीवन सफल, उच्च गुणों से सम्पन्न, मध्यकाल में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक आस्तिक, गुणी, गृहसुखी, प्रेम दयलु, तीर्थयात्री, राजप्रिय (पाँचाग दिनाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धार्मिक, धनवती, कला से धनोपार्जन, तीर्थयात्री, सुन्दरी, सुशीला, सौभाग्यवती (स्त्री जातक विज्ञानी)

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक की व्यापार में हानि, नौकरी में उन्नति के अवसर अधिक, धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णु, काव्य संगीत, नाटकादि में गहरी रुचि, मध्यकाल संघर्षशील पर वृद्धावस्था आनन्दमय, प्रसिद्ध, सादा जीवन, उच्च विचार होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक विलासी, ऐश्वर्यवान्, न्यायवान्, ज्योतिषी, विजयी, लोभी, धार्मिक,

मानप्रिय, भाग्यवान्, गुणवान्, दयालु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, बुद्धिमन्, निरोगी, सत्यी, यशस्वी, श्रेष्ठ, सम्मान्य,

पतिप्रिया, संतानकी प्रेम करने वाली, साध्वी, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञानी]

१०) एकादश भाव में हो तो जातक मनमौजी, क्लाय के अनेक स्तोत्र
फिर भी व्यथ बढ़ा चढ़ा रहता है, शिशुण काल में कई व्याधान डालते
हैं। नौकरी में सफल नहीं क्योंकि अधिकारियों के साथ खींचातानी
रहती है। सजाबट पर खर्च करने वाला, तडक-भडक तथा शाज से
रहने वाला, प्रेम के क्षेत्र में अकृणी। जीवन में सफल होते हैं। [कुण्डली
दृष्टा]

जातक विलासी, वाहनसुखी, स्थिरत्वामीवान्, लोकप्रिय, परीपकारी,

जौहरी, धनवान्, गुणज, कामी, पुत्रवान् [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री लाभवती, निर्दोष, शास्त्रों की जानकार, आश्रय युक्त,
सत्कामी, सदैव लाभ प्राप्त करने, दस्यु-प्रिय, नृत्यगीतदि में रुचि, सुंदर [स्त्री जातक
विज्ञानी]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, बाल्यकाल साधारण
जातक का विवाह जल्दी हो जाता है। ससुराल साधारण जेणी का, ससुर
की अपेक्षा साले से अधिक लाभ। संतान सुख श्रेष्ठ। लडकों की संख्या
अधिक। बच्चों के द्वारा जातक का नाम विख्यात होता है। क्लाय के कई
स्तोत्र पर व्यथ भी बढ़ा चढ़ा रहता है। परिवार से विशेष लाभ नहीं,
जातक 'सेल्फ मेड मैन' होता है। बाहरी स्थानों व व्यक्तियों से
जातक का गहरा संबंध होता है। जीवन में मित्रों की संख्या बहुत

अधिका आमोद-प्रमोद, नृंगार आदि पर विशेष व्यथ, धार्मिक क्षेत्रों में
अग्रणी, तीर्थयात्रा का विशेष योग, विद्वान्, कवि, कला प्रिय, प्रतिभाशाली,
विरूधात होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक ज्यायशील, आलसी, पतित, धातुबिमारी, स्थूल परस्त्रीरत,
बहुभोजी, धनवान्, मितव्ययी, शत्रुनाशक [सौभाग्य दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कपटी, दुर्बुद्धि, रोगिणी, कटुभाषी, दुर्बल, दुष्ट,
अधिक व्यथी। बाल्यावस्था में बीमावा [स्त्री जातक विज्ञानी]

शनि

१) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-2 पर पैनी आँखें, लम्बा तगड़ा शरीर, संकरा तथा अंदर खिंचा हुआ सीना, चालाक, कुटील स्वभाव होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनाढ्य, सुखी यदि मकर या तुला का हो अन्य राशियों का हो तो दरिद्री [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरूप, कृष्णवर्ण, क्रोधी, बंधुसुखरहित, दरिद्र, नीच, रोगी। यदि शनि उच्च या स्वप्नेत्री हो तो स्वस्थ, धनवती [स्त्री जातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो शुभ नहीं। शनि अकारक हो तो जातक दुखी, परेशान, धनहीन होता है। धन के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। यदि शनि कारक हो तो बाल्यावस्था दुःखद पर्यावस्था और वृद्धावस्था सफल होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक मुखरोमी, साधु वैष्णवी, मृदुभाषी। कुम्भ या तुला का हो तो धनी, कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी, लाभवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, अपयशी, कृष्णा, घातकी, सुखहीन, लोगों के विरोध में बोलने वाली, प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी, निर्धन। बाद में उद्योग से कुछ धन, सुख [स्त्री जातक विज्ञान]

३) तृतीय भाव में हो तो जातक के छोटे भाई होते नहीं। अगर हों तो भी जातक की उनसे विशेष लाभ नहीं होता। जातक साहसी, वीर, क्रोधी, क्रूर, भयंकर से भयंकर काम करने में भी नहीं हिचकिचाता।

बड़े भाइयों की तरफ से परेशान, संघर्षों में जीता है, कठोर परिश्रमी, शत्रुओं से खिलवाड़ करने में आनन्दित, नियमों का पाबंद। मित्र भी अपने जैसे चुनता है। स्थानीय स्वाशन का मुखिया होता है। [कुण्डली दर्पण]
जातक जीरोमी, योगी, विद्वान, शीघ्र कार्यकर्ता, मल्ल, सभाचतुर, विवेकी, शत्रुद्वेषता, भाग्यवान व चंचल [पाँचाग विवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री ज्ञेष्ट, धन-धान्य सम्पन्न, शस्त्रधरों की आज्ञाय, साधु संतों से प्रशंसित, दम, बुद्धिमान, स्व-धन से तालन पालन, सहोदर हीना [स्त्री जातक विज्ञान]

४) चतुर्थ भाव में होती व्यक्ति बाल्याकाल में अस्वस्थ, भाइयों का जीवन में कोई महत्त्व नहीं। माँ को तृणवत समझ कर जीवन से बाहर कर देता है। जीवन में सदा अप्रसन्न तथा मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है। जीवन में सदा चिन्तित, मानसिक परेशानी के साथ-२ हीन भावना का आधिक्य रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक बलहीन, अपयशी, कुश, शीघ्रकोपी, कपटी, भाग्यवान वातपित्तयुक्त, स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, मतिमन्द, नीचों की संगति, दरिद्र, दुखी, मलिन, आलसी, कलहकारी, वात-पित्त रोगी [स्त्री जातक विज्ञान]

५) पंचम भाव में होती जातक का दिमाग ऊलजलूल विचारों से ग्रस्त, व्यर्थ की बातों में अधिक ध्यान देता है। आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहती है। यदि शनि उच्च का हो तो पैरों में बीमारि लौ देता है। जीवन में निरन्तर उत्थान पतन देखने पड़ते हैं। मित्रों से वाद-विवाद

शनि होतारहता है। ये योजनाएँ बनाने में सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण]
 जातक वातरोगी, भ्रमणशील, विद्वान्, उदासीन, संतानयुक्त, आलसी चक्र
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री निर्दय, गर्वीली, पुत्रहीन, वैश्या जैसी, [प्रायः दिवाकर]
 प्रसिद्ध, अन्तोषी स्वभाव, दुर्बुद्धि, धनहीन, रो शीणी [स्त्री जातक विज्ञानी]

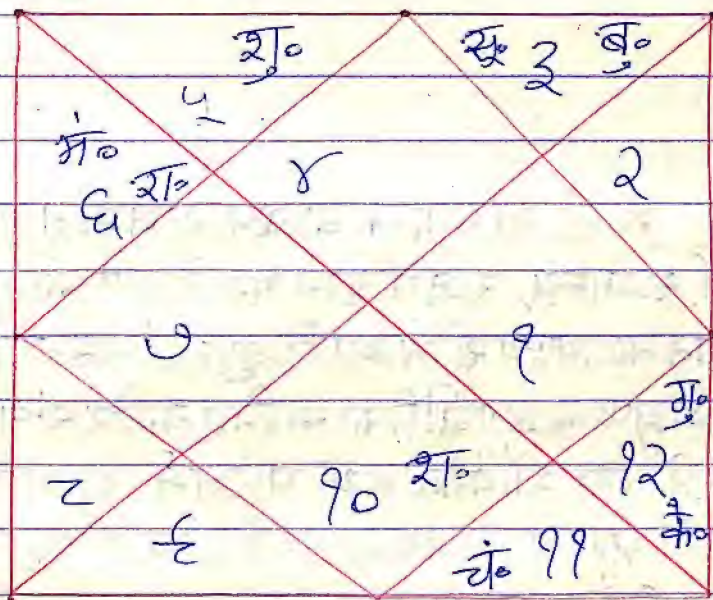
८) यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, लडाकू, भोजन का शौकीन, साहसी होता है। इसके अर्धिन कर्मचारी इससे लाभान्वित नहीं रहते, मित्रों के ओर से इसे धोखा खाना पड़ता है। यदि मंगल शनि हों तो पेट के आपरेशन के दौरान मृत्यु हो जाती है। राहु तथा शनि का संयोग (स्त्री की कुण्डली में) हिस्टीरिया रोग उत्पन्न कर देता है। यदि शनि उच्च का हो तो सम्मान में वृद्धि तथा कुल विस्तार में सहायक होता है। [कुण्डली दर्पण]
 जातक शत्रुहन्ता, भोगी, कवि, कण्ठ-रुवासरोगी, जातिविनोदी, व्रजी, बलवान्, स्त्री की कुण्डली में स्त्री मंदमति परंतु गुणी, आचारहीन [प्रायः दिवाकर], पुत्रवती, धनी, पुत्रोत्तमिय, रोग-शत्रुहीन, पुष्ट, धनवती, गुणवती, गुरुजनों की सेविका, प्रतिष्ठित, संतोषी [स्त्री जातक विज्ञानी]

९) सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री सुख से वंचित। शनि निर्बल हो या अन्य स्थानों पर बैठे शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो स्वल्प पत्नी सुखा जातक कठोर हृदय, उन्नति के मार्ग में तत्पर

शनि

६३

होता है परंतु सुख एकांगी ही कहा जा सकता है। इस कुण्डली में सप्तमभाव में शनि स्वमूही है, अष्टमेश होकर मारक भी हो गया है। इस प्रकार पूर्णबलवान मारक ग्रह होकर सप्तमभाव में बैठने से गृहस्थ जीवन पूर्णतः नष्ट कर दिया है। जाया कारक शुक्र भी दूसरे भाव में बैठकर मारक ही बनता, अतः जाया कारक ग्रह निर्बल रहा। इसके साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। [कुण्डली दर्पण]



जातक क्रोधी, निर्धन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, आलसी, स्त्री भक्त, विलासी, कामी, स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, कपटी, द्वेषी, मध्यपान प्रिय, पति-सुख से हीन, निर्धन, शोक-संतप, निन्दितकर्मी [स्त्री जातक विज्ञान]

यदि अष्टम स्थान में हो तो जातक लम्बी उम्र प्राप्त करता है। घर से दूर रहकर आजीविका प्राप्ति में कष्टरत रहता है। जातक को परिवार से विशेष स्नेह नहीं मिलता। बाल्यावस्था कष्टदायक, पौत्रकाल संघर्षशील। यदि शनि मीन हो तो चोरी का इत्तना लगता

है या झूठा मुकदमा चलता है। गलतफहमियों के कारण इसे बुरा समझ लिया जाता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक कपटी, वाचाल, कुष्ठरोगी, डरपोत, धूर्त, गुफ्तारोगी, विद्वान्, स्थूल, ऊँच स्त्री की कुण्डली में स्त्री अधर्मी, पापी, धोखेबाज, कृश, दुष्ट, क्रोधी, नेत्ररोग, असंतुष्ट, पतिव संतान सुख रहित। [स्त्री जातक विज्ञान]

६) यदि नवम भाव में हो तो जातक वाचाल, राजनीति निपुण, जीवन के प्रारम्भिक वर्ष सामान्य, समर्थ होने पर स्थिती को अनुकूल बना लेता है। जीवन का लक्ष्य सदैव उसकी दृष्टि में रहता है, धैर्यपूर्वक कार्य करता है, शिक्षण व आजीविका के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। यात्राओं का शौकीन तथा परिजामी होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक वातरोगी, भ्रमणशील, वाचाल, कृशदेही, प्रवासी, भौरु, धर्मत्याग, मादसी, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुष्ट, नीच लोगों की संगति, अधिक खर्च करने वाली, ज्ञान व नम्रता रहित, निरादर करने वाली, धनहीन, गर्विता, कपटी, आचारहीन अपने जैसा पति [स्त्री जातक विज्ञान]

७) यदि दशम भाव में हो तो जातक धनवान, नौकरी में प्रगति करने वाला, आजीविका के लिए परिजामी, संगीत आदि में रुचि, मौन-भस्ती करने वाला, भोगी, रहन सहन का प्रदर्शन अधिक रहता है। आनन्दमय स्वर्ण भी आते रहते हैं। माता पिता से विचारों में मतभेद, फलस्वरूप पारिवारिक कलह, कठोर परिजामी, खूब यात्राएं, प्रौढ़ावस्था समूल। जातक नेता, न्यायी, विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्तम कांक्षी, निरुद्योगी, परिजामी, भाग्यवान्, उदरविहार, राजमान्य, धनवान् [पाँचाग दिवाकर]

शनि

६५

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुम्भी, दुष्ट-संगति, व्यसनी, दरिद्र, सुखी, सम्पन्न, रोग-शत्रु रहित, गृहकार्य में कुशल, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक कुशल प्रशासक, उच्च पदस्थ अधिकारी, व्यक्तित्व अत्यंत भव्य, समाज में सम्मानित, आय के कई स्तोत्र, स्थायी आमदन, व्यापारिक क्षेत्र में सफल, परिवार में सम्मानित, ३६वें वर्ष के बाद से पूर्ण भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, क्रोधी, चंचल, शिल्पी, सुखी, योगाभ्यासी, नीतिज्ञ, परिक्रम, व्यवसायी, सिद्धान्त, पुत्रहीन, न्यायज्ञ, रोगहीन, बलवान [पांचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, निर्भय, लक्ष्मी, धनवान, लाभयुक्त, पुत्रवती, सदाचारिणी, सौभाग्यवती, पतिव्रता, धनी, सुखी [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक अत्यंत धनवान, प्रख्यात, बचपन साधारण, समाज तथा मित्रों में लोकप्रिय, यात्राओं का शौकीन, शिक्षा की दृष्टि से साधारण, नौकरी में प्रगति धीरे-धीरे, स्वतंत्र व्यवसाय में जातक सफल, जीवन में उतार चढ़ाव अत्यधिक मित्र तथा प्रशंसक होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक अपत्ययी, ऊमदरोगी, व्यर्थ व्ययी, व्यसनी, दुष्ट, कुटुम्बी, अविश्वासी, मातुलकष्ट, आलसी [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो रक्तवातक दोषी, व्यसनी, अविचारिणी, तिरस्कृत, निर्दय, आलसी, नीच संगति, रोगी, कलह-कारिणी, धनहीन, फिजूल खर्ची करने वाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

21/11/2019

राह

१) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-श पर पैनी आँखें, लम्बा तगड़ा शरीर, सँकरा तथा अन्दर खींचा हुआ सीना, चालाक एवं कुटील स्वभाव। [कुण्डली दर्पण]

जातक दुष्ट, मस्तक रोगी, स्वाधी, राजद्वेषी, नीचकर्म, ममस्वी, दुर्बल, अल्पसंतान, स्त्री की कुण्डली में स्त्री के लालनेत्र, चंचल, नीच, गुरुजनो की अनादर करने वाली, पापी, रोगी [स्त्री जातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक रोगी और चिड़चिड़ा, पारिवारिक जीवन में कई व्याधान, आर्थिक दृष्टि से डोंवाडोल, बाल्यावस्था में द्रव्याभाव से पीड़ित, ज्यों-२ उम्र बढ़ती है अर्थ संचय होता रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक परदेशगामी, अल्पसंतान, अल्प कुटुम्बमुख, कष्टभाषी, अल्पकृत संग्रहशील, स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, कामी, ज्यादा बोलने वाली, ऊँची (पाँचग दिवाकर) इधर-उधर घूमने वाली, प्यारे घर में रहने वाली, चोरनी [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक अत्यंत प्रभावशाली, पराक्रमी, ताकतवर, जान पहचान विस्तृत क्षेत्र में होती है तथा अपने प्रभाव से लोगों को अपने पक्ष में कर लेता है। सुन्दर दृढ़ शरीर, माँसल मुँहाड़े, उन्नत वनस्थल, सामर्थ्य युक्त व्यक्ति होता है। प्रारम्भ में

संकर पर शीघ्र ही मन लायक पद प्राप्त हो जाता है। उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। जातक पुलिस या मिलिटरी में सफल। छोटे भाईयों से लाभ नहीं होता, दूध, मौलिक सिंघारों से युक्त होता है।
जातक योगाभ्यासी, भ्रमणशील, दृढ़, अहिंसाशून्य, प्रवासी, बलवान, विद्वान, व्यवसायी। (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री छोटे भाई रहित, वाद विवाद में विजयी, उत्तम सन्तान, जेष्ठ पति, धनवती, कीर्तिमति, सुखों से सम्पन्न। (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यह चतुर्थ भाव में हो तो जातक व्यवहार कुशल नहीं होता। बोलने में असमर्थ तथा इसी कारण कई कार्य बिगाड़ लेता है। घोखेबाज, समय पड़ने पर बड़े से बड़े झूठ बोल लेता है। राजनीति क्षेत्र में सफल, पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक होती है।
जातक असन्तोषी, कुखी, मातृम्लेश, क्रूर, कपटी, उदर विकार, मिथ्यावारी।
अल्पभावी। (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री पितृ कुल से दूर, सुख, बंधु सुखहीन, अधम पति, सन्तान, नीचों की संगति करने, दुष्ट, दुर्गन्धवीर। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो नुकसानदायक मित्रों का अभाव, शत्रुओं से प्रतिपादित, सन्तान दुःख, गृह कलह से चिन्तित जातक क्रोधी, हृदय का रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक उदर रोगी, वृत्तिमन्द, धनहीन, कुलनाशक, भाग्यवान्, कार्यसता।
स्त्री की कुण्डली में राहु चन्द्र से दृष्ट, युग्म न हो तो एक पुत्र अन्याय सन्तान हीन, कुलीन, कुबुद्धि। (स्त्री जातक विज्ञान)

६) षड् भाव में हो तो जातक की कठिनाइयों को सुगम कर देता है। शत्रुओं में सम्मानित, शत्रु संहारक, बलवान होती है। जातक का धन लाभ तथा आयु भी ज्येष्ठ। पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त करता है। शत्रु षड्यंत्र करते हैं। अस्थिर मस्तिष्क, मानसिक रूप से परेशान। यदि राहु उच्च राशि का हो तो निश्चय ही परस्त्रीगमन होता है। जातक मृत्तृन्द्रिय के रोग से पीड़ित होता है। ये दो प्रकार का जीवन जीते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक को विधर्मियों द्वारा लाभ, नीरोगी, शत्रुघ्ना, कमरदर्द, अहिष्णुता, पराक्रमी, बड़े-२ कार्य करने वाला (पाँचाग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री शत्रु व शंका रहित, धनवती, उत्तम बुद्धि, समस्त कार्यों में कुशल। [स्त्री जातक विज्ञान]

७) सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी रोगिणी होती है तथा धन हानि कराती रहती है। स्त्री दुर्बुद्धि, संकीर्ण हो सकती है। यदि कोई सौम्य ग्रह सप्तम भाव को न देखे तो स्त्री विलासी, आभूषणप्रिय होती है। जातक भाग्यहीन होता है। बचपन में कठोर परिजनों व सदगुणों को साथ लेकर चलने से भी निश्चय बाधाएँ आती रहती हैं। जातक स्वस्थ, सुन्दर, साहसी, ईश्वरभीरु होता है। [कुण्डली दर्पण]
जातक स्त्रीनाशक व्यापार में दास, भ्रमणशील, वातरोगी, दुष्कर्म, चतुर, लोभी, दुराचारी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विधवा या अधम पति वाली, क्रोधी, कुत्स, चरित्र-
हीन, मध्यम भाग्य [स्त्री जातक विज्ञान]

च) अष्टम भाग्य में होते जातक दीर्घायु, कवि, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, फिल्म
डिस्ट्रीब्यूटर। धर्म कर्म को समझते हूरे उसकी ओर आंशिक अनुरक्ति,
बचपन में परेशान, जलघात या वृत्तपात दोनों ही संभव। मृदुस्थ जीवन
सुखदा। भाग्योदयर २६ वर्ष से। उम्र ७० से ज्यादा (कुण्डली ५, १०)
जातक पुष्टदेही, गुप्तरोगी, क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी (पाँचवां
स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुर्बल, रोगी, पापी, धनवती, चोट करने वाली धनवती
(स्त्री जातक विज्ञान)

द) नवम भाग्य में होते भाग्यवर्धक, अपने अधिकार प्राप्ति के लिए सचेत,

अधिकारियों के आदेश से कठोरता से पालन करता है, गृहस्थ जीवन सफल
 जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परित्यागी, तीक्ष्ण चिन्तक, भाव्य हृदय धर्मात्मा
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री कुलाचार से विपरीत, शत्रु व शत्रु से पीड़ित,
 भस्मिन्, भाइयों का उपचार करने वाली। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) दुश्म भाव में हो तो जातक राजनीतिज्ञ। नौकरी में सफल, अफसर
 इनसे प्रसन्न, जीवन का अन्तिम काल स्वर्गवता। [कुण्डली दर्पण]

जातक आत्मसी, वाचाल, अस्मिन् प्रसन्न कार्यकर्ता, मितव्ययी, संतानवन्तः,
 चन्द्र युक्त होने पर राजयोगी। [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, दृढी, सुखरहित, वासना युक्त,
 पसये धन को ठगने वाली। [स्त्री जातक विज्ञान]

११) एनायश भाव में हो तो जातक प्रतिभा सम्पन्न, राजनीति पटु, जीवन के

ध्येय तथा अधूरा कार्य को कभी नहीं छोड़ता। परिवार तथा जातिवत्ते
उन्नति में सहायक नहीं, सभी आवश्यकताएँ पूरी, शान-शौकत से जीवन
बिताने की इच्छा, व्यथ के मामले में सावधान [कुण्डली दर्पण]

जातक मन्दमति, लौभहीन, परिश्रमी, उत्पसंतान, उरिष्टनाशक, व्यथसाय,
कदाचित् लाभदायक व कार्य सफल करने वाला। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, सदाचारिणी, सत्यवादिनी, धन-वस्त्रसम्पन्न,
सबकार्यों में सम्पन्न, सुख भोगने वाली [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) ह्रायश भाव में हो तो जातक प्रबल रूपेण शत्रुसंहारक, मित्रवर्धक, स्वयं
जीवन में उन्नति करते हैं, बाल्यावस्था साधारण, पिता से सुख नहीं, पत्नी
सुख प्रौढावस्था में कम। आय के अनेक स्तोत्र, व्यथ अधिक, आर्थिक
स्थिति साधारण, मित्र व प्रशंसकों का अभाव नहीं। सूझ-बूझ रखने
वाले, न्यायशील, चतुर, कार्य-प्रवीण, ईश्वर में श्रद्धा [कुण्डली दर्पण]
जातक विवेकहीन, मूर्ख, परिश्रमी, सेवक, व्यथी, शिंताशील, कामी [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, धर्महीन, मतिमन्द, दूसरों की बात पर
चलने वाली, पति सुख रहित, फिजूल खर्ची होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

केतु

१) प्रथम भाव में हो तो सुखापन, चेहरे पर रसिमा, साहसी, स्वस्थ, भव्य आकृति, धोखेबाज, स्वार्थी, सिद्धांतों पर दृढ़। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, भीरु, दुराचारी, मूर्ख। वृश्चिक का हो तो राहु सुखकारक, धनी, परिश्रमी। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, पति को कष्ट देने वाली। केतु शुभ गृह से दृष्ट या युक्त हो तो पति-पुत्रादि सुख सम्पन्न। [स्त्री जातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक कटुभाषी, समय पड़ने पर धोखा भी देता है। जातक दृढ़निश्चयी, पैतृक धन कम, भुजबल से ही धन कमाकर संचय करता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष की अपेक्षा आगे चलकर धनी। सूर्य एकादश भाव में उच्च का हो तो लखपति। [कुण्डली दर्पण]

जातक राजमीर, विरोधी, मुखरोमी [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बन्धुविरोधी, धनहीन, केतु शुभ गृह युक्त या दृष्ट हो तो धनी, कुटुम्ब सुखयुक्त। [स्त्री जातक विज्ञान]

३) तृतीय भाव में हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़, नित्य नवीन व्यूह रचने वाला, प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से करने वाला, जाता शक्ति नहीं बैठता, प्रत्येक से झगड़ा मेल लेता है। शत्रुहन्ता। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पैतृक धन कम, समाज में प्रतिष्ठित। पारिवारिक जीवन विशेष सुखी नहीं कहा जा सकता। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वातरोगी, व्यर्थवादी, भूतप्रेतभक्त (पाँचवा दिनांक)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, सुखी संतान, शत्रुहन्ता, छोटे भाई रहित [स्त्री जातक विज्ञान]

४) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, हीनभावना से ग्रस्त, माता पिता के साथ सम्बन्ध उचित, जातक पूर्ण मातृभक्त। परिवार में अशांति। जीवन में धन का अभाव होने पर भी रुचातिलाभ करने में समर्थ। जीवन के अंतिम वर्ष असफल व कष्टदायक [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वांचाल, कार्यहीन, निरुत्साही निरुपयोगी (पाँचवा दिनांक)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री मातृ सुख विहीन, युवावस्था में कष्ट, पिता का उच्च भित्त धन नष्ट। [स्त्री जातक विज्ञान]

५) पंचम भाव में हो तो जातक दरिद्र, संतान सुख नगण्य, जीविका के लिए कठोर संघर्ष। पेट सम्बंधी बीमारियाँ तथा आप्रवेशना वातरोग से पीड़ित। सहोदरों व बंधवों से परेशान। भाई धोखा दे सकते हैं। शिष्टा का उभाव उम्र भर सटकता है। भावनाओं में बुरी भूत होकर गलत कार्य कर बैठता है जिससे परेशान। मुक्कदमैबानी, सट्टा, अनगलित कार्यों में फिबूल खर्च। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध ज्यादा सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कुबुद्धि, कुचाली, वातरोगी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री थोड़े पुत्रवाली, गृह कार्य कुशल, मलिन बुद्धि, समडालू, भाई को कष्ट देने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

केतु

१०६

६) षष्ठ भाव में हो तो जातक हठी, लफ्फात्मक पहुँचने वाला, मुँह पर स्पष्ट शब्दों में खरी कदना स्वभाव, चरित्र संदिग्ध। ननिहाल से विशेष लक्ष्म नहीं। जातक शत्रुहन्ता, सुख भोगने वाला, स्वस्थ, सुंदर, प्रसिद्ध। (कुण्डली दर्पण)
जातक वात विकारी, झगडालू, भूत-प्रेतजनित रोग, मितल्यही, अमिष्ट, निवाक, सुखी (पाँचारा दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रु-रोगरहित, मलिन हृदय, धनकी, भूमि पर आदि से सम्पन्न। (स्त्री जातक विज्ञानी)

७) सप्तम भाव में हो तो जातक का निर्धन ससुराल, स्त्री की ओर से विंता, यदि वृष लग्न हो तो जातक को ससुराल से सहायता। जातक सेल्समैन, जीवन में कई यात्राएँ, आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी। जातक को जलाघात या वृत्तपात की आशंका, पैरों में कमजोरी। जातक परिश्रमी परन्तु आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक हिम्मत, साहसी, प्रतिभावान होने के कारण स्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक भक्तिमन्द, भूख, शत्रुभीरु, सुखहीन। (पाँचारा दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को पीड़ा देने वाली, धननाशी। सदैव व्यग्र, शत्रु-भयभीत। (स्त्री जातक विज्ञानी)

८) अष्टम भाव में हो तो जातक को युवावस्था में बवासीर या जीवन में सवारी से गिरकर चोट। आर्थिक दृष्टि से सामान्य। कई बार लारवी या अकस्मिक धन भी प्राप्त हो जाता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दुर्बुद्धि, तेज हीन, दुष्टजनसे बी, स्त्री द्वेषी, चालाक [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनवाहन युक्त, परंतु पति को नष्ट। स्त्री के गुप्तांग में भी रोग। [स्त्री जातक विज्ञान]

९) नवम भाव में हो तो जातक निश्चय ही राजनीतिज्ञ तथा सफल जीवन के मध्य में प्रख्यात। जातक विपरीत परिस्थितियों में ही उभरता है। जीवन में उत्थान-पथन फिर भी जातक लक्ष्य च्युत नहीं होता। अनेक यात्राएं, राष्ट्रहन्ता [कुण्डली दर्पण]

जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थ परीक्षणी, अपयशी। [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री उत्तम पुत्रवाली, शत्रु व रोग रहित, सत्त्वमी, नीच लोगों से धन लाभ। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) दशम भाव में हो तो जातक संघर्षी, संयमी, नौकरी में प्रगति नहीं, न ही मातृ सुख प्राप्त व्यापार में सफल, बाल्याकाल में कष्ट, उत्तरार्द्ध में ख्याति जातक विद्वान, विचारक, नीतिवान। (कुण्डली दर्पण)

जातक पितृद्वेषी, दुर्भागि, मूर्ख, व्यर्थ परिश्रम, अपथी, उद्विग्न। (पाँचम दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुखी, पिता सुख से वंछित। केतुकन्या का हो तो धन-धान्य सुख सम्पन्न। (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक अच्छी स्थिति में, नौकरी में विशेष प्रगति नहीं, फिर भी प्रायः के अनेक स्तोत्र। २१ वें वर्ष से आर्थिक स्थिति शुभ, जीवन में अनेक उताव-चढ़ाव, कभी-२ दोखा भी खाना पड़ता है। जातक चतुर, समय को पहचानने वाला। (कुण्डली दर्पण)

जातक बुद्धिहीन, निज का दुरिकर्ता, वातरोगी, अविष्टकारक। (पाँचम दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री सबकार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली, प्रियवाक्, शास्त्र, निपुण, सुन्दर वेष वाली, सोभाग्यवती। (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) हादरा भाव में हो तो जातक पूर्णतः संघर्षशील, जीवन में निरंतर उत्थान-पथन, जातक दुष्टता से कठिनाइयों का सामना करता है। प्रायः स्वतंत्र व्यवसाय या लेखन से। ऐसा जातक सफल, प्राथमिक स्थिति सुदृढ़, जातक ईश्वरभीरु, समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं।
 जातक चंचल, धूर्त, ठग, अविश्वासी, तंत्र विद्या से छगने वाला।
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को कष्ट देने वाली, शत्रु हन्ता, व्यर्थ खर्च करने वाली, पाँव तथा नेत्र रोगी।
 (स्त्री जातक विज्ञानी)

१) धन किस दिशा से प्राप्त होगा

इसे जानने से पहले नीचे ग्रह और राशि की दिशा स्पष्ट की जा रही है:-

सूर्य	पूर्व दिशा
चन्द्र	वायव्य दिशा
मङ्गल	दक्षिण दिशा
बुध	उत्तर दिशा
गुरु	ईशान्य दिशा
शुक्र	अर्धनक्षत्र
शनि	पश्चिम दिशा
राहु	नैऋत्य नक्षत्र
केतु	नैऋत्य दिशा

मेष	पूर्व
वृष	दक्षिण
मिथुन	पश्चिम
कर्क	उत्तर
सिंह	पूर्व
कन्या	दक्षिण
तुला	पश्चिम
वृश्चिक	उत्तर
धनु	पूर्व
मकर	दक्षिण
कुम्भ	पश्चिम
मीन	उत्तर

धनेत्रा जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की दिशा में विशेष अर्थ लाभ। यदि उस राशि में कोई ग्रह बैठा हो तो उसी ग्रह की दिशा में

की दशा में सम्बन्धित दिशा से अर्थ लाभ। [कुण्डली दर्पण]

२) मिरा समय भाग्योदय होगा

जीवन का एक सर्वोच्च समय होता है। वह समय कब आएगा देखने की विधि नीचे है:-

प्रत्येक ग्रह के मूलांश नीचे हैं:-

सूर्य-७

शुक्र-५

चन्द्र-३

शनि-१

मंगल-१०

राहु-०

बुध-६

केतु-०

गुरु-८

इस विधि का प्रयोग निम्न है।

(१) द्वितीय भाव में राशि का अंक

(२) लग्न में राशि अंक

(३) चतुर्थ में राशि अंक

(४) नवम, एकादश भाव के राशि अंकों को जोड़कर (यदि कोई ग्रह इन भावों में हो तो उसके मूलांश भी जोड़ें, १२ से भाग दें जो बचे उसे धनेश स्थित राशि से गिनें, जो राशि आवे उस राशि के स्वामी की दशा में पूर्ण भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

३) कुछ विशेष योग

१) अकस्मात् धन प्राप्ति योग, यदि शनि द्वितीयेश होकर ४, ८, १२ वें भाव में हो तो तथा बुध सप्तम भाव में स्वगृही हो तो अकस्मात् धन प्राप्ति योग। बुध की महादशा, शनि की अन्तर्दशा आने पर पूरा लाभ।

२) अकस्मात् धन नाश योग, यदि चन्द्र स्वगृही, द्वितीयेश, अष्टम भाव में राशि तो परस्पर महादशा-अन्तर्दशा में धन नाश।

३) पैतृक धन नाश योग यदि धन भाव का स्वामी बुध गुरु के साथ हो तथा गुरु अष्टम भाव में हो तो जातक पिता का धन नाश करता है।

४) धन नाश योग, यदि द्वितीयेश सूर्य लग्न में शनि के साथ हो तो जातक बुद्धिमेवानी में धन नाश करता है।

५) अचल सम्पत्ति नाश योग, यदि धनेश बुध के घर का होकर उसके साथ दूसरे भाव में हो, मंगल चौथे भाव में हो तो अचल सम्पत्ति नाश।

६) धन संग्राहक योग, यदि धन भाव का स्वामी मंगल एकादश भाव में पडकर दूसरे घर को देख रहा हो तो जातक धन संग्रह योग।

७) धन-असंग्राहक योग, धन भाव का स्वामी गुरु स्वर्गही होकर धन राशि में हो, शुक्र द्वादश भाव में हो तो धन असंग्राहक योग।

८) धन वृद्धि योग, द्वितीयेश गुरु उच्च होकर नवम भाव में हो तो धन वृद्धि योग। जातक स्वयं भी धन संग्रह करता है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त।

९) कोषवृद्धि योग, धनेश सूर्य हो, लग्न में उच्च का गुरु हो तो जातक लक्ष्मिपति।

१०) लक्ष्मी योग, लग्नेश बलवान हो, नवम भाव का स्वामी स्वर्गही हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

११) धन योग, लग्न से पाँचवी राशि शुक्र की हो, शुक्र शनि पाँचवे या ग्याह्रवें भाव में हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

१२) जी योग, लग्न से पाँचवी राशि मिथुन या कन्या हो, एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो तो जी योग। जातक विशेष धनवान।

द्वितीय भाव

११३

१३) कमला योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि मकर या कुम्भ हो, बुध व मंगल ११वें भाव में हों तो जातक धनी

१४) वित्त योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि सिंह हो, सूर्य उसमें स्थित हो, चन्द्र-गुरु ११वें भाव में हों तो वित्त योग अर्थात् जातक लखपति।

१५) श्लेखंड धन योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि धनु या मीन, ११वें भाव में चन्द्र-मंगल हों तो जातक लखपति

१) भ्रातृ संबंधी योग

- १) ३, ६, ११, ७ ये चारों भाव भ्रातृकारक हैं। अतः इन स्वामियों की दशा में जातक को भ्रातृ लाभ।
- २) तीसरे स्थान का स्वामी, स्थित ग्रह, देखने वाले ग्रहों में जो बलवान हो उसकी दशा में भ्रातृ लाभ।
- ३) बलहीन मंगल तृतीय भाव में हो तो जातक का दीर्घायु भाई।
- ४) च तृतीय भाव पति निर्बल, पाप ग्रह, प्रकारक हो तो भाइयों का नाश।
- ५) तृतीयेश व मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक के सामने भाई की मृत्यु।
- ६) ~~म~~ मंगल की स्थिति से भाइयों का विचार करें।
- ७) राहु या केतु तीसरे भाव में हो तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु।
- ८) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पापयुक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय व चतुर्थ भाव के कारक से भी युक्त हो तो सौ तेली माँ से उत्पन्न भाई।
- ९) तृतीय भाव पापयुक्त हो तो जातक का भाई अल्पायु।
- १०) सूर्य पाप ग्रह युक्त तृतीय भाव में हो तो बड़े भाई की मौत।
- ११) मंगल पाप ग्रह युक्त होकर तृतीय भाव में हो तो जातक के सभी भाई मृत।

१२) तृतीय भाव से त्रिकोण या केन्द्र में पाप ग्रह हो तो भाई का नाश, शुभ ग्रह हो तो भ्रातृवृद्धि

१३) चतुर्थेश व तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हो तो जातक को पूर्ण भ्रातृ सुख
[कुण्डली दर्पण]

२) मातृ संबंधी विचार

१४) चन्द्र ६, ७, १२ वें भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्याकाल में। [कुण्डली दर्पण]

३) भ्रातृ संबंधी योग

१५) तीसरे शनि भाई का नाश, सिंतु केतु वृद्धि करने वाला होता है।

१६) तृतीयेश पाप युक्त सप्तम भाव में हो तो जातक का लघु भ्राता नहीं।

१७) लग्न, द्वितीय, तृतीय भाव में जितने ग्रह या जितनों की दृष्टि उतने भाई, बहिन।

१८) द्वितीय, तृतीय भाव में कुल जितने ग्रह होते हैं उतने भाई।

१९) शुभ ग्रह तृतीय भाव में सुख, पाप ग्रह दुख देने वाला (भ्रातृ सुख-दुख)

२०) तृतीयेश व भौम स्त्री ग्रह की राशि में हों तो जातक के बहन होती हैं, यही दोनों ग्रह भाई-बहिन को सुख देते हैं।

२१) तृतीय भाव में चन्द्र, शुक्र हो तो जातक की बहन होती है।

२२) भ्रातृकारक, सहज का स्वामी, तृतीय भाव से सम्बन्धित ग्रह अपनी दशा में शुभ फल देते हैं।

तृतीय भाव

११५

२३) नवम भाव से भाई की स्त्री की फल (तृतीय भाव से सप्तम)

२४) लग्नेश, भौम, तृतीयेश से भाई के सुख दुख का विचार।

२५) लग्नेश व तृतीयेश यदि एकत्र हों तो भाईयों में प्रेम, यदि अपने भावों में लग्न व तृतीय भाव हों तो भाईयों में विरोध।

२६) कारक, सहजेश, सहजदर्शी, सहजस्थ ग्रहों को योग करने पर जितने नतांदा हों जातक के उतने भाई। [कुण्डली दर्पण]

४) भ्रातृ अरिष्ट योग

१) यदि लग्नेश, सहजेश निर्बल तथा परस्पर शत्रु ग्रह हों अथवा तृतीय भाव का कारक दुष्ट स्थान में निर्बल हो तो भाईयों में परस्पर कलह।

२) तीसरे भाव में शुक्र हो, उसे गुरु देखता हो जातक भाईयों का पालक।

३) तृतीयस्त बुध को सूर्य देखता हो तो भाई अशक्त।

४) भ्रातृ भावस्त, भावेश, कारक यदि नीच, शत्रु राशि में हों तो उनकी दशा अंतर्दशा में भाईयों का अरिष्ट। [कुण्डली दर्पण]

५) पराक्रम योग

१) तृतीयेश उच्च होकर अष्टम में हो तथा पाप ग्रह के साथ हो तो जातक युद्धोन्मत्त।

२) तृतीयेश क्लृप्त तथा तृतीयेश शुभ ग्रह से युक्त, दुष्ट तो जातक मिलटीरी में होता है।

तृतीय भाव

११७

3) तृतीयेश सूर्य के साथ हो तो वीर। चन्द्र के साथ हो तो धैर्यवान,
मुनी। भौम के साथ हो तो दुष्ट, जड, स्नेही। बुध के साथ हो तो सात्विक
बुद्धि। गुरु के साथ हो तो धीर, गुणयुक्त, शक्ति। शुक्र के साथ हो तो
कामी व भोगी। शनि के साथ हो तो मूर्ख, राहु के साथ हो ~~हो~~ तो
~~हो~~ इरष के साथ हो तो हृदय रोगी।

१) लग्न में गुरु, तृतीयेश से युक्त हो तो पशु का शिकार में झोटा।

५) जलचर लम्बे में गुरु, तीसरे भाव के स्वामी के साथ होता जातक की मौत जल में डूबकर।

चा मंगल युक्त ग्रह बली हो तो जात्म पराब्रमी।

✓) मंगल, तृतीयेश, तृतीयस्थ तीनों ग्रह बलवान हो तो जातक सेनाधिकारी
[कुण्डली दर्पण]

६) कुछ विशेष योग

१) बन्धू पूज्ययोग चौथे भाव या चतुर्दश को गुरु देखे तो जात्म भाईयों व कुटुम्ब में आदरणीय।

2) रवि योग दशम भाव में सूर्य हो, दशमेश शनियुक्त तीसरे भाव में हो तो रवि योग। जातक नौकरी में उच्च पदासीन, वैज्ञानिक। जीवने के 90वें साल के बाद प्रसिद्ध।

2) चन्द्र योग, समस्त ग्रह यदि ३, ५, ७, ९, ११ वें भाव में हो तो जात्मक भूमिपति, नौवारी में आज्ञा चलती है, पार्थिक दृष्टि से सम्पन्न

४) भ्रातृ मूल धन प्राप्ति योग लग्नेश व द्वितीयेश तीसरे भाव में हों तो जातक को भाईयों से पूर्ण सहायता।

तृतीय भाव

११२

प्र) भ्रातृवर्धन योग \Rightarrow तृतीयेश या मंगल या तीसरा भाव कारक ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो तो भाईयों का पूर्ण सुख।

ध) सहोदरनाश योग \Rightarrow तृतीयेश व मंगल आठवें भाव में हों तो जातक को भाइयों से लाभ नहीं तथा आँखों के सामने समस्त भाई मृत।

ज) इकभगिनी योग \Rightarrow बुध, मंगल, तृतीयेश तीनों तृतीयस्त हों तो जातक की एक बहिन।

च) द्वादश सहोदर योग \Rightarrow तृतीयेश केन्द्र में हो, मंगल व गुरु त्रिकोण में बैठकर इनमें से कोई तृतीयेश को देखता हो तो जातक के बारह भाई-बहिन।

छ) सप्त संख्य सहोदर योग \Rightarrow द्वादशेश व भौम साथ में हों, चन्द्र-गुरु तृतीय भाव में शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो भाईयों से लाभ।

१०) पराक्रम योग तृतीयेश कारक ग्रह के साथ हो तथा सूर्य उच्च या स्वराशिगत हो तो पराक्रम योग। जातक सैनिक, युद्ध में पूर्ण विजय।

११) युद्ध प्रवीण योग मंगल, कुण्डली व नवांश दोनों में स्व या उच्च राशिगत हो तो जातक युद्ध में प्रवीण।

१२) संहारक योग तीसरे भाव में मंगल, राहु या शनि बलवान होकर बैठे हों तो चाहे कुण्डली में अन्य अनिष्ट कारक योग नष्ट हो जाते हैं।
(कुण्डली दर्पण)

१) वाहन योग

वाहन कारक - शुक्र

वाहन भाव - चतुर्थ भाव

- १) चतुर्थेश बली हो तो वाहन सुख अच्छा।
- २) चौथा भाव अच्छे अंशों से युक्त हो तो भी वाहन सुख अच्छा।
- ३) चतुर्थेश वाहन भाव बुध के साथ हो तो साधारण वाहन योग।
- ४) चन्द्र लग्नेश होकर चतुर्थेश के साथ बैठा हो तो जातक को वाहन-सुख प्राप्ति।
- ५) दूसरे या चौथे भाव में शुभ राशि का चन्द्र हो तो साधारण वाहन-सुख।
- ६) चतुर्थेश चन्द्र के साथ लग्न में हो तो वाहन सुख मिलता है।
- ७) चतुर्थेश शुक्र के साथ लग्न में हो तो उच्च कोटि की वाहन प्राप्ति।
- ८) बलवान शुक्र और चन्द्र त्रिकोण या केन्द्र में हो तो उच्च वाहन योग।
- ९) चन्द्र यदि गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन प्राप्ति।
- १०) शुक्र, चन्द्र और चतुर्थेश लग्नेश के साथ हो तो उच्च वाहन योग।
- ११) गुरु चतुर्थेश, चन्द्र और शुक्र एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उच्च वाहन प्राप्ति योग।

१२) चतुर्थेश गुरु के साथ या गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन योग।

१३) चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ दशम भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

१४) चतुर्थेश केन्द्र में हो और उसके केन्द्र का स्वामी लग्न में हो तो जातक को उच्च वाहन प्राप्त।

१५) दशम भाव का स्वामी एकादश भाव में हो और द्वितीयेश दसवें भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

१६) चतुर्थेश, नवमेश, लग्न में हों या सप्तम भाव में हों तो उच्च वाहन

१७) चतुर्थेश चन्द्र और शुक्र के साथ एकादश भाव में हों तो उच्च वाहन

१८) लग्नेश और सप्तमेश चौथे भाव में हों तो जातक को उच्च वाहन।

१९) चतुर्थेश केन्द्र में हो और पापग्रह भुक्त हो तो उच्च वाहन सुख

२०) चतुर्थेश, दशमेश केन्द्र में हों तो वाहन सुख

२१) बलवान शुक्र चौथे भाव में बैठा हो तो उच्च वाहन योग
[कुण्डली दर्पण]

२) विशेष योग

१) राज्य लक्षण योग → चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र चारों ग्रह चौथे भाव या केन्द्र में हों तो जातक हंसमुख, उच्च व्यक्तित्व, धीर, सर्वगुण, सौभाग्यशाली होता है।

२) काहल योग → चतुर्थेश और नवमेश केन्द्र स्थानों में हों तो तथा आसने-

समने बैठे हों तो तथा लग्नेश बलवान हो सेना में उच्च पद।

३) इंस योग, गुरु स्वराशिगत होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक का चुम्बकीय व्यक्तित्व, धनवान, उत्तम सवारी से विभूषित।

४) मालव्य योग, यदि शुक्र स्वराशिगत होकर चतुर्थस्थ हो तो जातक उच्च सिमाग, केन्द्रीय सरकार में उच्च पद पर आसीन, सौभाग्यशाली।

५) शश योग, यदि शनि स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजनीति में पटु, चरित्रिक दृष्टि से थियेला।

६) रुचक योग, मंगल स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा, दृढ़, व्यापारी, सेना में उच्च पद।

७) भद्र योग, बुध यदि स्वराशिस्थ चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, स्वस्थ, वृद्धावस्था में पूर्ण सुख।

८) पुष्कल योग, लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, प्रसिद्ध, मधुरभाषी।

९) वाहन योग, शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्थ हो तो जातक जीवन भर उच्च वाहन सुख भोगता है।

१०) मातृ सौख्य योग, चन्द्र चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्थ हो तो पूर्ण मातृ सुख।

११) ग्रह योग, लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह दृष्टि युक्त हो तो उत्तम भवन योग।

चतुर्थ भाव

१२३

१२) लक्ष्मी योग, मंगल चौथे, शुक्र १२वें, एकादश भाव में उच्चका सूर्य हो तो जातक सिद्धान्त, पराक्रमी, सौम्य, सुखी, भाग्यशाली। [कुण्डली दर्पण]

३) उच्च वाहन प्राप्ति समय

पहले ग्रहों की मूल कलाएं देखें

सूर्य	३०
चन्द्र	१६
मंगल	६
बुध	८
गुरु	१०
शुक्र	११
शनि	१
राहु-केतु	०

अब निम्न तथ्यों पर ध्यान दें

१) चतुर्थेश की कलाएं

२) शुक्र की कलाएं

३) चतुर्थस्थ ग्रह की कलाएं

४) चतुर्थ भाव को देखने वाले ग्रहों की कलाएं

इन सब का योग कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे

चन्द्रराशि से आगे हिन। जो राशि आवे उस राशि के ग्रह की दशा में,

शुक्र की अन्तर्दशा पर उच्च वाहन योग [कुण्डली दर्पण]

पंचम भाव के बारे में पाठकों को चाहिए कि वे संतान के विषय में बीज-कुण्डली (पति की कुण्डली) तथा मैत्र-कुण्डली (पत्नी की कुण्डली) दोनों का अध्ययन करें। यदि बीज एवं मैत्र कुण्डली दोनों श्रेष्ठ हो तो संतान श्रेष्ठ। यदि बीज कुण्डली मजबूत हो तो लड़के अधिक यदि मैत्र कुण्डली मजबूत हो तो लड़कियाँ अधिक। यदि दोनों कुण्डलियों में पंचम भाव निर्बल हो तो संतान कम, अल्पायु।

स्त्री की कुण्डली में पंचमेश का अध्ययन करने के साथ मंगल चक्र का भी अध्ययन करें।

पुरुष की कुण्डली में सूर्य व शुक्र (बीयाँ) का पंचमेश के साथ अध्ययन करें।

१) संतान संख्या

- (१) पंचम भाव पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उससे उस भाव के गत नवांश संख्या को गुणा कर २०० से भाग दें। लब्धि तुल्य संतान
- (२) पंचम भाव की राशि छोड़कर अंशों की कला बनाएँ, फिर जिन २ ग्रहों की शुभ दृष्टि हो, उनसे क्रमशः गुणा कर ६० का भाग दें जो लब्धि प्राप्त हो, उसे फिर २०० से विभाजित करें। जो लब्धि प्राप्त हो उतने ही पुत्र होंगे।

पाप ग्रहों की दृष्टि से पैदा हुए पुत्रों का नाश सम्झें।

(कुण्डली दर्पण)

२) पुत्र योग

१) सप्तमेश पंचम भाव में हो तो जातक स्त्री या पुत्र रहता।

२) लग्नेश पंचम भाव में हो, पंचमेश लग्न में हो तो जातक का दत्तक

३) शुभ राशिस्थ पंचमेश केन्द्र त्रिकोण में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में पुत्र।

पंचम भाव

१२४

४) पुत्रेश और धनेश बल रहित हो, पुत्र पंचम भाव पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक निस्संतान।

५) पंचम भाव या पंचमेश शुभ ग्रह दृष्ट हो, युक्त हो तो निस्संदेह पुत्र।

६) पूर्णबिली गुरु पंचम भाव में हो तो पुत्र बुद्धिमत्।

७) चन्द्र दशम, शुक्र सप्तम भाव में हो तो, पाप ग्रह चौथे भाव में संतान नाश करते हैं।

८) लग्नेश दया च्चे भाव में हो, पंचम भाव पाप ग्रह युक्त हो या शत्रु ग्रह देखते हों तो पुत्र हानि।

९) गुरु लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश समी निर्बल हों तो जातक की दुर्बल संतति।

१०) पंचम भाव में बुध या रश्मि की राशि हो तो जातक के दत्तक पुत्र।

११) पंचमेश मंगल संग हो, छठे भाव का स्वामी उसे देखता हो तो पुत्र शत्रुओं से मृत।

१२) लग्न में मंगल हो, अष्टम या चतुर्थ भाव पर सूर्य की दृष्टि हो तो सिलसिले से संतान। (कुण्डली दर्पण)

३) बुद्धि योग

१३) पंचमेश दृष्ट, १२ वें स्थान में हो तो जातक (स्ववर्हीन होने पर) मंद बुद्धि होता है।

१४) यदि पंचमेश बुध और गुरु से युक्त होकर केन्द्र या त्रिमेण में हो तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, समझदार, संघेत को समझने वाला होता है।

१५) गुरु अपने ही नवांश में हो या शुभ षष्ठ्यांश में हो तो जातक समझदार, तदनुकूल कार्य करने वाला होता है। [कुण्डली चर्चा]

१) रोग व मानव शरीर

छठे भाव में जो राशि होती है, उससे सम्बन्धित अंग ही प्रभावित। यदि छठे भाव की राशि शुभ, शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह अंग ठीक। परन्तु यदि वह राशि पाप ग्रह युक्त हो तो वह अंग कमजोर, निर्बल। इसी प्रकार अकारक षष्ठे जब-२ जिन-२ राशियों पर जाएगा, उन राशियों से सम्बन्धित अंग पीड़ित होंगे।

नीचे प्रत्येक राशि से संबंधित अंग दिए जा रहे हैं।

- मेष - सिर, चेहरा, मस्तिष्क
 वृष - गर्दन, गिल्लियाँ, गले का भीतरी भाग, कंठ
 मिथुन - कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, माँस, भुजाएँ, सीना, छाती, पेट
 कर्क - सीना, छाती, पेट, हँसली, छाती की हड्डियाँ
 सिंह - पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी
 कन्या - लीवर, तिल्ली, गुदा, पीठ
 तुला - चमड़ी
 वृश्चिक - लिंग, भग, गुदा द्वार, जंघाएँ
 धनु - कमर, नडियाँ
 मकर - घुटने, हड्डियों के जोड़, घुटने की टोपी
 कुम्भ - पाँव, रखने, पाचन संस्थान
 मीन - सड़ी, पाँव का निम्न भाग

नीचे प्रत्येक ग्रह से संबंधित अंग हैं :-

- सूर्य - हृदय, रक्त, मस्तिष्क, स्त्रियों की बाईं, पुरुषों की दाईं आँख
 चन्द्र - पुरुषों की बाईं, स्त्रियों की दाईं आँख, स्तन, आँतें, लसीका
 मंगल - नाक, ललाट, पाचन व रज्जायु संस्थान
 बुध - नडियाँ, फेफड़े, जीभ, भुजाएँ, मुख, केश
 शुक - दाहिना कान, लीवर
 शुक - हिचकी, ठोड़ी, रंग, बायाँ कान, गिल्लियाँ
 शनि - हड्डियाँ, दाँत, घुटने, कफ

जब षष्ठेश पापी या अकारक ग्रह हो और गोचर में भी पाप राशि पर स्थिर हो तो तो उस राशि से सम्बन्धित अंग को चोट। यह सम्भावना निम्न अवसरों पर हो सकती है:-

- १) षष्ठेश की दशा में
- २) षष्ठेश की अन्तर्दशा में
- ३) सम्बन्धित राशि की दशा या अन्तर्दशा में

यदि निम्न ग्रह अकारक होकर षष्ठेश या षष्ठस्थ हो जायें तो

उनकी दशा-अन्तर्दशा में निम्न रोग हो सकते हैं

सूर्य - बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बीमारी, चर्मरोग, घाव, जलना, दौरे पड़ना, हिस्टीरिया

चन्द्र - अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन क्रिया का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंडा बुखार, गठिया, मानसिक असंतुलन, पेट की बीमारियों, जलाघात, जानवरों का हमला

मंगल - गले की बीमारी, कण्ठ रोगी, खून बिकार, गठिया, बुखार, आगजनी, जहर, नेत्र रोग, दौरे पड़ना, बेरी-२ रोग, सिर दर्द, रक्त सम्बन्धित रोग

बुध - दिमागी फितूर, नाक-कान रोग, वात कठिनाई, पित्त-भेद, चमड़ी के रोग, कोढ़, जहर, गिरना, ऊँचाई से गिरना

गुरु - पेट में गैस, बुखार, कान से मवाद, वायुयान दुर्घटना

शुक्र - कोढ़, वात, पित्त, कफ, वीर्य बिकार, नेत्र-पीडा, मूत्र पीडा, गुदा रोग, शर्मशय, कमजोरी, पेवू का दर्द

शनि - पेट रोग, पैर-रोग, गैस, पेड से गिरना, पत्थर से चोट आना।

राहु - दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर, आत्महत्या, पाचन सम्बन्धी बीमारी

केतु → घाव पड़ना, घाव का सड़ जाना, जलना, राहु से संबंधित बीमारी

जब-२ भी षष्ठेश या अकारक ग्रह बलवान होंगे या षष्ठेश का इन ग्रहों में से किसी भी ग्रह के साथ संबंध होगा, तब-२ इन ग्रहों से सम्बन्धित बीमारियाँ मनुष्य को पीड़ित करेंगी।

नीचे राशियाँ व उनसे सम्बन्धित रोग हैं:-

मेष, वृश्चिक = नेत्र रोग, बुखार, घाव, चमड़ी कट या जल जाना

वृष, तुला = स्वादहीनता, शर्करा की कमी, गुप्तरोग, ठंडा बुखार

मिथुन, कन्या = दाढ़, नाक व चमड़ी सम्बन्धी रोग

कर्क = शर्करा का आधिक्य, मुँह में छाले, जीम रोग, दिल का दौरा

सिंह = नेत्र रोग, पेट रोग

धनु और मीन = कर्ण पीड़ा, स्मरण शक्ति लुप्तता, चेतनाहीन, मस्तक में विकृति, पेट में गैस, जोड़ खुजना, हाथ पैर ठूँटना या पसीना निकलना

मकर और कुम्भ = पेशाब रोग, गर्मी बढ़ जाना, घाव या पीव पड़ना, नाक में घाव, जोड़ों में दर्द।

प्रत्येक ग्रह की एक ऋतु होती है जिसमें वह निर्बल होते-हुए भी बलवान हो जाता है

सूर्य - ग्रीष्म

चन्द्र - वर्षा

मंगल - ग्रीष्म

बुध - शरद

शुक्र - हेमन्त

शुक्र - वसन्त

शनि - शिशिर

(कुण्डली दर्पण)

२) कुछ शरीर संबंधी योग

१) षष्ठेश और बुध राहु के साथ होकर लग्नेश से संयोग रखते हों तो जातक नपुंसक।

षष्ठ भाव

१२६

१) मंगल, लग्नेश के साथ छठे भाव में हो तो घाव से लिंग में रोग।

२) गुरु व केतु छठे भाव में शुभा।

३) षष्ठेश बली होकर शुभग्रह हो तो जातक शत्रुहन्ता।

४) षष्ठेश और षष्ठस्थ ग्रह शुभ ग्रह हो और केन्द्र में हो तो साधारण रोग नाश।

५) षष्ठेश से युक्त अष्टमेश में पाप ग्रह हो तो जातक को बवासीर।

६) षष्ठेश से युक्त सूर्य दृष्ट भावों में हो तो जातक मंजा।

७) लग्नादि जिस राशि में राहु हो, शुक उससे देखता हो तो वह राशि शरीर के जिस भाग से संबंधित हो उस भाग में व्रण।

८) षष्ठेश बलहीन होकर पाप ग्रह युक्त हो तो शत्रुओं से युद्ध करते जातक की मृत्यु।

९) षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो नेत्र रोग।

१०) षष्ठेश दुष्ट स्थान में हो, लग्नेश बली हो तो जातक शत्रुहन्ता।

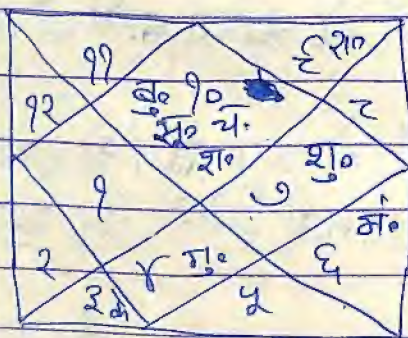
११) षष्ठेश गोपुरांशादि में हो तथा सूर्य से दृष्ट हो, साथ ही लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक सक्षमी, निरोगी, वीर, शत्रुहन्ता। (कुण्डली दर्पण)

१) विवाह काल

- १) लग्नेश और सप्तमेश की स्पष्ट राश्यादि के योग तुल्य में जब गुरु आता है तो विवाह काल।
- २) शुक्र और चन्द्र में जो बली हो तथा जिसकी दशा पहले आती हो उसकी दशा में, गुरु की अन्तर्दशा में विवाह।
- ३) दशमेश की महादशा और अष्टमेश के अंतर में विवाह।
- ४) सप्तमेश की महादशा, सप्तमस्थ ग्रह की अंतर्दशा में विवाह।
- ५) शुक्रयुक्त सप्तमेश की दशा में मुक्ति विवाह।
- ६) सप्तमेश व शुक्र के ग्रह में जब चन्द्र व गुरु हों तथा उससे केन्द्र में जब गोचर का गुरु आ जाये, तो निःसंदेह विवाह। [कुण्डली दर्पण]

२) ससुराल की दिशा

शुक्र से सप्तम भाव के स्वामी की जो दिशा होती है, उसी में ससुराल होता है (जन्म के जन्म स्थान से)।



प्रस्तुत कुण्डली में शुक्र तुला राशि में है, सप्तम भाव मेष राशि है जिसका स्वामी मंगल है। मंगल की दिशा दक्षिण है, अतः जन्म के जन्म

सप्तम भाव

13

स्थान से दक्षिण में उसका सत्सुराल। नीचे प्रत्येक ग्रह की विशा दी गई है

सूर्य

शुक्र

चन्द्र

शनि

मंगल

राहु

बुध

केतु

गुरु

[कुण्डली दर्पण]

कुछ विशेष योग

(१) सप्तम भाव में शुक्र, चन्द्र, बुध, गुरु ये सब या इनमें से जो ग्रह हो जातक की स्त्री का वैसा स्वभाव

(२) सप्तम भाव में मंगल हो, उस पर शनि की दृष्टि हो तो जा के दो संयोग

(३) यदि सप्तमेश छठे भाव में हो तो जातक की पत्नी चिरकाल तक रोगिणी

(४) मंगल व सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हों तो जातक की स्त्री रोगिणी।

(५) सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो जातक को संतान का अभाव

(६) सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु।

(७) लग्नेश और षष्ठेश पाप ग्रह युक्त हो तो जातक कामी।

(८) यदि पाप ग्रह षष्ठेश, धनेश, लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव

में हो तो जातक पर स्त्रीगामी।

यदि पाप ग्रह वृषभ, धनेश, लग्नेश से युक्त

हो गुरु, बुध सप्तम भाव में हो तो जातक का सम्बन्ध एक से अधिक स्त्रियों से होता है।

२) लघ्न, सप्तम, द्वायश भाव में पाप ग्रह हों तो तथा विषल चन्द्र पंचम भाव में हो तो जातक की स्त्री बाँझ।

३) शुक व सूर्य सप्तम भाव या लग्न में हो तो जातक की पत्नी वन्द्या

४) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक की स्त्री दुर्वाचारीणी।

५) सप्तम भाव में मकर का गुरु हो तो अल्प स्त्री सुख

६) सप्तमेश उच्च राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो या कर्मेश उसे देखता हो तो जातक की एकाधिक स्त्रियाँ।

७) सप्तमेश केन्द्र में हो, शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक की पत्नी सुशील, पतिभक्त [कुण्डली दर्पण]

१) मास्केरा

जन्म लग्न

मेघ

प्रथम जेणी मास्केरा

मंगल

द्वितीय जेणी

बुध

गुरु

मंगल

गुरु

चन्द्र

शनि

सूर्य

बुध

गुरु

गुरु

मंगल

शुक्र

मंगल

शुक्र

गुरु

बुध

शनि

चन्द्र

सूर्य

गुरु

बुध

बुध

मंगल

२) आयु साधन

पिण्डायु \Rightarrow आयु जानने का माध्यम

पिण्डायु हो प्रत्येक ग्रह के निश्चित ध्रुवांक (सातों ग्रह) तथा लग्न आठों की पिण्डायु निकालने।

जिस ग्रह की आयु निकालनी हो उसके स्पष्ट बनाकर उसका उच्च घरा दें। जो यदि धराशि से कम हो तो उसे फिर १२ से घरा लें अन्यथा वैसे ही रहने दें। बाद में कलारें बनाकर ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर २१६०० से भाग देने पर लब्धि वर्षादि होगी।

नीचे प्रत्येक ग्रह के ध्रुवांक व उच्चादि हैं:

	उच्च राशि	ध्रुवांक
सूर्य	०/१०	१६
चन्द्र	१/३	२५
मंगल	६/२८	१५
बुध	५/१५	१२
गुरु	३/५	१५

शुक्र	११/२७	२१
शनि	६/२०	२०

उदाहरणार्थ → एकजातक के ग्रह स्पष्ट थे हैं :-

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	७	५	०	६	१	१०	राशि
७	५	१०	६	२८	१३	८	अंश
२६	३८	५८	५५	५२	४८	३०	कला
१०	०	११	५७	२६	३१	२	विकला
मा०	मा०	व०	मा०	व०	मा०	मा०	गति

सूर्य की पिंडायु →

$$०१/२६/१७ - ०१/००/००$$

$$= ११/२७/२६/१७ \quad [६ से अधिक है अतः घटाने की जरूरत है]$$

$$११ \times ३० = ३३० + २७ = ३५७ \times ६० = २१४२० * २६$$

$$= २१४२६ कलाएं$$

$$= २१४२६ \times १८ \quad [ध्रुवांश से गुणा]$$

$$= ४०७१७४$$

२१६०० से भाग देने पर

$$= १८ साल १० मास ११ दिन ३० घंटी$$

इस प्रकार अन्य ग्रहों की ~~विंडायु~~ भी पिंडायु भी आजायेगी

लम्नायु → लम्नायु के लिए पहले लग्न स्पष्ट करें जैसे लग्न स्पष्ट है

$$२/१३/२१/५३$$

अब १ राशि = १ वर्ष

$$नवांश खण्ड = १ वर्ष = ३६० अंश २० कला$$

$$१ अंश = १ मास$$

$$कला = १ दिन ४८ घंटी$$

$$१ कला = १ दिन$$

$$विकला = १ घंटी ४८ पल$$

$$१ विक$$

इस प्रकार लग्नायु = ४ वर्ष ३ दिन २३ घटी २४ पल

(पिण्डायु के नियम)

- १) शुक्र और शनि को छोड़कर अन्य कोई ग्रह अस्त हो तो आयु का आधा करें।
 - २) जो ग्रह शत्रुमेत्री, मार्गी हो तो आयु $\frac{१}{३}$ [उस ग्रह की]
 - ३) पाप ग्रह यदि लग्न से द्वादश में हो तो आयु ०
 - ४) ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो आयु का आधा।
 - ५) दशम में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{२}{३}$
 - ६) नवम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{३}{४}$
 - ७) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{४}{५}$
 - ८) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{५}{६}$
 - ९) द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{१}{२}$
 - १०) ग्यारहवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{३}{४}$
 - ११) दशम शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{५}{६}$
 - १२) नवम शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{७}{८}$
 - १३) आठवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{९}{१०}$
 - १४) सातवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{११}{१२}$
- जो आठों की आयु आए उसे जोड़ लें। [कुण्डली दर्पण]

१) नवम भाव सम्बन्धित कुछ योग

१) नवमेश और गुरु शुभ वर्ग में हों, भाग्य भाव शुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यवान्

२) पापग्रह भी यदि उच्च राशि का होकर नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

३) नवमेश नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

४) चन्द्र-बुध, चन्द्र-गुरु नवम भाव में ज्ञेय कारक ग्रह।

५) नवमेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी भी भाग्यवर्धक

६) लग्नेश लग्न को देखता हो, भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद पर ख्याति प्राप्त करता है।

७) तृतीय, पंचम या लग्नस्थित बलवान् ग्रह भाग्य भाव को देखें तो जातक भाग्यवान्।

८) धनेश द्वादशवत्, दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली

९) लग्नेश नवम भाव में दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक उच्च पद पर आसीन।

१०) लग्नेश नवम भाव में, धनेश लग्नस्थान में, नवमेश धन भाव में और दशमेश से युक्त या दृष्ट हो जातक जीवन में आनन्दित।

११) भाग्यस्थ गुरु परशुक्र की दृष्टि हो तो जातक विविध वाहन सम्पन्न

१२) नवम स्थान पर उच्च का गुरु या शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक इन्हीं दशा-अन्तर्दशा में निश्चय ही प्रधान न्यायधीश, माली या शासन कार्य में उच्च पदाधिकारी होता है।

१३) नवमस्थ गुरु पर सूर्य-बुध की दृष्टि होने से जातक को सम्पन्न विद्वान तथा लेखक होता है। चन्द्र-मंगल की दृष्टि से सेनाधिकारी।

१४) नवम भाव में चन्द्र-बुध हैं जातक को पंडित बना देते हैं।

१५) नवम भाव में उच्च का या स्वर्गही राशि हो तो जातक खूब विदेश यात्राएं करता है। [कुण्डली दर्पण]

२) भाग्योदय काल]

१) सप्तमेश या शुक्र ३, ६, ७, १०, ११ वें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है।

२) भाग्येश यदि सूर्य हो तो भाग्योदय २२ वें वर्ष में, चन्द्र हो तो २४, मंगल हो तो २८, बुध हो तो ३२, गुरु हो तो १६, शुक्र हो तो २५, राशि हो तो ३६, राहु-केतु हों तो ४२ वें वर्ष से भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

१) जातक की आय स्थिति [नई विधि]

अमुक जातक का राज्येश (दशम भाव का स्वामी) किस स्थिति में है तथा कैसा फल दे रहा है, इसके लिए इस विधि का प्रयोग करें
जन्म लग्न राशि को मेष से मिनो फिर जो ऊँक आवे, उसे दशम भावस्थ राशि से गुणा करें। इस गुणनफल को दशमेश के दशा वर्षों से गुणा कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे निम्न तालिका में देखें
शेष बचे स्थिति फल

१	स्नान	साधारण
२	भक्षण	साधारण
३	भोजन	साधारण
४	निद्रा	अत्यंत साधारण
५	पूजा	साधारण
६	दैनिक चर्या	मिश्रित
७	क्रोधित	निकृष्ट
८	आराम	निकृष्ट
९	प्रसन्न	उत्तम
१०	खेल	साधारण
११	वार्तालाप	मिश्रित
१२	दुखी	निकृष्ट

माना किसी जातक का लग्न कर्क है तो उसके दशम भावस्थ राशि मेष है।
इस प्रकार $४ \times १ = ४ \times ७ = २८ \div १२ = ४$ शेष अतः निद्रा अर्थात् फल उत्तम
साधारण [कुण्डली दर्पण]

२) कुछ योग

- १) दशम भाव से आगे दशम भाव का स्वामी भी साधारण ज्ञेयी का राज्येश
- २) दशमेश राहु से युक्त केन्द्र में बैठा हो, दायरे में बुध हो तो जातक महान पुण्यात्मा

3) लग्नेश और दशमेश एक साथ हों तो जातक को नौकरी में प्रगति।

4) बुध अपनी उच्च राशि में राहु-केतु रहित होकर दशमेश के साथ नवम भाव में हो तो जातक धार्मिक।

5) राज्य स्थान से दशम भाव में पापग्रह या क्रूर ग्रह हो तो जातक साधारण।

6) नवम, दशम, सप्तम, पंचम और लग्न ये पाँच भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक विश्व में विख्यात।

7) बलवान पाँच या चार ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) अथवा त्रिकोण (५, ८) में हों तो जातक वृद्धावस्था में सन्तुष्ट।

8) शुक्र और चन्द्र बलहीन लग्नेश को देखते हों तो जातक साधारण स्थिति में।

9) नवम भाव में चन्द्र हो और उसे कोई भी ग्रह न देखता हो तो जातक निश्चय ही सन्तुष्ट।

10) दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक गजेटेड आफिसर होता है।

11) लग्नेश शनि को देखता हो और अन्य ग्रह लग्नेश को न देखते हो तो भी प्रबल सन्तुष्टी योग।

12) लग्न के दशम भाव में सूर्य हो तो पिता से धन मिले, चन्द्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्रियाँ से, शनि हो तो सेवक से, राहु-केतु हो तो छल से धन मिले।
(कण्डली दर्पण)

३) व्यापार

३) दशमेश सूर्य के नवमांश में हो तो जातक दवा, ऊन, घास, धान्य, सोना, मोती आदि के व्यापार से लाभ।

४) चन्द्र के नवमांश में हो तो मोती, कृषि, मिट्टी के बिलौने, पैसी स्टोर, रेडीमेड स्टोर से लाभ।

५) मंगल - ताँबा, पीतल के बर्तन व कोयले की दुकान से लाभ।

६) बुध - लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर, ज्योतिष, वैद्यक आदि से

७) गुरु - अध्यापन, स्टेशनरी आदि के व्यापार से लाभ।

८) शुक्र - चौपायों की खरीदोफरोकत से, गुड-बागल, किराना व्यापार से लाभ।

९) शनि - लोहे का व्यापार, विला, तेल, ऊन आदि से लाभ।

१०) लग्न से द्वितीय या एकादश में प्रबल ग्रह हों तो व्यापार से लाभ।

११) दशमेश गुरु यदि त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त कर धनवान। [कुण्डली दर्पण]

१) आदेश विचार

लग्न राशि के अंकों, द्वितीय भाव स्थित राशि के अंकों, एकादश भाव स्थित राशि अंकों से गुणा कर ७ से भाग दें। जो बचे उसे नक्षत्र भाग से आगे गिनें, जो राशि आगे उसके स्वामी की दशा, एकादश प्रोश की अन्तर्दशा में विशेष लाभ। [० शेष बचे तो उसका तात्पर्य १ समझें] [कुण्डली दर्पण]

२) कुल योग

१) एकादश भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभ कार्य से धन प्राप्ति, अशुभ ग्रह हों तो पाप कर्मों से धन लाभ

२) लाभ स्थान में दो या दो से अधिक बलवान ग्रह हों तो नास्तक गुणवान, मित्रवान, विभूषण, वस्त्र, स्त्री सम्पन्न होता है।

३) धनेश और लाभेश यदि लग्नेश हों तो सद्गुणों से धन-प्राप्ति

४) सूर्य लाभेश हो तो राज्य वगैरे, चन्द्र हो तो स्वामी से, मंगल हो तो भाइयों से, या कृषि से, बुध हो तो विद्या व व्यापार से, गुरु हो तो व्याप व्यवहार से, या शीशु से, शुक हो तो ससुराल-स्त्री से, रवि हो तो धूल-कपट, राजनीति व लगी से।

५) लाभ स्थान का स्वामी लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो नास्तक धनवान। [कुण्डली दर्पण]

१) द्वादश भाव संबंधित विशेष ॥

१) द्वादश भाव में चर राशि हो तथा दृष्ट ग्रह राशि से युक्त या दृष्ट हो तो जातक आमणशील

२) द्वादश भाव में निर्बल ग्रह हो और द्वादश राशि नही हो तो धन की हानि

३) षष्ठे रा अथवा अष्टमे रा बलवान पाप ग्रह होकर १२वें भाव में हो तो जातक दिवालिया

४) व्यय भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक पुण्यात्मा एवं धनवान

५) यदि द्वादशस्थ ग्रह उच्च या स्वराशि का हो तो जातक परोपकारी

६) द्वादश भाव में चंद्र, शुक्र, बृहस्पति हो तो जातक धनवान

७) द्वादश रा उच्च राशि का, स्वराशि या मित्र राशि हो तो जातक सुखी

८) शुक्र, राशि, केतु, केचन्द्र द्वादश भाव में हों तो जातक मध्यावस्था में प्रबल दुखी

९) लग्न में गुरु हो, सप्तम भाव में शुक्र, कन्या में चंद्र हो तो जातक की मृत्यु की बाद सद्गति

१०) द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तो जातक विरह्यात व आदर्शनीय

११) द्वादश भाव में हो तो जातक परेशान।

१२) द्वादश भाव में शुक्र उच्च या स्व राशि का हेमर स्थित हो तो जातक
विरव्यात, कला प्रिय, धर्मार्थी, सुखी, ऐश्वर्यवान, लक्षपति होता है।
[कुण्डली दर्शन]

विंशोत्तरी दशा

१४५

३) केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक [केन्द्र-१,४,७,१० त्रिकोण-५,८,९ त्रिक-३,६,१२]
भाव के स्वामी क्रमशः प्रबल अर्थात् ४ भाव का स्वामी १ से
प्रबल, ७ भाव का ४ से, १० भाव का स्वामी ७ भाव से प्रबल

४) द्वितीयेश और द्वादशेश शुभ और अशुभ ग्रह के सम्बन्ध
होने से, मित्र स्थान में होने से मित्र द्वारा शत्रु स्थान में होने
से शत्रु द्वारा शुभ-अशुभ फल देते हैं।

५) जैसा ग्रह होता है उसकी दशा में वैसा ही फल प्राप्त होता है।

६) अष्टम स्थान का स्वामी यदि जन्म स्थान या व्यय स्थान का स्वामी
हो तो अशुभ, यदि लग्नेश हो तो शुभ।

७) केन्द्रापति दोष गुरु व शुक के विषय में प्रबल। [लघु पाराशरी]

मारकेश विचार

द्वितीय और अष्टम मारकों में अष्टम का मास्कबली है,
द्वितीयेश की अन्तर्दशा में मनुष्य की मौत, द्वितीय स्थान में जो
पाप ग्रह होते हैं (षष्टेश, तृतीयेश और द्वादशेश) उनकी अन्तर्दशा
में मृत्यु। यदि इन मारकेशों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु न हो
तो व्ययेश के जन्म लग्न से द्वादश स्थान के स्वामी की, या उसके
साथी पाप ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु। स्वल्प [३२ से कम]
मध्यम [३२ से ७० वर्ष तक], दीर्घ [७० से १०० वर्ष], उत्तमायु
[१०० वर्ष से अधिक] लग्नेश सूर्य हो तो जातक अल्पायु, शुक-
रश्मि-चन्द्र हो तो जातक मध्यायु, बुध-गुरु-मंगल हो तो दीर्घायु
अल्पायु वाला जातक विपत्तार में मरता है, मध्यायु वाला
प्रयत्नितार में, उत्तमायु वाला मारक नक्षत्र में मृत्यु पाता है
द्वादशेश, द्वादशस्थ पाप ग्रह और द्वादशेश के साथी

विंशोत्तरी दशा

१४६

अन्य कोई न हो, तो द्वायदश के साथी शुभ ग्रहों की दशा में मृत्यु या अपमरण ग्रह की दशा में भी मृत्यु।

पहिले सब प्रकार के मारकेशों में कोई भी न हो तो केवल पाप ग्रहों की दशा में ही मृत्यु। इस समस्त ३, ६, १२ वें स्थान के स्वामियों की दशा में मृत्यु होती है। चन्द्र और सूर्य को छोड़कर जो ग्रह मारक स्थान में होता है वह मारक है।

६, ८, १२ वें स्थान के स्वामी, राहु-केतु में जो ग्रह एकदश स्थान के नवमात्रा का स्वामी हो, वह मारकेश है। यदि शुभ ग्रह हो तो शरीर मर, पाप ग्रह हो तो मौत।

३, ६, १२ स्थान का पाप ग्रह रानि मारक स्थान के स्वामियों के सम्बन्ध से और सब भास्कों को हटाकर स्वयं मारक होता है। [लघु पावशरी]

दशाफलाध्याय

गण्ड्यो को सूर्य आदि समस्त ग्रह अपनी-२ दशा और अन्तदशा में अपने-२ स्वरूप के अनुसार शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह आपस में सम्बन्धी हैं या जो अपने समान हैं उन्हीं की अन्तदशा में शुभ अशुभ फल देते हैं।

जो शुभ होने से शुभ दशैश (दशा का स्वामी) के समान हैं, या अशुभ होने से अशुभ दशैश के समान हैं, उन्हीं की दशा में शुभ अशुभ फल देते हैं। जो ग्रह दशैश से सम्बन्धित हैं रखते, या उसके समान हैं, किंतु दशैश के विरुद्ध फल दाता हैं उनकी अन्तदशा में फलानुसार दशैश शुभ फल देनेवाला है। परन्तु शुभ फल देता है। [वह स्वयं शुभ फल नहीं देता] केन्द्रापिपति अपनी दशा में सम्बन्ध होने पर त्रिकोणेश की अन्तदशा में शुभ फल देता है, और त्रिकोणेश भी अपनी दशा

में केन्द्र के साथ यदि उसका सम्बन्ध हो, तो अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है। यदि दोनों का परस्पर संबंध न हो दोनों ही अशुभ।

यदि द्वितीयेरा और सप्तमेश की अन्तर्दशा, राजयोग का प्रारम्भ होती है तो जातक के सुख सीमित रहते हैं।

राजयोग करने वाले ग्रहों की महादशा में उनके साथी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो, या राजयोग करने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा हो, दोनों में समान शुभफल होता है। इसी भाँति पाप ग्रह की महादशा में, उसके साथी पाप ग्रह की अन्तर्दशा में दोनों में अशुभ फल समान।

राजयोग कर्ता शुभ ग्रह की महादशा में उसके साथी राजयोग करने वाले अन्य शुभ ग्रह अपनी-२ अन्तर्दशा में कभी राजयोग करने वाले ग्रह की महादशा में जब राजयोग कर्ता ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब वह अपना पूरा फल देती है।

किसी राजयोग कारक ग्रह के साथ सम्बन्ध न रहने से राजयोग भ्रष्ट करने वाले राहु-केतु यदि केन्द्र-त्रिकोण में हों तो राजयोग कारक ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ही राजयोग का फल देते हैं। उसमें भी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में शुभ और अशुभ फल देते हैं।

यदि महादशा का स्वामी पाप ग्रह हो तो उससे सम्बन्ध न रखने वाले पाप ग्रहों की अन्तर्दशा अशुभ फल देती है। उसके संबंधी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा सीमित फल देती है, उसके साथ संबंध न रखने वाले और राजयोग कारक पाप ग्रहों की अन्तर्दशा महाकाष्ट कारक है।

मार्क ग्रह के साथ यदि शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो तो भी (शुभ ग्रह की दशा में) मार्क मनुष्य के प्राण नहीं ले पाता, और सम्बन्ध न रहने वाले पर भी पाप ग्रह की दशा में मार्क ग्रह मनुष्य के प्राण लेता ही है। इससे मार्केश

विंशोत्तरी दशा

१४८

की दशा में शुभ और पाप ग्रह की अन्तर्दशा ही मारक और रक्षक है और उसके साथ सम्बन्ध कुछ नहीं कर सकता।

शनि और शुक्र दोनों एक ही महादशा में दूसरे की अन्तर्दशा आने पर अवश्य ही परिवर्तित शुभ और अशुभ फल देते हैं। तात्पर्य यह कि यदि शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा आ जाए तो शुक्र की दशा का फल नष्ट। किंतु बदले में शनि की दशा का फल अशुभ ही होता है। इसी प्रकार शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आने पर शनि की दशा का अशुभ फल नहीं होता किंतु शुभ होता है।

यदि दशमेश और लग्नेरा दोनों जाप्त में एक दूसरे के स्थान में हों तो राजयोग कारक।

यदि नवमेश दशमेश के स्थान में हो या दशमेश नवमेश के स्थान में हो तो राजयोग कारक। [नव पाराशरी]

शुभ ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभ तथा अशुभ, ग्रह अशुभ ग्रह अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह उच्च राशिस्त, मित्र राशि, स्व राशि गत हो, वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में उच्च पद, प्राप्ति, धन लाभ आदि शुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वृत्ति, अस्तगत हो वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन हानि, कलह, क्लेश, धन हानि, आदि अनिष्ट फल प्राप्ति प्रदान करते हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी यदि परस्पर मित्र हों तो शुभ, शत्रु हों तो अशुभ।

३, ६, ९, १२ मान के स्वामी की दशा / अन्तर्दशा प्रायः अशुभ केन्द्र त्रिकोणस्थ ग्रहों या केन्द्र-त्रिकोणस्थ ग्रहों की दशा / अन्तर्दशा शुभ होती है। [पांचांग दिवाकर]

प्रश्न लग्न विचार [षट् पञ्चाशिका] १४६

प्रश्न लग्न विचार

१) प्रश्न देखने का साधारण नियम

⇒ लग्न से द्युति (अर्थात् स्थान में रहना या नहीं रहना, गमनागमन, वृद्धि योग, जेल से दूर जाने इत्यादि) को चतुर्थ स्थान से वृद्धि (गृह सुख), मित्र स्थान, नौकरी, प्रवासी का आना इत्यादि को सप्तम स्थान से निवृत्ति (यात्रा निवृत्ति, शत्रु निवृत्ति, रोग निवृत्ति, गष्ट वस्तु प्राप्ति निवृत्ति) का विचार करना चाहिए। [षट् पञ्चाशिका]

प्रवासी का गमन यदि चतुर्थ और सप्तम के मध्य में स्थित ग्रह हों तो प्रवासी को गच्छ मार्ग स्थित कहना चाहिये अथवा उक्त स्थान में स्थान स्वामी को जितने दिन आये हुए हो गये हो उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी आने में भी देर होगी।

२) लग्नादि द्वादश भावों का शुभाशुभ कथन

⇒ जो भाव अपने स्वामी से युक्त हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों या दृष्ट हों तो भावों का लाभ, विपरीत में हानि

३) प्रश्न लग्न स्थिति से लाभालाभ विचार

⇒ यदि लग्न में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रहों का षड्वर्ग लग्न में हो या शीर्षोदय राशि लग्न में हो तो शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत रहने पर कार्य का नाश। शुभ ग्रह पाप ग्रह दोनों से सम्बद्ध हो तो कार्य कष्ट से साध्य होगा।

षड्वर्ग- ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रैशांश
शीर्षोदय- सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन
पृष्णोदय- रोष, मीन

४) नष्ट वस्तु लाभ लाभ विचार

⇒ यदि पूर्ण चन्द्र (अर्धविकचन्द्र) प्रश्न लग्न में हो और गुरु अथवा शुक से दृष्ट हो तो नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ। बलवान शुभ ग्रह एकादश भाव में हो तो शीघ्र लाभ।

५) मूल प्रश्न विचार

⇒ यदि ग्रह अपने नवमांश में स्थित होकर लग्न में या नवमें, पांचवे स्थित स्वर्गवांश को देखता है तो धातु की चिन्ता। अन्य ग्रह के नवमांश में रहकर स्वर्गवांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम को देखता हो तो जीव चिन्ता, अन्य ग्रह नवमांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम में को यदि देखता हो तो मूल चिन्ता।

~~विचार~~ ~~अष्टम~~

६) प्रकरण्त से मूल प्रश्न विचार

⇒ विषम राशियों के नवमांश में धातु चिन्ता, (२, ४, ६) नवमांश में मूल चिन्ता और (३, ५, ७) नवमांश में जीव चिन्ता। सम राशियों में इसके उल्टा।

नवमांश संख्या	१/४/७	२/५/८	३/६/९
विषम राशि	धातु	मूल	जीव
सम राशि	जीव	मूल	धातु

७) सर्ववस्तु विचार (गमनागमन, लाभलाभ, जीवितमरण आदि)

⇒ यदि स्थिर राशि प्रश्न लग्न में हो तो स्थान लाभ के प्रश्नोत्तर में स्थान लाभ, गमनागमन नहीं, रोगी की मृत्यु नहीं, नष्ट वस्तु प्राप्ति, रोग शान्ति नहीं, पराजय नहीं, प्रवासी स्थिर राशि में उल्टा द्विस्वभाव के प्रथम भाग में थोड़ा स्थिर, अंतिम भाग में थोड़ा चर। लग्न व चन्द्र शुभ हो तो शुभ, अशुभ हो तो अशुभ।

८) शत्रु विचार

⇒ शत्रु के गमनागमन विषय में यदि पांचवें या छठे स्थान में पाप ग्रह हों तो शत्रु रास्ते से वापिस, चौथे पाप ग्रह हो तो आया हुआ शत्रु पराजित होकर लौट जाता है।

९) शत्रु निवृत्ति विचार

⇒ यदि चतुर्थ भाव में मीन, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इनमें से कोई राशि हो तो शत्रु की पराजय। यदि चतुष्पद (मेष, सिंह, धनु, काउतराई) हो तो शत्रु डाँकर भागा जाता है।

१०) शत्रु विशेष विचार

⇒ प्रश्नकाल में चर राशि लग्न में हो और शुभ ग्रहों सम्बद्ध हो तो यायी (पहले चढ़ाई करने वाली) की बिजया। यदि पाप युक्त चर लग्न हो तो यायी के लिए अशुभ। स्थिर लग्न में बलवान पाप ग्रह यायी के लिए शुभ, शुभ ग्रह अशुभ।

११) शत्रु विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न में चर राशि हो तथा स्थिर राशि में चन्द्र हो तो शत्रु शीघ्र आएगा। यदि स्थिर लग्न हो तथा चन्द्र चर राशि में हो तो विपरीत। यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो, द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रु अवश्य लौट जाता है। यदि द्विस्वभाव राशि लग्न में हो, चन्द्र चर राशिगत हो तो शत्रु आधे रास्ते से लौट जाएगा। यदि चर राशि प्रश्न लग्न में हो तथा द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रुओं का आक्रमण।

१२) यायी विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न चर राशिगत हो तथा सू०, श०, बु०, शु० इनमें से किसी भी ग्रह से युक्त हो तो यायी राजा का गमन

प्रश्नलग्न विचार

942

शीघ्र होता है और यदि यहां ग्रह बन्नी होकर युक्त हो तो जन्म नहीं होता।

93) शत्रु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर राशि लग्न में हो, गुरु, शनि से दृष्ट हो तो प्रश्न करने वाले स्वराज्य के शत्रु का जन्म या आगमन कुछ नहीं होता। यदि उपरोक्त स्थिति के अतिरिक्त 3, 5, 6 स्थान में पाप ग्रह हो तो शत्रु से युद्ध। यदि उपरोक्त योग में पाप ग्रह चौथे हो तो शत्रु लौट जाता है।

94) शत्रु आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ स्थान में सू, या चं, बैरा हो तो शत्रु की सेना नहीं आती, यदि चौथे बु, शु, शुक बैरा हो तो शत्रु की सेना शीघ्र आती है।

95) शत्रु निवृत्ति विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में मेष, धनु, सिंह, वृषकोई भी लग्न हो या इनमें से कोई भी राशि चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु लौट जाता है।

96) शत्रु आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न शनि या गुरु से युक्त हो तो आया हुआ शत्रु मार्ग में ही रुक जाता है। यदि चर लग्न हो और सूर्य तथा गुरु से युक्त हो तो शत्रु अवश्य आता है।

97) इत्र संबंधे अन्य विचार

⇒ सर्वोत्तम बली ग्रह लग्न से यात्रा के समय जिस राशि में स्थित हो उतने संख्या भास में यात्री राजा लौट आयेगा यदि स्थिर राशि में ग्रह स्थित हो तो दिगुणित करें, दैत्य भाव में

हो तो त्रिगुणित करें। [प्रवासी के लिए भी ऐसा ही समझें]

१८) यायी आगमन विचार

⇒ साप्तमेश जब चरती हो तो यायी राजा या परदेशी का आगमन।

१९) शत्रु के नहीं आने का विचार

⇒ प्रश्न लग्न से, या प्रश्न नक्षत्र से जितने संख्या के चन्द्र लग्न या चन्द्र नक्षत्र हो, उतने ही दिनों में यायी या प्रवासी का आगमन। परन्तु अगर इन के मध्य में कोई ग्रह हो तो प्रवासी का आगमन नहीं होगा।

२०) शत्रु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न या प्रश्न लग्न से साँचे अथवा दसवें शुभ ग्रह हों तो नगराधिप (स्थायी) की विजय। यदि प्रश्न लग्न से नवम स्थान में शनि या मंगल हों तो नगराधिप नगर से हारकर भाग जाता है। यदि प्रश्न लग्न से नवम स्थान में बुध, गुरु, शुक्र हों तो नगराधिप की विजय होती है।

२१) यातु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ प्रश्न लग्न के तृतीय से अष्टम स्थान तक ६ राशि की पौर (स्थायी) संज्ञा है। एवं नवम से द्वितीय तक ६ राशि की यायी संज्ञा है। यदि यायी स्थान में बली अधिक शुभ ग्रह हों तो यायी के लिए हितकर और यदि स्थायी स्थान में बली शुभ ग्रह अधिक हों तो स्थायी के लिए हितकर। इसके विपरीत (अर्थात् पाप ग्रह के रहने से) यायी स्थायी दोनों का विपरीत। यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें

प्रश्नलग्न विचार

958

स्थान में पाप ग्रह हो तो यायी के पुरवासियों का अनिष्ट और राजा को शुभ फला [पौर, या प्रतिवादी, स्थायी तथा मुद्दालेह उसे कहते हैं जिस पर मुकदमा दायर या चढ़ाई की जाए] और यायी बोदी तथा मुद्दई उसे कहते हैं जो मुकदमा दायर करे या चढ़ाई करे]

२२) शत्रु-युद्ध विचार

⇒ यदि पुरुष सप्तम राशि बुला, मिथुन, कन्या, कुम्भ, धनु का पूर्वार्द्ध लग्न में हो और शुभ ग्रह से युक्त हो, अथवा पुरुष राशि एकादश या द्वादश भाग में हो, और शुभ ग्रह से युक्त हो तो यायी और स्थायी दोनों में संधि (मेल) हो जाता है। यदि इन स्थानों में द्विस्वभाव राशि पाप ग्रह युक्त हो तो लड़ाई।

२३) यायी-स्थायी युद्ध विचार

⇒ यदि द्विपद सप्तम राशि में शुभ ग्रह हो, अथवा केन्द्र में शुभ ग्रह हो, और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यायी और स्थायी में संधि। यदि पाप ग्रह केन्द्र अथवा मनुष्य सप्तम राशि में हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो तो विरोध।

२४) शत्रु सेना आगमन का विचार

⇒ प्रश्नलग्न से २, ३ स्थान में गुरु या शुक हो अथवा दोनों हो तो यायी या प्रवासी शीघ्र लौट आयेगा।

२५) शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नलग्न से यदि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो और पाप ग्रह केन्द्र व अष्टम भाग के सिवाय अन्य भागों

प्रश्नलग्न विचार

955

मे हो तो प्रश्नकर्ता की डाभीष्ट कार्य सिद्धि अवश्य हो जाती है। इसके विपरीत यदि केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह हों और केन्द्र त्रिकोण व डाभीष्ट भाव के सिवाय अन्य किसी भाव में शुभ ग्रह हों तो विपरीत।

26) लाभालाभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से ३, ५, ७ स्थान में शुभ ग्रह शुभ फल देते हैं। परन्तु यदि पाप ग्रह हों तो अशुभ। तुला, कन्या, मिथुन, कुम्भ यह पुरुष (द्विपद) संज्ञक राशी प्रश्नलग्न में हो तथा शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हों तो शुभ।

27) लाभालाभ योग-विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न से शुभ ग्रह सातवें या दसवें स्थान में हों तो पूर्य के लिए स्थान लाभकारक योग। और प्रश्न लग्न से, दूसरे तथा पाँचवें स्थान में शुभ ग्रह हों तो पूर्य के लिए मान तथा द्रव्य लाभकारक योग है। यदि पाप ग्रह 11वें, 12वें स्थान में हों तो अशुभ। यदि मीन चन्द्र व पाप ग्रह लग्न में हों तो अशुभ, दसवें हों तो शुभ।

28) अन्य शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से २, ७, १०, ११, ६, ३ स्थान में से कोई भी स्थान चन्द्र और शुक्र युक्त या दृष्टियुक्त हो तो लाभालाभ प्रश्न में स्त्री लाभ। यदि प्रश्नलग्न में या प्रश्नलग्न से ३, ६, ५, ८ स्थान में पाप ग्रह हों तो कार्य व द्रव्य नाश करनेवाले, शुभ ग्रह हों तो शुभ फल प्रदान करते हैं।

29) रोग प्रश्न: विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न में या ७, ८, ५ स्थान में, किसी भी से

प्रश्न लग्न विचार

स्थान में शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त होकर शुभग्रह हो और ३, ६, १०, ११ वें स्थान में चन्द्र हो तो रोगी विषय के प्रश्न में रोगी का शीघ्र स्वास्थ्य और विपरीत होने से अशुभा।

३०) प्रवासी विचार

⇒ यदि प्रश्न का निकल लग्न से सूर्यादि सभी ग्रह ५, ३ और ३ रे इन स्थानों में हों तो बहुत दूर प्रवासी की शीघ्र लौट आएगा और उपरोक्त (२, ३, ५) भावों में शुभ ग्रह हों तो गण्ट वस्तु का शीघ्र लाभ और प्रवासी शीघ्र आता है। यदि केवल शुभ ग्रह हों तो भी आरम्भ फलादेश।

३१) प्रवासी सम्बन्धी विचार

⇒ यदि प्रश्न का निकल लग्न से दूर या जहाँ कोई भी ग्रह हो और केन्द्र में गुरु, त्रिकोण में बुध या शुक्र हों तो प्रवासी शीघ्र लौट आएगा।

३२) प्रवासी आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न से ८ स्थान में चन्द्र हो और केन्द्र पाप ग्रह रहित हो तो प्रवासी सुख पूर्वक लौट आएगा यदि केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो अत्यंत शुभ।

३३) प्रवासी आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न से प्रवासी संबंधी सभी प्रश्नों के लिए यदि लग्न पृष्ठोदय [मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर, मीन] राशि में हो और पाप ग्रह दृष्ट हो अथवा पाप ग्रह १, ३, ४, ६, ७, १० इन भावों में शुभ ग्रह दृष्ट रहित हों तो प्रवासी को घोर कष्ट या मृत्यु

३४) प्रवासी के आगमन के समय का विचार

⇒ प्रवासी के आगमन संबंधी प्रश्न में, प्रश्नलग्नसे आगे जितने संख्याक राशि में जो कोई भी ग्रह हो, उस संख्या से १२ को गुणाकर गुणनफल संख्या तुल्य दिनों में प्रवासी वापस आएँ। अथवा जितने दिनों में वह ग्रह व्रत्ता प्राप्त करेगा उतने दिनों में प्रवासी की वापसी।

३५) चोरज्ञान विचार

⇒ नष्ट वस्तु संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो या स्थिर राशि के नवमांशलagn में हो या वर्गोत्तम नवमांशलagn में हो (वर्गोत्तम- चर के प्रथम, स्थिर के पंचम, द्विस्वभाव के नवम नवमांश) तो खोई वस्तु उसी स्थान में है और किसी निजी व्यक्ति ने ही चुराई है।

३६) नष्ट वस्तु स्थित स्थान विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो नष्ट वस्तु घर के द्वारदेश की ही समीप है, और द्वितीय द्रेष्काण हो तो गृह के मध्य भाग में नष्ट वस्तु स्थित है, और यदि तृतीय द्रेष्काण हो तो घर के पीछे या घर के बाहर कहीं नष्ट वस्तु गयी है।

३७) लाभालाभ विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में पूर्ण चंद्र हो अथवा शुभग्रह की दृष्टि से युक्त होकर शीर्षोदय राशि के लग्न में कोई शुभग्रह हो तो खोई वस्तु शीघ्र लाभ। यदि बलवान शुभग्रह ११वें भाव में प्रश्न काल के समय हो तो भी नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ होती है।

37) नष्ट वस्तु दिशा विचार

⇒ नष्ट वस्तु की दिशा और दूरी ज्ञान के विचार में, जो बलवान ग्रह केन्द्र में स्थित हो उसके अनुसार दिशा जानना (ग्रह दिशा ज्ञान - पृ. 139)
यदि बलवान ग्रह केन्द्र में न हो तो लग्न से दिशा का ज्ञान। मेष, सिंह, धनु से पूर्व, वर्षा, कन्या, मकर से दक्षिण। मिथुन, तुला, कुम्भ से पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन से उत्तर दिशा लग्न स्थित नवांश के द्वारा योजन प्रमाण।

38) कन्या पुत्र जन्म विचार

⇒ यदि लग्न से शनि विषम स्थान में हो तो गर्भवती के प्रश्नोत्तर में पुत्र-जन्म, यदि शनि सम स्थान में हो तो कन्या जन्म। विवाह सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में शनि विषम स्थान में हो तो नर को स्त्री लाभ, शनि सम स्थान में हो तो स्त्री लाभ नहीं।

39) विवाह योग विचार

⇒ विवाह प्रश्न में यदि लग्न से चन्द्र 2, 5, 7, 11 या 6 स्थान में शुक्र, सूर्य, बुध से दृष्ट होकर स्थित हो तो विवाह होगा, अथवा शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो भी विवाह अवश्य होगा।

40) वर्षा विचार

⇒ वर्षा ऋतु में वर्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में यदि चन्द्र और सूर्य से सप्तम भाग में शुक्र या शनि हो, अथवा प्रश्नलग्न से 2, 5, 8, 11 स्थान में शुक्र, शनि हो तो अच्छी वर्षा

41) प्रश्नलग्न से वर्षा विचार

⇒ वर्षा ऋतु में वर्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में यदि शुक्लपक्ष हो और शुभग्रह जलचर (मीन, कर्क, मकर, कुम्भ) राशि में स्थित हो

प्रश्न लग्न विचार

१५६

या प्रश्न लग्न से २, ६, केन्द्र स्थान में हो अथवा चन्द्र जलचर राशि में हो तो वर्षा अच्छी
या लग्न में

४३) गर्भ कन्या-पुत्र जन्म विचार

⇒ पुत्र और कन्या जन्म संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि पुरुष राशि (मेष, मीन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) बलवान होकर लग्न में हो और पुरुष राशि सम्बन्धी षड्वर्ग भी पड़े और पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) की दृष्टि से युक्त हो तो पुत्र जन्म। विपरीत में कन्या जन्म यदि बुध लग्न में हो तो अभी प्रसूत नहीं हुई है ऐसा कहना।

४४) प्रश्नकर्ता की इच्छित स्त्री की अवस्था विचार

⇒ प्रश्नकर्ता को कैसी स्त्री इच्छित है, इस प्रश्नोत्तर के विचार में यदि प्रश्न लग्न में बालचन्द्र या बुध बैठा हो या लग्न पर दृष्टि हो तो पृच्छक कुमारिका स्त्री की इच्छा करता है। यदि प्रश्न लग्न में युवा चन्द्र हो तो युवती, वृद्ध चन्द्र हो तो वृद्धा की चाह। यदि लग्न में सूर्य या गुरु हो तो प्रसूता स्त्री की चाह, मंगल या शुक्र हो तो कर्कश युवती की चाह करता है।

इस तरह स्त्री पुरुष दोनों के इच्छित प्रश्नोत्तर में अवस्था का निर्णय भी लिया जा सकता है, तथा चौर प्रश्न में चार की अवस्था आदि भी जानी जा सकती है।

४५) प्रश्नकर्ता के इच्छित प्रश्नकार्य सम्बन्धी विचार

⇒ इच्छानुसार चिंतित प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न में कोई बलवान ग्रह हो तो अपने समान किसी मनुष्य की चिंता होती है। इस स्थान में भाई की, पाँचवें स्थान में संतान की, ४ स्थान में माता या बहिन की, ६ स्थान में शत्रु की, सातवें में स्त्री की, दूबें में धर्म की, १०वें हो तो गुरु या पिता की, प्रश्न लग्न में जो नवमांश हो उसका नवमांशपति बलवान होकर लग्न में हो तो अपने विषय की चिंता, यदि नवमांशपति

प्रश्नलग्न विचार

१६०

का मित्र बलवान होकर स्थित हो तो मित्र की, यदि नवमांश पति का शत्रु बलवान होकर स्थित हो तो शत्रु-चित्त।

४६) परदेशी के आने का विचार

⇒ यदि चर राशि या चर लग्न, पू से आगे षष्ठादि नवांश से प्रश्न का लग्न हो तो प्रवास चिंता और प्रवास ^{का} होगा। यदि लग्न से उर्वे भाव स्थित भौमादि ग्रह प्रश्नकाल में उस स्थान को त्याग करके आगे जाने वाले हो, और फिर वक्र गति हो उस स्थान में न आएँ तो प्रवास चिंता और प्रवासी लौट आयेगा। यदि वक्री होकर लौट आएँ तो प्रवासी घर लौटने वाले।

४७) प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है

⇒ प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है इस प्रश्नोत्तर में यदि लग्न से उर्वे स्थान में सू, मं, शु, हो किसी दूसरी स्त्री से प्रश्नकर्ता का संयोग। गुरु हो तो अपनी स्त्री से संयोग। बुध या चन्द्र हो तो वेश्या (रण्डी) के साथ संयोग। शनि हो तो अन्त्यज (जींच) वर्ण की स्त्री के साथ संयोग।

स्त्री की अवस्था का प्रमाण चन्द्र के वलय, युवा, वृद्ध के अनुसार करें।

४८) रोगी फरदेस में उसका विचार

⇒ प्रवासी के कष्टादि अवस्था के प्रश्नोत्तर में यदि शनि पाप ग्रह युक्त होकर या दृष्ट होकर प्रश्न लग्न से नवमे स्थान में हो, शुभ ग्रह की दृष्टि विहीन हो तो फरदेसी कष्ट में यदि उपर्युक्त योग के साथ आठवें भाव में हो तो परदेसी की मृत्यु।

४९) प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी तो विचार

⇒ यदि प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी हो तो और लग्न से अष्टम

प्रश्नलग्न विचार

१६१

स्थान में सूर्य शुभग्रह से युक्त होकर तो पिता अज्य देश में चला गया है। यदि शुभग्रह योग न हो तो उसी स्थान में रहें।

४७) नष्ट वस्तु का स्वरूप और चोर की दिशा वस्था और स्वरूप जिन विचार

⇒

प्रश्न लग्न विचार

१६

પ્રશ્ન લગ્ન વિચાર

૧૬૭

भावों की त्रिकोणादि संज्ञाएं

- १) त्रिकोण - ५, ८
- २) केन्द्र - १, ४, ७, १०
- ३) पञ्चक - २, ५, ८, ११
- ४) ओषो सिलस - ३, ६, ९, १०
- ५) मारक - २, ७

स्त्री संबंधी पालादेश

१६६

स्त्री संबंधी फलादेश

१३०

नवमांश

एक राशि के नौवें भाग को नवमांश कहते हैं। एक नवमांश 2 अंश 30 केला का होता है। नवमांश इस क्रम से चलते हैं :-

मेष का पहला नवमांश - मेष

मेष का दूसरा नवमांश - वृष

मेष का नवां नवमांश - धनु

वृष का पहला नवमांश - मकर इत्यादि [स्त्री जातक विज्ञान]

वर्गोत्तम नवमांश - चर राशि का पहला, स्थिर का ^{पाँचवा} ~~द्वितीय~~, द्विस्वभाव का ~~तृतीय~~ नवमांश वर्गोत्तम नवमांश है। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिशांश - निश्चम राशियों में पहले 5 अंश मंगल के, अगले 5 राशि के, अगले 7 अंश गुरु के, अगले 7 अंश बुध के तथा अगले 5 अंश शुक्र के त्रिशांश होते हैं। अर्थात् अगब कोई ग्रह अंश 8 में है तो वह मंगल के त्रिशांश में है।

सम राशियों में पहले 5 अंश शुक्र के, अगले 7 अंश बुध के, अगले 7 अंश गुरु के, अगले 5 अंश शनि के, अगले 5 अंश मंगल के त्रिशांश हैं। [स्त्री जातक विज्ञान]

ग्रहों की अवस्थाएँ

- 1) शिशु अवस्था - 2 से 8 अंश तक
- 2) युवा अवस्था - 9 से 22 अंश तक
- 3) वृद्धावस्था - 23 से 28 अंश तक
- 4) मृतावस्था - 29 से 30 अंश तक [स्त्री जातक विज्ञान]

ग्रहों का शुभाशुभत्व

- १) शुभ ग्रह - पूर्ण चन्द्र, शुभ ग्रह युक्त बुध, गुरु, शुक्र
- २) अशुभ ग्रह - क्षीण चन्द्र, पाप ग्रह युक्त बुध, सूर्य, शनि, राहु, केतु
- ३) क्रूर ग्रह - सूर्य, मंगल, शनि क्रम से कम क्रूर
- ४) पाप ग्रह - शनि, मंगल, सूर्य क्रम से कम पापी

[स्त्री जन्म विज्ञान]

स्त्री फलादेश में राशिफल

मेष ⇒ राशि हो तो वह स्त्री सुन्दर, पति प्रिया, गुरुजन-सेविका।

वृष ⇒ राशि में हो वह स्त्री सुशीला, पुत्रवती, विचारशील, विद्या सम्पन्न, पति प्रिया, धनवती, तन्त्रशास्त्र में विश्वास।

मिथुन ⇒ राशि में हो तो वह गुणवती, रूपवती, सुन्दरनेत्र, सुन्दर, सुशीला, परोपकारिणी, धन धान्य सम्पन्न।

कर्क ⇒ राशि हो तो स्त्री शत्रु रहित, मानवती, आप्तजनो में प्रिय, ब्राह्मणों व देवतों की भक्त।

सिंह ⇒ राशि में स्त्री परम सुंदरी, वस्त्राभूषण युक्त, क्रूर, माँसाहारी।

कन्या ⇒ राशि हो तो स्त्री शुद्ध आचरणवाली, शत्रु विजयी, जमाशील, धन एवं पशु युक्त, पति प्रिया।

तुला ⇒ राशि हो तो स्त्री व्रत सम्पन्न, सुन्दर, पुत्रवती, बन्धुवर्ग से अनुरागी, पतिव्रता।

वृश्चिक ⇒ राशि हो तो स्त्री निरामिमानी, धनवती, कार्यकुशल, ज्येष्ठ सदस्यों की प्रिया होती है।

धनु ⇒ राशि हो तो स्त्री दानी, विनयशील, प्रेम करने वाली, व्रत सम्पन्न, गीति प्रिया, कन्या-सन्तति।

मकर ⇒ राशि में स्त्री सुन्दर, सत्याप्रिय, गम्भीर, विद्यावती, नीतियुक्त, नियमित स्वभाव, शत्रु विजयी।

कुम्भ ⇒ राशि हो तो रूपवती, सुन्दर, दानशील, सत्कर्म, संपत्तिशील, संतानवती, उन्मिममनी।

स्त्री संबंधी फलादेश

मेष राशि हो तो सुन्दर, सुशील, धार्मिक, लज्जायुक्त, माननी, पुत्रवती
कला- निपुण। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिशांश फल [केवल स्त्रियों के लिए]

लग्न तथा चन्द्र में जो बली हो वह यदि मेष, वृश्चिक राशि में हो और यदि

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या दुश्चरित्रा विवाह से पूर्व पर-पुरुष गायन करती है।

२) बुध के त्रिशांश में हो तो मायाविनी।

३) गुरु के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता।

४) शुक्र के त्रिशांश में यदि हो तो दुष्ट कर्मी।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो दासी, कुंआरी रहती है।

वृष, तुला राशि में हो तो और यदि

१) मंगल का त्रिशांश हो तो दुश्चरित्रा

२) बुध त्रिशांश में हो तो समस्त कला निपुण, संगीत वादन की ज्ञाता

३) गुरु के त्रिशांश में हो तो गुणवती, गीत-वाद्य-नृत्य-चित्रकारी शिल्प आदि कलाओं में प्रवीण होती है।

४) शुक्र के त्रिशांश में हो तो सर्व गुण युक्त, शीलवती।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्भू अर्थात् पति के मरण जाने पर अथवा उसके रहते दूसरे पुरुष को बैठ जाती है।

मिथुन, कन्या राशि में हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी स्त्री कपटी

२) बुध - गुणवती

३) गुरु - पतिव्रता

४) शुक्र -

५) शनि - नपुंसक पति या स्वयं नपुंसक जैसी आकृति।

स्त्री संबंधी फलादेश

१७५

कर्क राशि में यदि हो और

- १) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्त्री स्वेच्छारिणी, किसी की अधिक न मानने वाली, पर पुरुष गामिनी।
- २) बुध - चित्रकारी, अन्य शिल्पों की जानकार होती है।
- ३) गुरु - शुभ, गुणवती
- ४) शुक्र -
- ५) शनि - पतिघातिनी, पति की हत्यारी

सिंह राशि में हो और

- १) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्वेच्छारिणी, पुरुषों जैसी आकृति।
- २) बुध - दुश्चरित्रा, पुरुषों जैसा स्वभाव
- ३) गुरु - राजपत्नी, महाभाग्य शालिनी
- ४) शुक्र - पर-पुरुष गामिनी, अपवित्र
- ५) शनि - पुरुषों के समस्त प्रमत्त्या, पर पुरुष गामिनी, कुलपट्ट

धनु-मीन राशि में हो और

- १) मंगल के त्रिशांश में हो तो अनेक गुण युक्त
- २) बुध - धनवती, ज्ञानवती
- ३) गुरु - समस्त शुभ गुण युक्ता
- ४) शुक्र -
- ५) शनि - अल्प-कामवत्सना, अल्प रति

मकर-कुम्भ राशि हो और

- १) मंगल का त्रिशांश हो तो दासी
- २) बुध - दुष्ट, खोटी बुद्धि

३) गुरु - पतिव्रता

४) शुक्र - बन्ध्या

५) शनि - नीच व्यक्ति से प्रेम, सहवास [स्त्री जातक विज्ञान]

नवमांश फल [स्त्रीजातक विज्ञान]

सप्तम भाव में निम्नलिखित हों या इस प्रकार

१) सप्तम भाव में सूर्य की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति विद्वान्, लेखक, विचारक, अधिकारी, कोमल, ऊँचा शरीर, मन्द रतिकरने वाला, व्यवसायी

२) सप्तम भाव में चन्द्र की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति दयालु, कोमल, शीलवान्, धनी, व्यवसायी, विद्वान्, अत्यंत कामी।

३) सप्तम भाव में मंगल की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति कृषक, जीर्णदार, क्रोधी, हिंसक, व्यसनी, नीच, धनी, अनेक स्त्रियों की चाह रखने वाला होता है।

४) सप्तम भाव में बुध की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति कवि, लेखक, सम्पादक, शोधकर्ता, विद्वान्, चतुर, मायावी, न्यायधीश, कामी, रतिज्ञ, धनी, सर्व कला कुशल होता है।

५) सप्तम भाव में गुरु की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति जितेन्द्रिय, तेजस्वी, गुणवान्, विशेषज्ञ, धर्मार्त्ता, प्राचीन परम्पराओं का पोषक, लोभी, छिडछिडा, व्यापी, सेवा परायण, मन्त्री, न्याधीश, पत्नी भक्त होता है।

६) सप्तम भाव में शुक्र की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, भोगी, गुणवान्, सौभाग्यशाली, सबका प्रिय होता है।

७) सप्तम भाव में रश्मि की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सामान्य धनी, मूर्ख, वृद्ध, आलसी, क्रोधी, व्यसनी, छिडछिडा होता है।

स्त्री संबंधी फलादेश

१७७

८) यदि सप्तम भाव में मंगल का नवमांश, शुक्र की राशि की दृष्टि युक्त हो तो ऐसी स्त्री के गुप्तांग में रोग।

९) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह का नवमांश शुभ ग्रह की दृष्टि से युक्त होकर हो तो ऐसी स्त्री का गुप्तांग अति सुन्दर।

१०) यदि सप्तम भाव तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों, आवे भाव की स्वामी जिस ग्रह के नवमांश में बैठा हो उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में वह स्त्री विधवा हो जाती है।

११) यदि शुभग्रह शुद्ध होकर (चार) नवमांश कुण्डली में केन्द्रस्थ हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत धनी।

१२) यदि मंगल और शुक्र एक दूसरे के नवमांश में हों तो ऐसी स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है।

१३) यदि लग्न में वृष या तुला राशि ^{कुम्भ} हो, उसमें शुक्र का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री पुरुषाकृति बनाई हुई और दूसरी स्त्री के द्वारा अपनी कामाग्नि शान्त करती है।

१४) यदि शुक्र - राशि एक दूसरे के नवमांश में हों, आपस में इनका दृष्टि-संबंध हो तो उपर्युक्त फलादेश।

१५) यदि शुक्र मंगल एक दूसरे के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

१६) यदि चन्द्र, राशि या मंगल के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पति के प्रति विश्वासघासी, दुराचारीणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

१) लग्नस्थ ग्रहराशि का फल

१) यदि लग्न और चन्द्र समराशि में हो ~~और~~ तो स्त्री, स्त्रियों जैसी आकृति वाली, सुन्दरी, अलंकार युक्त, शीलवती, पतिप्रिया, पतिव्रता होती है।

यदि शुभ ग्रह दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, वस्त्राभूषण युक्त, शीलवती, शुभगुण सम्पन्न होती है।

यदि क्रूर ग्रह ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री मध्यम स्वभाव वाली।

२) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुषों जैसी आकृति वाली, दुराचारिणी, पुर पुरुष गामिनी होती है।

यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री क्रूर स्वभाव वाली होती है।

यदि क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री दुष्टा, पाणिना, बुरे कार्य करने वाली, व्यभिचारिणी होती है।

३) यदि लग्न में चन्द्र और शुक्र दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ईर्ष्यायुक्त, दूसरों को संताप देने वाली परन्तु स्वयं सुखी।

४) यदि लग्न में चन्द्र और बुध-ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री कला-निपुण, सुन्दरी, सबको प्रिय, सुखी, गुणवती, गायन-वादन में कुशल।

५) यदि लग्न में बुध और शुक्र-ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री रूपवती, सौभाग्यवती, कला-कुशल होती है।

६) यदि लग्न में स्वराशिस्थ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र-ये ग्रह बली हों तो जातक अनेक शास्त्रों में निपुण।

स्त्री संबंधी फलादेश

१७६

७) यदि लग्न में (क) चन्द्र, बुध, शुक्र (ख) बुध, गुरु, शुक्र (ग) बुध, गुरु और चन्द्र इन तीनों ग्रहों की युति हो तो ऐसी स्त्री वस्त्रालंकार युक्त, धनवती, रूपवती, गुणवती, सर्वप्रिय, सुखी होती है।

८) यदि लग्न में केवल शुभ ग्रह हों तो ऐसी स्त्री अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण युक्त सुखी होता है।

९) यदि लग्न में केवल पाप ग्रह हों तो ऐसी स्त्री दुखी, दरिद्र होती है।
[स्त्री जातक विज्ञान]

१०

२) राजयोग

१) यदि सप्तम भाव में शुक्र, अन्य शुभ ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्याशाली

२) यदि लग्न में चन्द्र, दशम में बुध, ११वें सूर्य हो तो जातक के अनेक पुत्र-पौत्र

३) यदि लग्न में उच्च का बुध, द्वितीय भाव में शुक्र, दशम भाव में चन्द्र, ११वें भाव में सूर्य हो तो ऐसी स्त्री सभाज में राजपत्नी के समान ऐश्वर्याशाली होती है।

४) यदि लग्न में गुरु, सप्तम चन्द्र, दशम शुक्र हो तो ऐसी स्त्री नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी रानी, ऐश्वर्याशाली।
के समान

५) यदि लग्न में कर्क राशि का गुरु या मीन का शुक्र हो तथा मंगला राशि में बुध हो, सप्तम भाव में मंगल उच्चस्थ हो तो स्त्री को अत्याधिक सुख प्राप्ति।

६) यदि लग्न में कन्या राशि हो और उसमें बुध, शुक्र की युति हो

स्त्री संबंधी फलादेश

120

तथा वृष राशि का चन्द्र हो अथवा कर्क या मीन राशि का गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

9) यदि लग्न में उच्चस्थ बुध तथा एकावश भाव में गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी होती है।

10) यदि चतुर्थ भाव में उच्च का चन्द्र हो तो गुरु से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

11) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि हो तथा सूर्य एवं गुरु की दृष्टि पूर्ण हो तो ऐसी स्त्री पुत्र-पौत्रादिक सुख से सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली।

12) यदि सप्तम भाव में मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ राशि का चन्द्र हो तथा केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

13) यदि 11 वें भाव में चन्द्र हो, सप्तम भाव में बुध तथा शुक्र हो, गुरु की उन पर दृष्टि हो तो स्त्री अत्यंत सुखी।

14) यदि लग्न, 2, 5, 8 वें - इन्हें छोड़कर अन्य किसी भाव में चार शुभ ग्रह हो तो राजयोग कारक होते हैं।

15) यदि केन्द्र में कोई राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो तथा सप्तम भाव में मेष, मिथुन, कन्या, कुम्भ राशि में पाप ग्रह युक्त हो तो विशेष राजयोग।
[स्त्री जातक विज्ञान]

३) शुभ योग

१) यदि ज्वे, टवे स्थान में शुभग्रह को दृष्टि हो अथवा शुभग्रह युक्त हो तो स्त्री सौभाग्यशाली, पतिव्रता, पवित्र।

२) यदि सप्तम तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों परन्तु नवम भाव में शुभ ग्रह हो तो स्त्री पति-पुत्र युक्त, सुखी।

३) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि गत चन्द्र गुरु हों तो स्त्री अत्यंत सुंदर।

४) सप्तम भाव में सम राशि हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री पुण्यात्मा एवं राजमान्य।

५) यदि सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री सुंदर, संगीत कला में निपुण होती है।

६) यदि सप्तम भाव में बुध तथा चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री सब कलाओं को जानने वाली, गुणवती, सुखी होती है।

७) यदि सप्तम भाव में शुक्र और बुध हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, सब कलाओं को जानने वाली, भाग्यवती।

८) यदि सप्तम भाव में शुक्र और चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री सुंदर, सुखी, ईर्ष्यालु होती है।

९) यदि केवल षड्वर्ग में शुक्र केतु बैठे हों तथा चन्द्र दृष्टि युक्त हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, स्थूल नितम्ब, धन-पुत्रादि युक्त, सुखी, ऐश्वर्याशालिनी होती है।

स्त्री संबंधी फलादेश

1722

१०) यदि केवल लग्न का उदय हो, सप्तम भाव में सूर्य गुरुद्वि युक्त हो तो ऐसी स्त्री अप्सराओं में प्रधान, रानी के समान सुन्दर, स्वस्थ, ऐश्वर्याशालिनी, पुत्र-पौत्रादि युक्त होती है।

११) यदि शुभग्रह केन्द्र में हो तथा पाप ग्रह छठे, नवें एवं १२वें भाव में हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर, धनवती, गुणवती, पुत्रवती, ऐश्वर्याशालिनी होती है।

१२) यदि षड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केन्द्र में हों तो ऐसी स्त्री रानी होती है।

१३) यदि बुध उच्च का होकर लग्न में हो, गुरु ११वें भाव में हो तो ऐसी स्त्री राज-पत्नी होती है।

१४) यदि वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन राशि में मंगल, बुध, गुरु व शुक हों तो ऐसी स्त्री बड़ी बिकुपी, साध्वी, गुणवती, पुत्रवती। स्त्री जात विज्ञान

४) अशुभ योग

१) यदि सप्तम भाव में पापग्रह से दृष्ट राशि हो तो ऐसी स्त्री युवावस्था में वृद्ध हो जाती है।

२) यदि सप्तम भाव में पाप-ग्रह हो तो ऐसी स्त्री केशहीन।

३) यदि जन्म समय चन्द्र, गुरु, शुक बलहीन हो, शनि मध्यम बली हो सूर्य, मंगल, बुध बलवान होकर लग्न में किसी राशि में हो तो स्त्री पुरुषों के समान प्रख्यात।

४) यदि लग्न में चन्द्र-मंगल का योग हो तो ऐसी स्त्री कामाक्षिक

स्त्री संबंधी फलादेश
धर्म अव्यवस्थित होता है।

१८३

५) यदि लग्न में चन्द्र-राहु हो तो ऐसी स्त्री को हिंसीरिया होता है।
(स्त्री जातक विज्ञान)

५) पति त्याग योग

१) यदि सप्तम भाव में एक पाप ग्रह बलहीन बैठा हो तथा उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि भी न हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग कर देता है।

२) यदि सप्तम भाव में सू०, मं०, शु० हीनवली हों और वे शुभग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग देता है। (स्त्री जातक विज्ञान)

६) दुराचारिणी योग

१) यदि लग्न में विषम राशि हो शनि मध्य बली हो एवं च०, शु० तथा बु० बलहीन हों एवं सू०, मं०, शु० बलवान हों तो ऐसी स्त्री बेह पुरुष गामी होती है।

२) यदि मं० अथवा श० की राशि लग्न में हो और उसमें चन्द्र सहित शु० बैठा हो तथा वह पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री पर पुरुष गामिनी होती है।

३) यदि सप्तम भाव में कर्क अथवा सिंह राशि हो और उसमें शनि के सहित मं० बैठा हो तो ऐसी स्त्री यदि उत्तम कुल में जन्मी हो तो भी वह विधवा होकर अथवा कपट से पति को त्याग कर वेश्या तथा व्यभिचारिणी होती है। ऐसी स्त्री दुष्टा तथा धनी होती है।

४) यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह बैठे हो तथा पापग्रह की

स्त्री संबंधी फलादेश

928

दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री पति सुखसे वधित। वह चंचल नेत्रों वाली तथा दुराचारिणी होती है।

५) यदि सप्तम भाव दो पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री नीच तथा दुराचारिणी।

६) यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह दृष्ट शुरू हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से जारकर्म करती है।

७) यदि सप्तम भाव में कर्क का माल हो तो उपर्युक्त योग

८) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह बलहीन हों तथा उनके साथ पापग्रह भी हो तो ऐसी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अंगीकर करती है।

९) यदि सप्तम भाव तीन पापग्रहों से युक्त, दृष्ट हो तो उपर्युक्त योग

१०) यदि लग्न में मेष, मकर, वृश्चिक, कुम्भ तथा उसमें चन्द्र, शुक्र दोनों ही बैठे हों तथा उन पर पापग्रह की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पक्ष-पुरुष गमन करती है।

११) यदि सप्तम भाव में चंग, मंग हो तो ऐसी स्त्री पक्ष-पुरुष गमन करती है।

१२) यदि राहु सप्तम भावस्थ हो तथा सप्तमेश का राहु से इत्यशा न्न योग बनता हो तो ऐसी स्त्री आचरहीन, पति का परित्याग करने वाली होती है।

स्त्री संबंधी फलादेश

१८५

१३) यदि शुक्र द्वितीयेश होकर राहु से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारी

१४) यदि मंगल द्वितीयेश होकर शनि से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारी

१५) यदि अष्टम भावस्थ मंगल हो तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी।

१६) यदि अष्टम भावस्थ राहु हो तो ऐसी स्त्री धर्म विहीन,
पुरुषगामिनी।

१७) लग्न या चन्द्र से २रे या १२वें स्थान में पाप ग्रह हो और
बड़े शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री अपने पिता, ससुर के कुल
को कलंकित करनेवाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

~~१८)~~

७ विवाह सम्बन्धी योग

१) यदि सप्तम भाव में शनि, लग्न तथा चतुर्थ में मंगल छंश
त्क हो तो ऐसी कन्या प्रायः कुमारी।

२) यदि सप्तमेश पाप ग्रह युक्त अथवा पाप दृष्ट हो तथा सप्तम
भाव में पाप ग्रह हो तो ऐसी कन्या प्रायः कुमारी।

३) यदि लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव में शनि पाप ग्रह दृष्टि युक्त
हो तो ऐसी कन्या अविवाहिता शुभ ग्रह हो तो लंबी आयु में विवाह

४) यदि शनि सप्तमेश के साथ हो तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में

५) यदि सूर्य-दर्शन का उत्पन्न हो तो प्रेम विवाह।

६) जिस स्त्री के सप्तम भाव में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हो

स्त्री संबंधी फालादेश
को विवाह होते हैं।

१८६

७) यदि लग्नेश अथवा सप्तमेश छठे-आठवें या दूजे-बारवें स्थान में हो तथा अष्टमेश पापग्रह से पीड़ित हो तो विवाहित जीवन दुःखमय तथा पति द्वारा परित्याग की संभावनाएं।

८) यदि जन्मकाल में सप्तमस्थ सूर्य हो तो पति द्वारा परित्याग की संभावना।

९) यदि सप्तम भाव बलहीन पापग्रह युक्त तथा दृष्ट हो तो वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण तथा पति त्याग संभावना प्रबल।
[स्त्री जाति विज्ञान]

८) पति संबंधी योग

१) यदि सप्तम भाव में मीनका शुक्र हो तो ऐसी स्त्री का पति सुंदर, कमलाश्रित, शूरवीर तथा शास्त्रधारी होते हैं।

२) यदि सप्तम भाव में बुध, शनि की युक्ति हो तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक।

३) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में बुध अथवा शनि हो तो स्त्री का पति नपुंसक।

४) यदि जन्मलग्न चर राशि हो तो पति प्रवासी।

५) यदि लग्नेश, तृतीयेश चर राशि में हो तो पति प्रवासी।

६) यदि जन्मलग्न अथवा चंद्र से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल ग्रह हो अथवा सप्तम भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि

स्त्री संबंधी फलदेश

न हो तो ऐसे योगवाली स्त्री का पति निरुद्यमी, निन्ध होता है। 979

9) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में चर राशि हो तो ऐसी स्त्री का पति सदैव पर देश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो तो विपत्ति

10) यदि पति का जन्मकालीन सूर्य पत्नी के जन्मकालीन सूर्य से 10 अंश के भीतर प्रतियोग करता हो तो उनमें जीवन भर परस्पर स्वभाव-वैषम्य रहता है अथवा दोनों में से एक अल्पायु होता है।
[स्त्री जातक विज्ञान]

8 वन्ध्या योग

1) यदि पंचम भाव में पापग्रह की राशि हो तथा पंचम भाव पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या।

2) यदि लग्न में मेष, वृश्चिक, मकर राशि हो और उन पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या [स्त्री जातक विज्ञान]

9 वन्ध्या योग

1) लग्न और चन्द्र में सीजी बलवान हो, उसमें सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

2) यदि अष्टम भाव में क्रूर अथवा पापग्रह हों तो वह वैधव्य काशक होता है।

3) यदि सप्तमेश अष्टम भाव में हो, अष्टमेश सप्तम भाव में हो तो और एक या दोनों स्थान पापग्रह से दृष्ट हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

स्त्री संबंधी फलादेश

१८८

४) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम और अष्टम भाव में दया
४ पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

५) यदि लग्न अथवा सप्तम-दोनों भावों में पापग्रह हों तो ऐसी
स्त्री विवाह के ७-८ वर्ष बाद ही विधवा।

६) यदि चन्द्र से सातवें, आठवें तथा १२वें भाव में शनि तथा
मंगल-दोनों बनें हों और वे पापग्रह दृष्ट भी हों तो ऐसी स्त्री
विवाहोपरांत शीघ्र विधवा।

७) यदि चं० से ७वें भाव में मं०, शं०, रा०, सू० इन चारों में से कोई
भी दो ग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

८) यदि सप्तम भाव में पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

९) यदि त्रीण अथवा नीच या असंगत राशि का चन्द्र दया ८वें
भाव में हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१०) यदि सप्तम भाव में २० हो तथा सभी पापग्रह उसे देखते हों
तो ऐसी स्त्री या तो कुमारी, अगर विवाह हो जाए तो पति की शीघ्र
मृत्यु। स्त्री अपने पति की विरोधिनी।

११) यदि सप्तम भाव में पापदृष्ट मंगल हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१२) यदि द्वितीय अथवा सप्तम भाव में पापग्रह हों तो भी वैधव्ययोग।

१३) यदि सप्तमेश अथवा अष्टमेश अष्टम भाव में पापग्रह से दृष्ट
या युत हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

स्त्री संबंधी फलादेश

१८६

१४) यदि अष्टम भाव में राहु तथा चन्द्रमा हो और वे पापग्रह से दृष्ट हो तथा सप्तमेश क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१५) यदि सप्तम भाव में एक सप्तमेश शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न होकर दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१६) यदि लग्नेश अथवा अष्टमेश की द्वादश भाव में युति हो तथा अष्टम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१७) यदि सप्तम भावस्थ राहु तथा लग्नस्थ मंगल शुभग्रह दृष्टि से हीन हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१८) स्त्री तथा पुरुष - दोनों के नाम के अक्षरों को दुगुना करने, मात्राओं को चार गुना करें। फिर सबमें तीन का भाग दें। यदि दो शेष रहें तो पहले स्त्री की मृत्यु होगी और एक अथवा शून्य बचे तो पति की मृत्यु। लघु में १, दीर्घ में २, प्लु में ३ मात्राएं होती हैं।

१९) यदि लग्न में पापग्रह युक्त राहु हो तथा अष्टम भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२०) यदि आठवें या द्वादश भाव में मेष या वृश्चिक राशि का राहु हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

२१) यदि लग्न से ७वें, ८वें भाव में शूभ, मं, शं, राहों तो स्त्री विधवा।

२२) यदि लग्न तथा सप्तम भाव में पापग्रह हों तथा ६वें तथा ८वें

स्त्री संबंधी फलदेश

१६०

भाव में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री विवाह के आठवें वर्ष विधवा।

२) यदि लग्न में सूर्य, मं०, रा० हो तो स्त्री विधवा। ~~उक्त~~ इस योग के साथ द्वितीय भावस्थ शुक्र भी हो तो दूसरा पति।
[स्त्री जातक विज्ञान]

११) विष कन्या योग

विष कन्या योग वाली स्त्री शोक सन्तप्ता, हत भाग्या, वस्त्रालंकार रहित होती है।

१) यदि लग्न में शनि, पंचम में सूर्य तथा नवम भाव में मंगल हो तो विष कन्या योग।

२) रविवार के दिन द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, मंगलवार को शतभिषा नक्षत्र तथा सप्तमी, रविवार को द्वादशी एवं विशाखा नक्षत्र हो तो विष कन्या योग।

३) द्वादशी, शतभिषा, रविवार, द्वितीय, आश्लेषा, मंगलवार, सप्तमी, कृतिका, शनिवार में जन्म हो तो विष कन्या योग।
[स्त्री जातक विज्ञान]

१२) सन्तति योग

१) यदि लग्न में वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि हो तो ऐसी स्त्री के कम पुत्र।

२) यदि लग्न में उक्त राशियाँ हों और उनमें शुभग्रह स्थित हों तो ऐसी स्त्री की सुंदर संतानें।

३) यदि पंचम भाव में शुभग्रहों की दृष्टि या योग हो तो स्त्री अधिक संतानों को जन्म देती है।

स्त्री सैवंधी फलोदेशः

१६१

- ४) यदि पंचम भाव में धनु या मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसे योग वाली स्त्री के संतान नहीं होती।
- ५) यदि पंचम भाव में सब शुभ ग्रहों हों या उनकी दृष्टि हो तो अधिक संतान।
- ६) यदि चन्द्र वृष, कन्या, सिंह या वृश्चिक इन में से किसी राशि में स्थित हो तो स्त्री अल्प संतान।
- ७) यदि सप्तम भाव में चं० अथवा बुध हो तो अधिक कन्याएँ।
- ८) यदि पंचम भाव में गुरु या शुक्र हो तो पुत्र अधिक।
- ९) यदि सप्तम भाव पापग्रह की राशि हो अथवा सप्तम भाव पापग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री के या तो संतान नहीं होती या कम होती है।
- १०) यदि पंचम भाव में मं० तथा सप्तम भाव में रा० हो तो संतान का अभाव।
- ११) यदि सप्तम भाव में सूर्य या राहु हो तो ऐसी स्त्री की संतान नहीं रहती।
- १२) यदि अष्टम भाव में शुक्र अथवा गुरु हो तो ऐसी स्त्री निःसंतान।
- १३) पंचम भाव में ग्रह पालः
सूर्य - एक पुत्र, चन्द्र - दो कन्या, मंगल - तीन पुत्र, बुध - चार

स्त्री संबंधी फलादेश

१६२

कन्या, गुरु-पाच पुत्र, शुक्र-सात कन्याएँ।

१४) यदि सप्तम भाव में राहु हो तो संतान अभाव या दो कन्याओं का जन्म।

१५) यदि नवम भाव में शुक्र हो तो ६ कन्याएँ।

१६) यदि वृष, वृश्चिक, सिंह या कन्या-इनमें से किसी भी राशि में चन्द्र हो तो स्त्री अल्प पुत्रवती।

१७) यदि पंचमेश केन्द्रमांश में शनि या गुरु हो तो संतान नहीं।

१८) पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अधिक संतान।

१९) यदि सप्तम भावस्त मंगल शनि दृष्टियुक्त हो तो कम संतान।

२०) यदि पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशिगत शनि या दर्शन हो तो संतान सुख नहीं।

२१) यदि अष्टम भाव में बुध, गुरु, शुक्र हों तो संतान होकर मरझूती।

२२) यदि चन्द्र और बुध अष्टम भावस्त हों तो स्त्री का कन्या या [एक ही संतान को जन्म दे] [स्त्री जातक विज्ञान]

१३) सन्यासिनी योग

१) जिस स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह हो तो वह सन्यासिनी नवम भाव में जो ग्रह बैठा हो उसकी प्रवृत्ति समझनी

स्त्री संबंधी फलादेश

१६३

चाहिए यथा :- सूर्य → तपस्विनी, चन्द्र → कपालिनी, मंगल → रक्त-
वस्त्रधारिणी, बुध → दण्ड-धारिणी, गुरु → यति, शुक्र → चक्र-
धारिणी, शनि → नग्ना।

२) यदि सप्तम भाव पापग्रह युक्त अथवा पापग्रह दृष्ट हो
तथा नवम भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री प्रवासिनी,
सन्यासिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१४) ब्रह्मवादिनी योग

१) जिस स्त्री की कुण्डली में, लग्न में समराशि हो तथा मंगल-
बुध एवं शुक्र बलवान हो, वह पृथ्वी पर विख्यात, अनेक शास्त्रों
की जानकारी तथा ब्रह्मसिद्धा में प्रवीण, ब्रह्मवादिनी होती है।

२) यदि सम राशि में लग्न हो तथा शुक्र, बुध, चन्द्र तथा गुरु
बलवान होकर उसमें बैठे हों, तो ऐसी स्त्री वेद-वेदान्त के
सिद्धांत तथा आगम शास्त्रों के अर्थ को जानने में निपुण
ब्रह्मवादिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१५) तपस्विनी योग

१) यदि सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव के शुभग्रह
हों तो ऐसी स्त्री तपस्विनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१६) मृत्यु संबंधी योग

१) यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि में चन्द्र दो पापग्रहों के बीच
हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु शस्त्र या अग्नि द्वारा होती है।

२) यदि कर्क में शनि तथा मकर में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु
जलोदर रोग से होती है।

३) यदि जन्मकाल में दशम भाव में सूर्य तथा चतुर्थ भूमि में मंगल हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पर्वत से गिरकर।

४) यदि द्वितीय भाव में मंगल, सप्तम भाव में चंद्र, चतुर्थ भाव में शनि हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु कुएं या तालाब में गिरकर।

५) यदि जन्मकाल में सूर्य और चंद्र कन्याराशि में पापग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु बंधना से होती है।

६) यदि जन्मकाल में सूर्य तथा चंद्र धनु, मीन या मीथुन लग्न में हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पानी में डूबकर।

७) यदि लग्न से आठवें स्थान में पापग्रह, द्वितीय में शुभग्रह हों तो उपर्युक्त योग।

८) अष्टमेश जिस ग्रह के नवमांश हो उस ग्रह की दशा-अन्तदशा में मृत्यु।

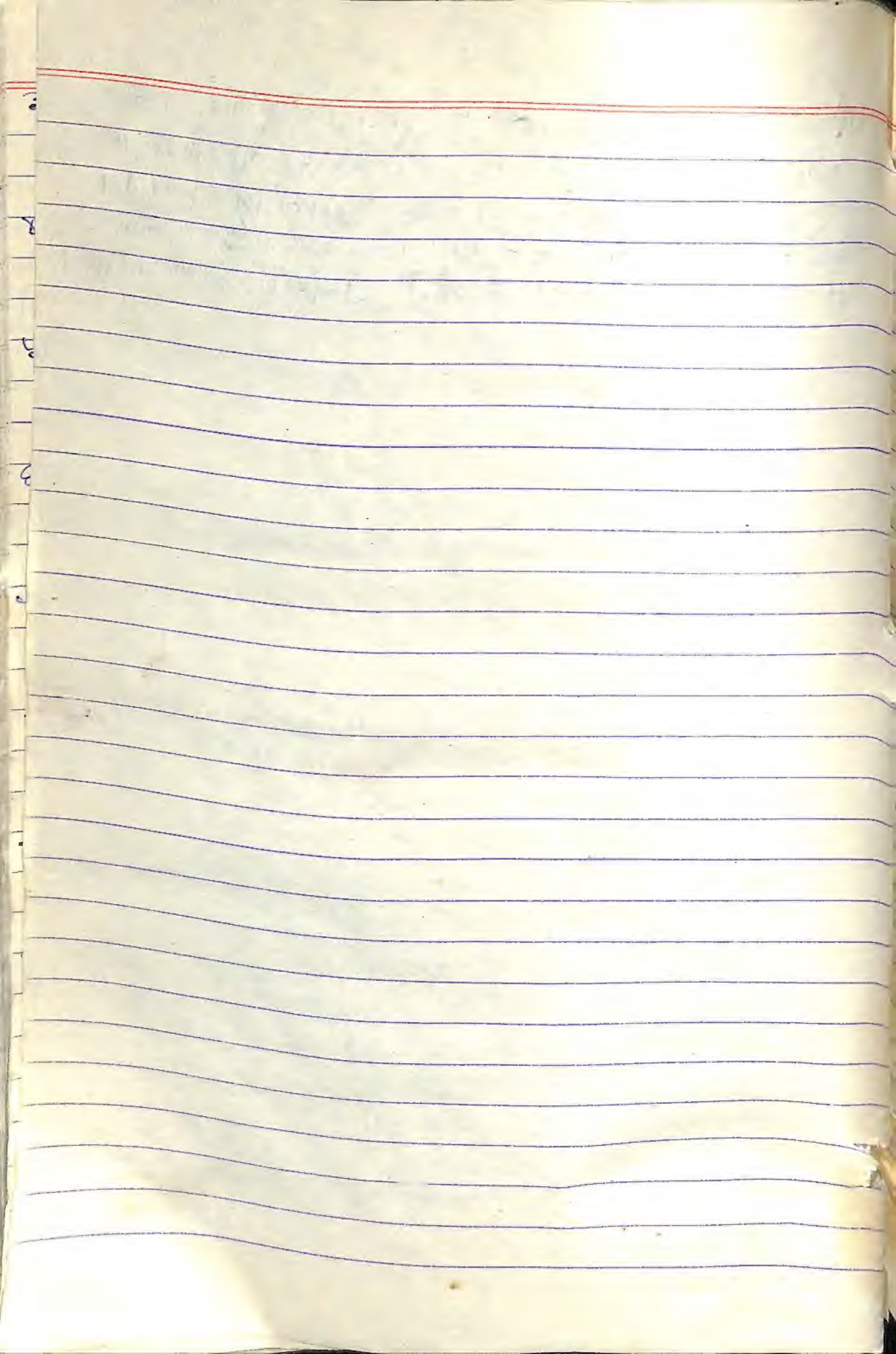
९) यदि लग्न में शुभग्रह हो, द्वितीय तथा द्वादश भाव में भी शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पति से पहले।

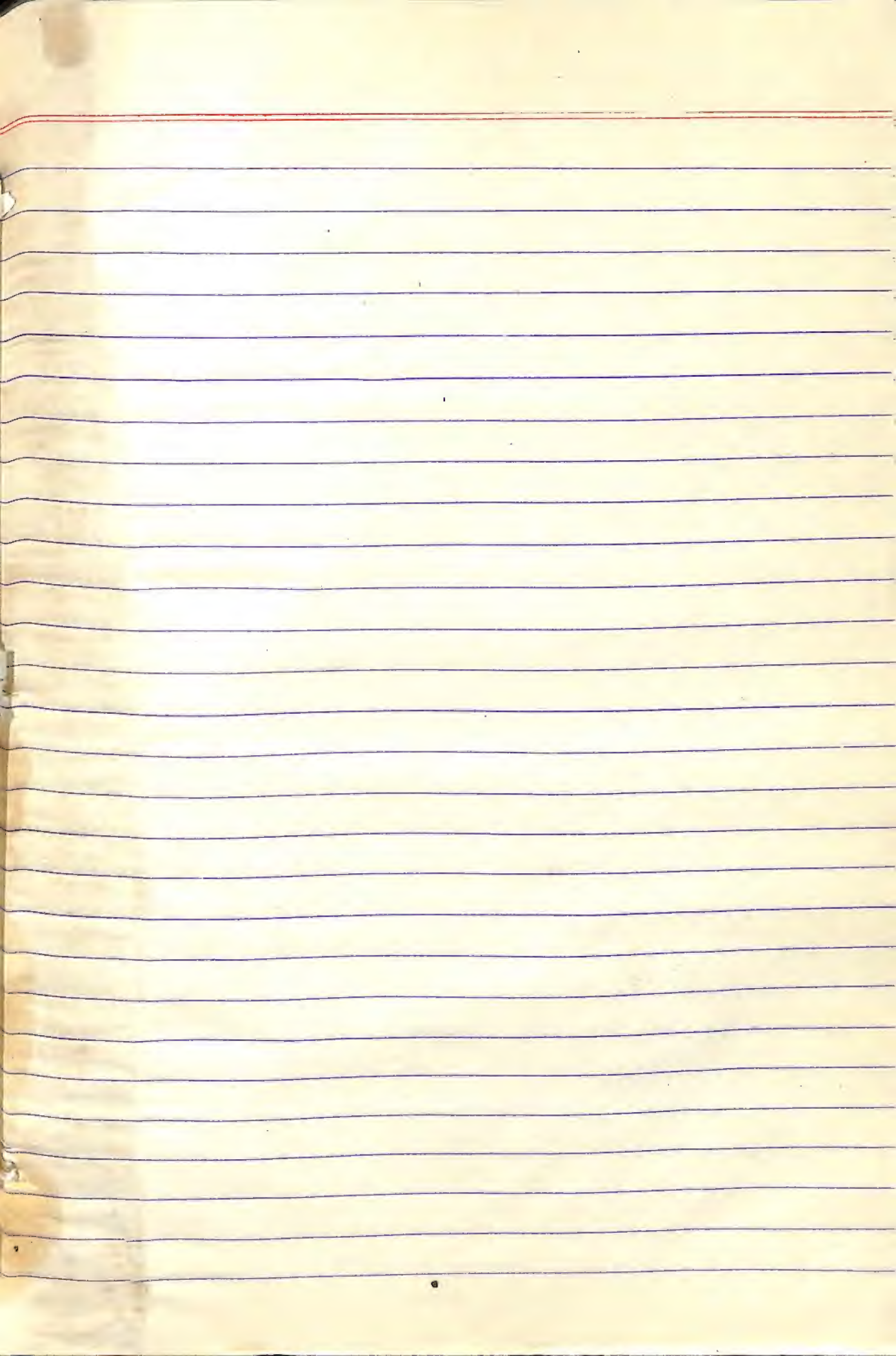
१०) स्त्री की राशि से पति की राशि विषम हो तो पहले स्त्री की, सम हो तो पहले पति की मृत्यु। [स्त्रीजातक विज्ञान]

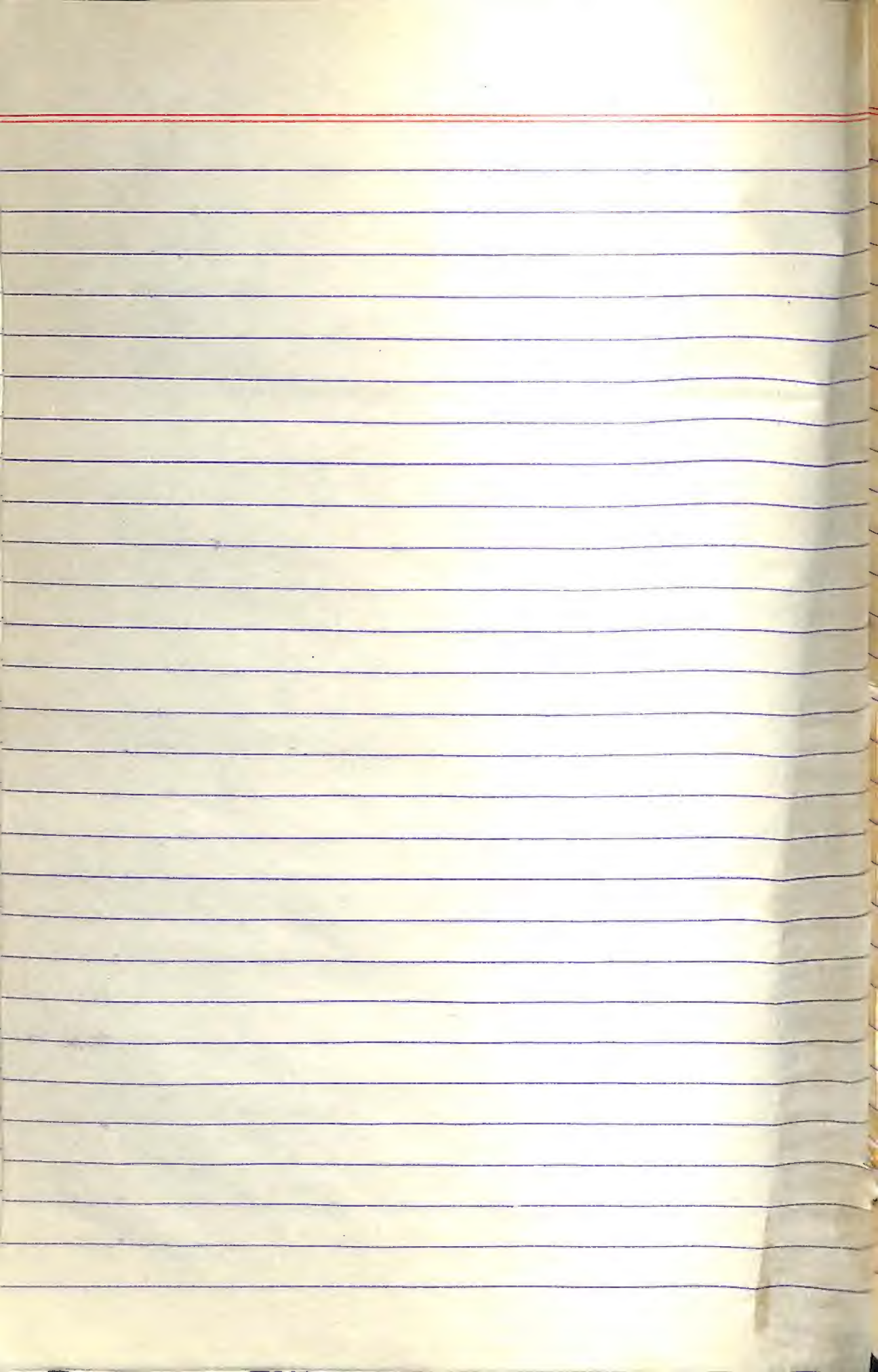
१७ विविध योग

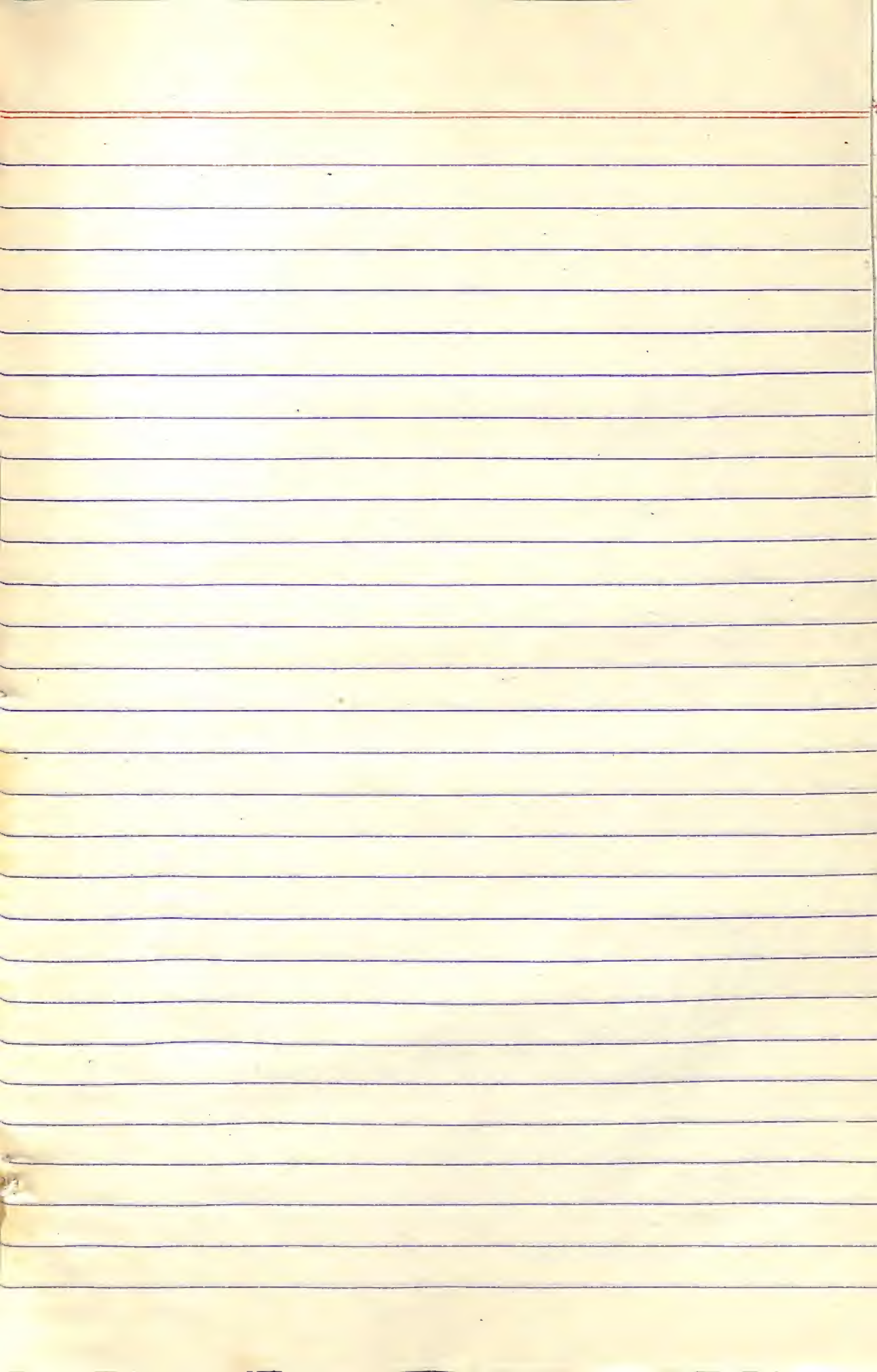
१) स्त्री की गोचर से उपचय स्थान में बलवान चंद्र एवं मंगल स्वप्नोश अथवा स्वराशि आने पर, उस मास व उस दिन में गर्भ स्थिति संभव है।

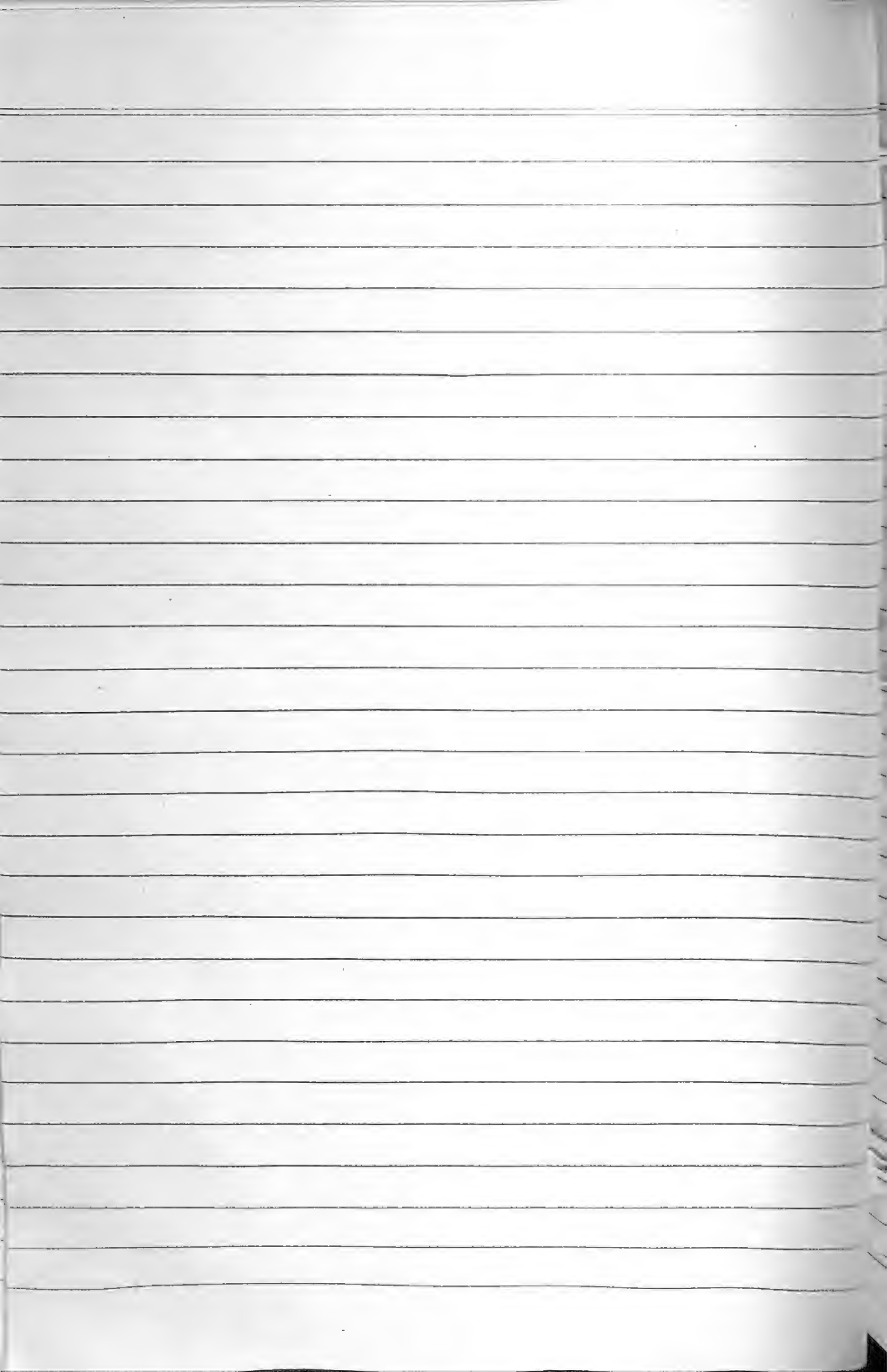
२) यदि कन्या का जन्म तिथि की अंतिम घड़ी में हुआ हो तो वह
रूपहीन, वार की अंतिम घड़ी में हो तो वह बाल्यावस्था
में पुरुष का आश्रय लेती है। जिसका जन्म मत्तत्र की अंतिम
घड़ी में हुआ हो तो वह विधवा। जिसका जन्म भद्रा वारण
में हुआ हो तो पति-पत्नी दोनों को कष्ट। [स्त्रीजातक विज्ञान]

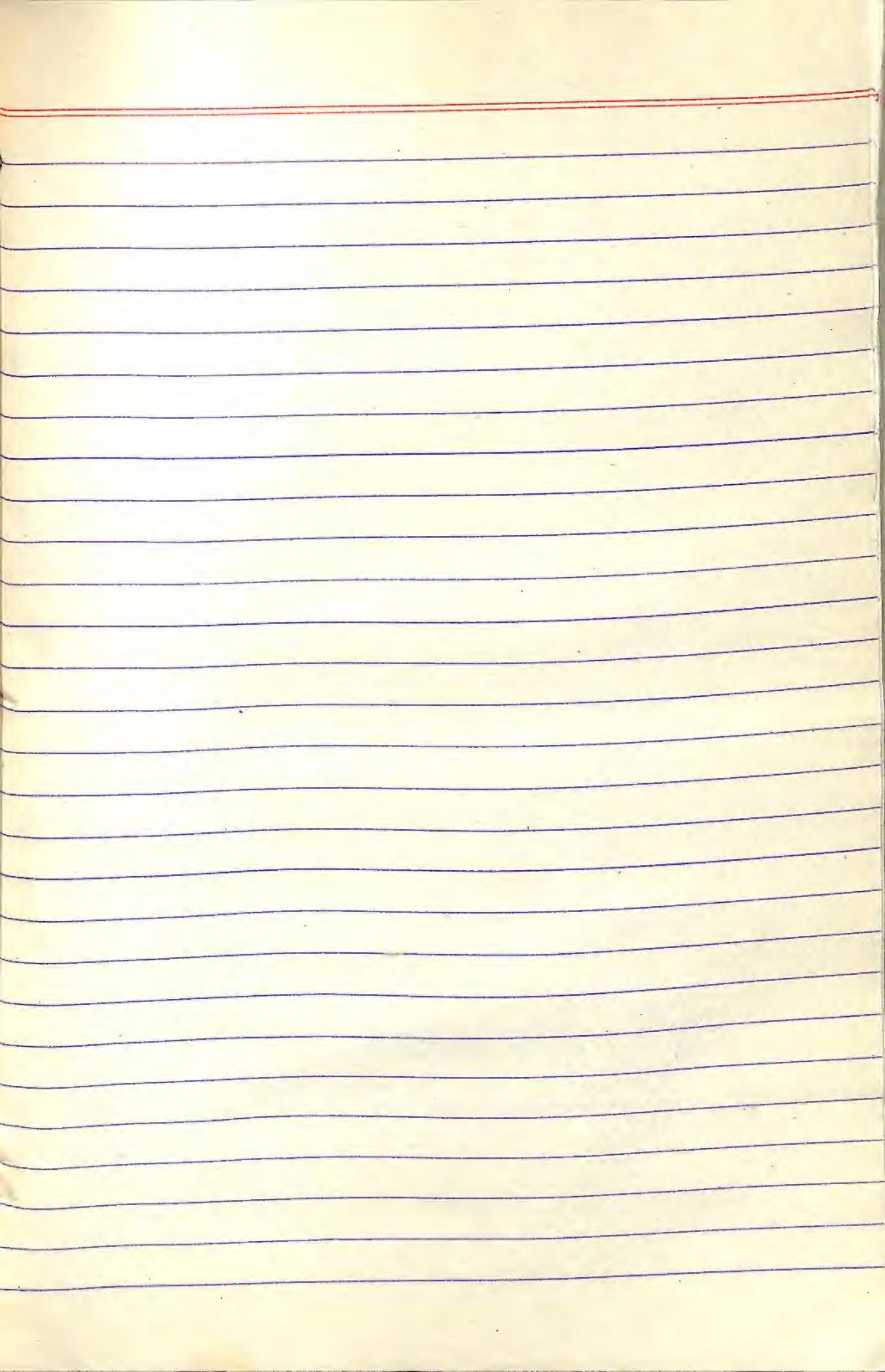


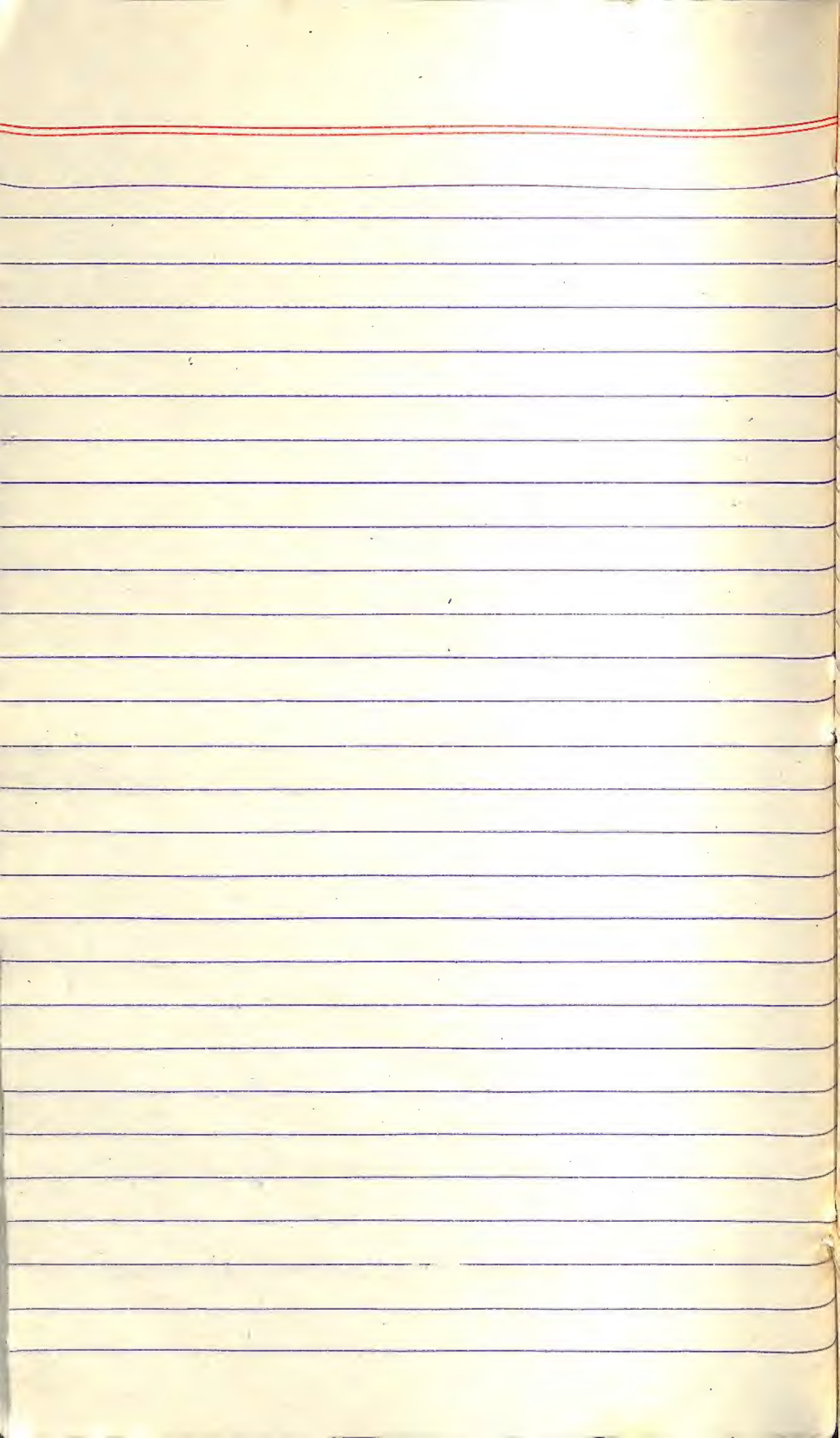














*Always insist on
Fine & Best Quality*

सुन्दर लिखाई की शान

GULSHAN

*Long Note Books &
Exercise Books*

Price Rs.

इन्होंने अपने नाटकों को इन्होंने काफी ख्याति प्राप्त खल हो जाता तो ये होल अपने कुरते को आगे धरते थे। श्रद्धाभाव से पैसा मांगते थे। स्वयं सामने देखकर पैसा देता था। जिस पैसे को लोगों को दान कर देते थे। कपूर जी, सिर्फ नाटकवाले एक उच्च विचार के मालिक बने। 'इशारा' फिल्म बन रही साइन के लिये पृथ्वीराज शर्मा आया। लोकप्रिय 'पुरेया' अपना फिल्मी जीवन शुरू समय ये 35 वर्ष के थे और की थी। तभी ऐसी स्थिति देखी कि 'तुम मेरी बेटा हो' लेकिन

राज जु 12

संतोष कपूर का 'खुशबू'
कमल आर्ट इंटरनशनल की 'खुशबू' जुलाई में सनी चैनल के प्राइम टाइम में शुरू होने जा रहा है। इस धारावाहिक के निर्माता हैं संतोष कपूर। यह एक ऐसी पैसे वाली लड़की की कहानी है जिसके पास 200 करोड़ रुपये की धन संपदा है पर वो साधारण तरीके से जीना चाहती है। इसका निर्देशन किया है स्वप्ना वाधमरे जोशी ने व लिखा है भूषण वनमाली ने तथा संगीत दिया है सपन जगमोहन ने। धारावाहिक के मुख्य कलाकार हैं पूजा रुपारेल, निखिल गवली, राजीव वर्मा, निशीगंधावाड़, उषा नायक, जयति भाटिया, सुधीर दलवी, रवि काले, अली राजा, संगीता कपूर, अतल अय्यकर वगैरह।

-प्रस्तुति : रेखा भाटिया

मेरे कैरियर पर अच्छा प्रभाव ही पड़ा :

जो अपना कतल छोड़कर विदेश में बस जाते हैं व अपने देश की याद आने पर उदास हो जाते हैं। इसमें उन लोगों की कहानी भी बतायी जायेगी जो कुछ दिनों के लिये विदेश अपनों के यहाँ घूमने जाते हैं व क्या अनुभव प्राप्त करते हैं। इस धारावाहिक के मुख्य कलाकार हैं अरुण बाली, संगीता घोष, निकिता मलिक, मीनकी गुप्ता, सिद्धार्थ धवन, धर्मेष्ट व्यास व सर्वेज कपूर। इसका निर्देशन अरुणा ईरानी स्वयं करती। इसके अलावा जी के लिये एक दैनिक धारावाहिक बनाने जा रही हैं 'हथों की लकीरों से', इसका निर्देशक बाहर का होगा।

'आशा भोंसले' के स्वर्णिम 50 वर्ष
ईटीसी चैनल, जो हमेशा ही सर्वोत्तम संगीत प्रस्तुत करने की प्रथा रखता है, अब संगीत की

आफिस पर सफलता नहीं मिली। इसका आपके कैरियर पर क्या प्रभाव पड़ा?

'शराब' प्रदर्शित होगी। उसके बाद 'यकाबक' प्रदर्शित होगी। इसके बाद विलेकी की फिल्म 'फैसला' प्रदर्शित होगी। इसके अलावा कुंदन शाह और शिवम नायर के साथ नयी फिल्में कर रहा हूँ। राम गोपाल वर्मा के साथ मेरा पुराना रिश्ता है। दस साल पहले उनके साथ फिल्म 'शिला' की थी और अब फिर से शुरुआत करने जा रहा हूँ। तिमिशु धुलिया के साथ भी एक फिल्म कर रहा हूँ जिसमें मेरे साथ रिश्ता भट्ट और जिन्नी शरगिल भी है।

आमिर खान की फिल्म 'लगान' में भी खलनायक हैं क्या..?
-नहीं। यह एक अलग तरह का सकारात्मक किरदार है। फिल्म का एक बहुत ही जिम्मेदार किरदार है। चंपारण गांव का एक बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण पात्र है। गांव के सभी लोग उसी की बात मानते हैं। वह गांव का मुखिया नहीं है लेकिन सभी लोग उसकी इज्जत करते हैं। थोड़ा-सा धार्मिक किरदार है। इसाइल



करने से पहले मुझे थोड़ा-सा भ्रम भी था कि लोग मुझे खलनायक के किरदार में पसंद करेंगे या नहीं, लेकिन अब यह संकोच भी खल हो

आने धारावाहिक 'विरासत' में भी

